भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 318 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 13 नवम्बर 2021 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

क्रियायोग
हं ★ क्षं
परमात्म अनुभूति का सर्वोच्च मार्ग

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

बॉम्बे हाई कोर्ट में पूरी हुई वानखेड़े बनाम मलिक केस की सुनवाई, फैसला रखा सुरक्षित

नई दिल्ली। मुंबई एनसीबी के जोनल निदेशक समीर वानखेड़े के पिता ध्यानदेव वानखेड़े का महाराष्ट्र के मंत्री नवाब मलिक के खिलाफ दायर मानहानि के मुकदमे पर बहस पूरी हो गई है। बॉम्बे हाईकोर्ट ने सुनवाई पूरी होने के बाद अपना आदेश सुरक्षित रख लिया है। एनसीबी डायरेक्टर समीर वानखेड़े के खिलाफ अनर्गल आरोप लगाने वाले महाराष्ट्र के मंत्री और राकांपा (राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी) नवाब मलिक के खिलाफ ध्यानदेव वानखेड़े ने 1.25 करोड़ रुपए की मानहानि का दावा किया था। मामले में बॉम्बे हाई कोर्ट आज सुनवाई पूरी कर ली है। साथ ही अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। समीर वानखेड़े के पिता ने नवाब मलिक पर उनके परिवार को अपमानित करने का आरोप लगाया था। साथ ही मुंबई क्रूज ड्रग्स केस में समीर वानखेड़े पर रिश्वत लेने समेत तमाम आरोप लगाए थे। सुनवाई के दौरान ध्यानदेव वानखेड़े की ओर से पेश हुए वकील ने कहा कि समीर को कोर्ट की बजाय ऐसे व्यक्ति को क्यों सफाई देनी पड़ रही है, जो सिर्फ एक विधायक है।

गायत्री प्रजापति को गैंगरेप केस में उम्रकैद, दो लाख का जुमार्ना भी लगा

लखनऊ, एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की पूर्ववर्ती अखिलेश सरकार में खनन मंत्री रहे गायत्री प्रजापति और उनके दो साथियों को गैंगरेप और पाक्सो एक्ट मामले में एमपी/एमएलए अदालत ने उम्रकैद की सजा सुनाई है। तीनों पर दो-दो लाख रुपए का जुमार्ना भी लगाया गया है। नौकरी दिलाने के नाम पर चित्रकूट की एक महिला से गैंगरेप और उसकी नाबालिग बेटी से रेप की कोशिश के मामले में 10 नवम्बर को कोर्ट ने प्रजापति और उनके दो साथियों को दोषी करार देते हुए सजा के लिए आज की तारीख मुकर्रर कर दी थी। अभियोजन पक्ष ने तीनों आरोपियों के लिए सख्त सजा की मांग की थी। भारतीय दंड संहिता के प्रावधानों के अनुसार सामूहिक दुराचार में अधिकतम 20 वर्ष और पाक्सो एक्ट के अंतर्गत दोषी पाए जाने पर उम्र कैद तक की सजा का प्रावधान है। इस मामले में अदालत

अखिलेश सरकार में मंत्री रहे

ने गायत्री प्रजापति, अशोक तिवारी और आशीष कुमार शुक्ला को महिला से सामूहिक दुष्कर्म करने के अलावा नाबालिग बेटी से दुराचार करने के प्रयास का दोषी पाया था।

कोर्ट ने इसी मामले में गिरफ्तार चार सह आरोपियों को सबूतों के अभाव में बरी कर दिया। पूर्व मंत्री गायत्री प्रजापति के साथ जिला जेल में बंद रहे चारों सह आरोपियों को गुरुवार की रात जेल से रिहा कर दिया गया था। अदालत ने बुधवार को इन्हें बरी कर दिया था। यह सभी गायत्री के साथ वर्ष 2017 से जिला जेल में बन्द थे। सामूहिक दुष्कर्म और पास्को एक्ट में शुक्रवार को अदालत ने पूर्व मंत्री गायत्री, अशोक तिवारी और आशीष को दोषी करार दिया था। जबकि अमरेंद्र सिंह उर्फ पिंटू, विकास वर्मा, चंद्रपाल एवं रूपेश को साक्ष्य के अभाव में दोषमुक्त कर दिया था।इस मामले की रिपोर्ट चित्रकूट की रहने वाली महिला ने 18 फरवरी 2017 को लखनऊ के गौतम पल्ली थाने पर दर्ज कराई गई थी। महिला ने आरोप लगाया कि उसे नौकरी दिलाने और घर पर काम करने के बहाने लखनऊ लाया गया था। यहां गायत्री और उसके सहयोगियों ने उसके साथ सामूहिक दुराचार किया। वर्ष 2014 से जुलाई 2016 तक उसका शारीरिक शोषण किया जाता रहा। वह सब कुछ सहती रही लेकिन जब इन लोगों ने उसकी 16 साल की बेटी से भी दुष्कर्म करने का प्रयास किया तो वह चुप नहीं बैठी। महिला का आरोप है कि आरोपियों ने उसे खनन का काम और नौकरी दिलाने के नाम पर लखनऊ बुलाया और अलग-अलग स्थानों पर ले जाकर उसके साथ रेप किया। महिला का आरोप है कि घटना की विस्तृत शिकायत पुलिस महानिदेशक से भी की गई थी पर कोई कार्रवाई न होने पर सुप्रीम कोर्ट के सामने विशेष अनुमति याचिका दाखिल की गई। जिस पर रिपोर्ट दर्ज करने का आदेश हुआ। चित्रकूट की इस पीड़िता से समझौते के लिये गायत्री और उनके परिचितों ने पूरा जोर लगा दिया था लेकिन पीड़िता अपनी जिद पर अड़ी रही। गायत्री की गिरफ्तारी के बाद ही उस पर बयान बदलने के लिये दबाव बनाया गया लेकिन वह किसी से नहीं मानी। इतना ही नहीं उसने यह आरोप भी लगाया था कि गायत्री को सपा सरकार में पहले बचाने का पूरा प्रयास किया गया था। जब मामले ने काफी तूल पकड़ा और वह सुप्रीम कोर्ट तक गयी तब सरकार को भी पीछे हटना पड़ा। गायत्री प्रजापति के खिलाफ हर तरफ से शिकंजा कसता चला गया था।

19 नवंबर को होगा साल का आखिरी चंद्रग्रहण

नईदिल्ली, एजेंसी)। 19 नवंबर को साल का आखिरी चंद्रग्रहण दिखाई देगा। चंद्र ग्रहण कार्तिक शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को लगेगा। इस चंद्र ग्रहण का धार्मिक दृष्टि से खास महत्व है। ये न सिर्फ राशियों पर अपना प्रभाव दिखा रहा है बल्कि ऐसा संयोग 600 साल बाद बन रहा है। चंद्रग्रहण न सिर्फ भारत बल्कि पश्चिमी अफ्रीका, पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, एशिया, ऑस्ट्रेलिया, अटलांटिक महासागर और प्रशांत महासागर के कुछ हिस्सों में दिखाई देगा। आगामी 19 नवंबर को साल का आखिरी चंद्रग्रहण लग रहा है। बताया जा रहा है कि पिछले 600 साल बाद इतना लंबा चंद्रग्रहण लग रहा है। नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) के मुताबिक, आंशिक चंद्र ग्रहण 18 और 19 नवंबर को रात में हो रहा है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने कहा कि ग्रहण मौसम के अनुसार ही किसी स्थान से दिखाई देगा। यह समय क्षेत्र के आधार पर शाम को

600 साल बाद बनेगा खास संयोग

पहले या बाद में दिखाई देगा। प्रेस सूचना ब्यूरो की विज्ञप्ति के अनुसार, आंशिक ग्रहण भारतीय मानक समय के लगभग दोपहर 12:48 बजे शुरू होगा और शाम 4:17 बजे समाप्त होगा। पीआईबी के मुताबिक, ₹चंद्रोदय के ठीक बाद ग्रहण के आंशिक चरण की समाप्ति अरुणाचल प्रदेश और असम के उत्तर पूर्वी हिस्सों से होगी। बता दें कि चंद्र ग्रहण पूर्णिमा के दिन होता है, जब पृथ्वी सूर्य और चंद्रमा के बीच आ जाती है और जब तीनों संरेखित हो जाते हैं। पूर्ण चंद्र ग्रहण तब होता है जब पूरा चंद्रमा पृथ्वी की छाया में आ जाता है और आंशिक चंद्र ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा का केवल एक हिस्सा पृथ्वी की छाया के नीचे आता है।

बड़ी सफलताः एक करोड़ का इनामी माओवादी किशन दा और पत्नी शीला समेत 4 गिरफ्तार

रांची भाकपा माओवादियों के शीर्ष पोलित ब्यूरो के सदस्य प्रशांत बोस उर्फ किशन दा, उनकी पत्नी शीला मरांडी समेत चार माओवादियों को झारखंड पुलिस ने शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया। प्रशांत बोस माओवादियों के ईस्टर्न रीजनल ब्यूरो का सचिव भी हैं। वहीं प्रशांत बोस की पत्नी शीला मरांडी भी माओवादियों की शीर्ष सेंट्रल कमेटी की सदस्य है। वह माओवादियों के फ्रंटल आगेर्नाइजेशन नारी मुक्ति संघ की प्रमुख भी है। झारखंड पुलिस के आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक, केंद्रीय खुफिया एजेंसी आईबी ने प्रशांत बोस समेत अन्य के गिरिडीह के पारसनाथ से सरायकेला लौटने की जानकारी दी थी। इसके बाद सरायकेला पुलिस ने एक स्कार्पियो गाड़ी से प्रशांत बोस, शीला मरांडी,

प्रशांत बोस के प्राटेक्शन दस्ता के एक सदस्य व कुरियर का काम करने वाले एक युवक को मुंडरी टोलनाका के पास से गिरफ्तार किया। गिरफ्तारी के बाद चारों माओवादियों को गुप्त स्थान पर रखकर पूछताछ की जा रही है। झारखंड पुलिस ने प्रशांत बोस पर एक करोड़ का ईनाम रखा है। प्रशांत बोस पर झारखंड में 70 से अधिक माओवादी कांड दर्ज है।

पूछताछ में पुलिस को जानकारी मिली है कि प्रशांत बोस की तबीयत बीते कई सालों से खराब थी। लेकिन बावजूद इसके वह लगातार संगठन में सक्रिय था। जानकारी के मुताबिक, कोल्हान से पारसनाथ जाकर वह रह रहा था। पारसनाथ से ही वह प्रोटेक्शन दस्ता के सदस्यों के द्वारा एनएच 2 तक लाया जाता था। इसके बाद कुरियर के द्वारा ही प्रशांत बोस को कोलकाता ले जाया जाता था। हाल ही में प्रशांत बोस कोलकाता से लौटा था। प्रशांत बोस के पास ईआरबी के सचिव के तौर पर बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और छत्तीसगढ़ के झारखंड के सीमावर्ती इलाके, असम समेत पूर्वोतर के राज्यों का प्रभार था। साल 2004 में एमसीसीआई व पीडब्लूजी के विलय के पूर्व वह एमसीसीआई का प्रमुख था। विलय के बाद भाकपा माओवादी संगठन में कोटेश्वर राव को प्रमुख बनाया गया था, जबकि बतौर ईआरबी सचिव तब से प्रशांत बोस संगठन में सेकेंड इन कमान था। झारखंड में पारसनाथ, सारंडा, ओड़िसा और बंगाल के सीमावर्ती इलाके में प्रशांत बोस ने ही संगठन को खड़ा किया था।

महिला इंस्पेक्टर को स्टालिन ने किया सम्मानित

नई दिल्ली। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने कल चेन्नई में बारिश के दौरान बचाव कार्य के लिए इंस्पेक्टर राजेश्वरी को सम्मानित किया है। चेन्नई के एक नजदीकी अस्पताल में ले जाने के लिए वह उस एक बेहोश आदमी को अपने कंधों पर एक ऑटोरिक्शा तक लेकर गई थी। इंस्पेक्टर राजेश्वरी ने कहा, प्राथमिक उपचार देने के बाद मैं उस बेहोश आदमी ऑटो तक लेकर गई। इसके बाग हमने उसे अस्पताल भेज दिया। मैं भी अस्पताल गई। उसकी मां भी वहां थी। मैंने उन्हें चिंता न करने का आश्वासन दिया।डॉक्टर ने कहा कि इलाज जारी है और चिंता की कोई बात नहीं। चेन्नई के पुलिस आयुक्त शंकर जीवालो ने कहा, इंस्पेक्टर राजेश्वरी ने बेहतरीन काम किया है। उसने खुद जीवन के लिए संघर्ष कर रहे एक बेहोश आदमी को उठाया और उसे अस्पताल भेज दिया। इलाज चल रहा है, वह ठीक है।

सिख या मुस्लिम को पीटना हिंदू धर्म है राहुल गांधी के बयान पर भाजपा का पलटवार

नई दिल्ली। शुक्रवार को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने हिंदू धर्म और हिंदुत्व के बीच अंतर किया। उन्होंने कहा, हम पूछते हैं कि हिंदुत्व और हिंदू धर्म में क्या अंतर है यह एक सीधा सा तर्क है - अगर आप हिंदू हैं तो आपको हिंदुत्व की आवश्यकता क्यों है आपको इस नए नाम की आवश्यकता क्यों है राहुल गांधी ने आगे कहा कि ₹क्या सिख या मुसलमान को पीटना हिंदू धर्म है हिंदुत्व तो निश्चित रूप से यही है। यह किस (हिंदू) किताब में लिखा है मैने इसे नहीं देखा है। मैंने उपनिषद पढ़े हैं। लेकिन मैंने इसे वहां भी नहीं पढ़ा है।₹ मामले में भाजपा ने पलटवार किया है। संबित पात्रा ने कहा कि ये दुख की बात है कि कांग्रेस हिंदुत्व पर ऐसे बयान दे रही है। वर्धा के सेवाग्राम आश्रम में आयोजित चार दिवसीय ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी कार्यक्रम में राहुल गांधी ऑनलाइन जुड़े थे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी की विचारधारा एक ₹सुंदर गहने₹ की तरह है, जिसके अंदर एक अनंत शक्ति है। लेकिन यह भाजपा उस हावी हो गई है। उन्होंने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से पूरे भारत के कांग्रेस प्रतिनिधियों से कहा, ₹अगर क्रिस्टलीकृत किया जाता है, तो कांग्रेस की विचारधारा जीवित और जीवंत है, जो भाजपा और आरएसएस को घेर लेगी। कार्यक्रम में राहुल गांधी ने आगे हिंदुत्व और हिंदू धर्म पर अंतर स्पष्ट किया।

उन्होंने कहा, ₹क्या सिख या मुसलमान को पीटना हिंदू धर्म है हिंदुत्व तो निश्चित रूप से यही है। यह किस (हिंदू) किताब में लिखा है मैने इसे नहीं देखा है। मैंने उपनिषद पढ़े हैं। लेकिन मैंने इसे वहां भी नहीं पढ़ा है।

राहुल गांधी के बयान पर भाजपा ने पलटवार किया है। संबित पात्रा ने कहा, ₹सलमान खुर्शीद ने बोको हराम और आईएसआईएस की तुलना हिंदू धर्म से की। शशि थरूर कहते हैं हिंदू तालिबान। दिग्विजय सिंह और मणिशंकर अय्यर जैसे नेता हिंदू धर्म के खिलाफ भगवा आतंकवाद जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। यह कोई संयोग नहीं है।

15 नवंबर तक ईडी की कस्टडी में भेजे गए अनिल देशमुख

मुंबई। मनी लॉन्ड्रिंग केस में महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख को आज भी राहत नहीं मिली है। मुंबई की पीएमएलए अदालत ने शुक्रवार को अनिल देशमुख को 15 नवंबर तक प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी की हिरासत में भेज दिया है। प्रवर्तन निदेशालय ने देशमुख को पिछले सप्ताह गिरफतार किया था। विशेष अवकाशकालीन अदालत ने छह नवंबर को 71 वर्षीय राष्ट्रवादी कांग्रेस नेता देशमुख को न्यायिक हिरासत में भेजा था और ईडी की हिरासत की मांग खारिज कर दी थी। इसके एक दिन बाद ही बंबई उच्च न्यायालय ने निचली अदालत के आदेश को रद्द करते हुए देशमुख को 12 नवंबर तक ईडी की हिरासत में भेज दिया था। पूर्व मंत्री को शुक्रवार को पीएमएलए की अदालत के न्यायाधीश एचएस सठभाई के समक्ष पेश किया गया, जिन्होंने उनकी हिरासत की अवधि 15 नवंबर तक बढ़ा दी।

वायु प्रदूषण पर सख्ती

परियोजना में धूल रोधी उपाय न अपनाना बीएमसीसी को पड़ा महंगा, दिल्ली सरकार ने लगाया 5 लाख का जुमार्ना

नईदिल्ली। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने शुक्रवार को बताया कि पूर्वी दिल्ली के कड़कड़डूमा में एक परियोजना में धूल नियंत्रण नियमों का उल्लंघन करने के मामले में राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम लिमिटेड (एनबीसीसी) पर 5 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया गया है। गोपाल राय ने शुक्रवार से धूल रोधी अभियान के दूसरे चरण की शुरूआत की जो 12 दिसंबर तक चलेगा। उन्होंने कहा कि हमने कड़कड़डूमा में एनबीसीसी की एक परियोजना का निरीक्षण किया और पाया कि कुछ स्थानों पर धूल नियंत्रण उपाय नहीं किए गए हैं। अतः कंपनी पर 5 लाख रुपए का जुमार्ना लगाया गया है। पर्यावरण मंत्री ने कहा कि सभी सरकारी विभागों को धूल रोधी प्रकोष्ठ बनाने और धूल रोधी संयुक्त कार्ययोजना को अमल में लाने के लिए दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति के साथ समन्वय में काम करने को कहा गया है। दिल्ली-एनसीआर में शुक्रवार को स्मॉग और घनी हो गई तथा कई जगहों पर विजिबिलिटी 200 मीटर रही। राजधानी में नवंबर की शुरूआत से ही प्रदूषण के स्तर में वृद्धि देखने को मिल रही है। दिल्ली में दीपावली के बाद पिछले सात दिन से वायु गुणवत्ता का स्तर गंभीर श्रेणी में है। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (ऊढउउ) के एक विश्लेषण के अनुसार, हर साल एक नवंबर से 15 नवंबर के बीच दिल्ली में लोगों को बेहद दूषित हवा में सांस लेनी पड़ती है। शहर में सुबह नौ बजे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 454 दर्ज किया गया। गुरुवार को एक्यूआई का 24 घंटे का औसत 411 था। सुबह नौ बजे फरीदाबाद में एक्यूआई 490 रहा। इसके अलावा ग्रेटर नोएडा में 476, गुरुग्राम में 418 और नोएडा में यह 434 दर्ज किया गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण समिति के अनुसार, सुबह नौ बजे दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण कारक कण पीएम 2.5 की मात्रा 346 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर थी जो कि 60 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर की सुरक्षित सीमा से लगभग छह गुना अधिक थी। पीएम 10 का स्तर 544 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर दर्ज की गई।

पंजाब विधानसभा चुनाव आप ने जारी की 10 उम्मीदवारों की पहली लिस्ट

नईदिल्ली। पंजाब विधानसभा चुनाव 2022 को लेकर आम आदमी पार्टी ने अपने उम्मीदवारों की पहली लिस्ट जारी कर दी है। पहली लिस्ट में 10 उम्मीदवारों के नामों की घोषणा की गई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक पार्टी की पहली लिस्ट में कोई नया चेहरा नहीं है। पंजाब विधानसभा में पार्टी की कमान संभाल रहे हरपाल सिंह को डिरबा से टिकट दिया गया है। आम आदमी पार्टी ने गढ़शंकर से जय किशन रौडी, जगराउं से सर्वजीत कौर मनुके, निहाल सिंह वाला से मंजीत बिलासपुर, कोटकपुरा से कुलतार सिंह संधवा, तलवंडी सबो से बलजिंदर कौर, बुढलाडा से प्रिंसिपल बुढराम, डिरबा से हरपाल सिंह चीमा, सुनम से अमन अरोड़ा, बरनाला से गुरमीत सिंह और मेहल कलां से कुलवंत पंडोरी को विधानसभा चुनाव में उतारने का ऐलान किया है। बता दें कि 2017 में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने 117 में से 77 सीटों पर जीतकर सरकार बनाई थी। आम आदमी पार्टी ने 20 सीटों पर जीत दर्ज कर विपक्षी दल बनी थी।

हाई कोर्ट ने दिल्ली पुलिस से पूछा

तबलीगी जमात में भाग लेने वालों को शरण देना अपराध कैसे

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने ने शुक्रवार को दिल्ली पुलिस से सवाल किया कि तबलीगी जमात में भाग लेने वाले लोगों को पिछले साल कोरोना वायरस के कारण लागू लॉकडाउन के दौरान आश्रय देने वाले भारतीय नागरिकों ने क्या अपराध किया है अदालत ने कहा कि सरकार की अधिसूचना में किसी विशेष स्थान में रह रहे लोगों पर कोई प्रतिबंध लागू नहीं किया गया था। तबलीगी जमात में पिछले साल हिस्सा लेने वाले विदेशी नागरिकों को आश्रय देने वालों के खिलाफ दर्ज प्राथमिकियों को रद्द करने का अनुरोध करने वाली याचिकाओं की सुनवाई कर रहीं न्यायमूर्ति मुक्ता गुप्ता ने टिप्पणी की कि तबलीगी जमात में भाग लेने वालों ने लॉकडाउन लागू होने से पहले शरण मांगी थी और आवागमन को प्रतिबंधित करने के आदेश का उल्लंघन करने को लेकर उन पर कोई आरोप नहीं है। न्यायमूर्ति गुप्ता ने कहा, अचानक लॉकडाउन लागू हो जाने पर व्यक्ति कहां जाएगा यहां क्या अपराध हुआ है... क्या मध्य प्रदेश के निवासियों के दिल्ली की किसी मस्जिद, मंदिर या गुरुद्वारे में ठहरने पर कोई प्रतिबंध है वे अपनी इच्छानुसार कहीं भी ठहर सकते हैं। क्या इस प्रकार का कोई नोटिस था कि जो भी (उनके साथ) रह रहा था, उसे हर कोई बाहर निकाल देगा अदालत ने दिल्ली पुलिस

को याचिकाओं पर अपना जवाब दायर करने के लिए समय दिया। अभियोजन पक्ष के वकील ने अदालत द्वारा पारित एक पूर्व निर्देश के संदर्भ में विस्तृत स्थिति रिपोर्ट दाखिल करने के लिए समय मांगा और कहा कि उक्त समय पर हर प्रकार की धार्मिक सभाओं पर रोक थी। याचिकाकताओं के वकील ने प्रतिवेदन दिया कि तबलीगी जमात में भाग लेने वालों ने लॉकडाउन लागू होने से पहले ही इन परिसरों में रहना शुरू कर दिया था और उनमें से कोई कोरोना वायरस से संक्रमित नहीं पाया गया था, इसलिए उनके मुवक्किलों के खिलाफ कोई मामला नहीं बनता है। प्राथमिकी रद्द करने की कुछ याचिकाएं ऐसे व्यक्तियों ने दायर की हैं, जिन्होंने उन विदेशियों को शरण दी थी, जो इस कार्यक्रम में शामिल हुए थे और लॉकडाउन के कारण यात्रा नहीं कर सकते थे। इसके अलावा याचिका दायर करने वालों में प्रबंध समिति के सदस्य या विभिन्न मस्जिदों की देखभाल करने वाले वे लोग शामिल हैं, जिन पर चांदनी महल पुलिस स्टेशन के अधिकार क्षेत्र के तहत मस्जिदों में विदेशी नागरिकों को आवास की सुविधा प्रदान करने का आरोप लगाया गया है।

कोरोना के बाद नोरोवायरस ने बढ़ा दी है टेंशन

नई दिल्ली। कोरोना वायरस की महामारी अभी खत्म नहीं हुई कि केरल में नोरो वायरस के केसों ने चिंता बढ़ा दी है। केरल की स्वास्थ्य मंत्री वीणा जॉर्ज ने शुक्रवार को लोगों से पेट से जुड़ी इस बीमारी से सर्तक रहने की अपील की और गाइडलाइंस जारी की। केरल के वायनाड में नोरो वायरस के 13 केस मिले हैं। दो सप्ताह पहले वायनाड जिले के विथिरी के पास पुकोडे में एक पशु चिकित्सा कॉलेज के 13 छात्रों में दूषित पानी और भोजन के माध्यम से फैलने वाली एक पशु जनित बीमारी नोरोवायरस की सूचना मिली थी। वीणा जॉर्ज ने कहा, अभी चिंता की कोई बात नहीं है, लेकिन हर किसी को सचेत रहने की आवश्यकता है।

खबर संक्षेप

जसरा में जल निगम का पाइप टूटा, आपूर्ति बाधित

जसरा। जसरा रेलवे क्रॉसिंग सराफा मोड़ पर बिजली का खंभा लगाने के दौरान जमीन के अंदर गया जल निगम का पाइप टूट गया। जिससे दर्जनों लोगों के घरों में पानी नहीं पहुंच पा रहा है तथा प्रतिदिन हजारों लीटर पीने का पानी सड़क पर बह जा रहा है। लगभग एक सप्ताह पूर्व जसरा रेलवे क्रॉसिंग के पास मोड़ पर ट्रक की टक्कर से बिजली का खंभा टूटकर गिर गया था। जिसके बाद बिजली विभाग के कर्मचारियों द्वारा खंभा लगाने के दौरान जमीन के अंदर पानी की आपूर्ति के लिए बिछाई गई जल निगम की पाइप टूट गई। जिससे लगातार पानी का रिसाव हो रहा है। वहीं आसपास के एक दर्जन से अधिक घरों में पीने के पानी की आपूर्ति भी बाधित है। लोगों ने इसकी शिकायत कई बार जल निगम व बिजली विभाग के अधिकारियों से की। लेकिन समस्या का समाधान नहीं हो सका। वहीं जेई जल निगम शैलेंद्र कुमार सिंह का कहना है कि बिजली विभाग के द्वारा बिजली का खंभा लगाने के दौरान पाइप टूटा है। इसलिए बिजली विभाग के लोग बिजली का खंभा दूसरी जगह लगवाएं। उसके बाद ही जल निगम के पाइप की मरम्मत हो पाएगी । उन्होंने कहा कि बिजली विभाग के जेई को इस संबंध में मौखिक जानकारी दे दी गई है। वहीं वरुण कुमार सोनी, अयोध्या सोनी ,उमेश चंद जायसवाल ,मुन्ना केसरवानी, मनोज कुमार केसरवानी, राजेश गुप्ता आदि के घरों में पानी की आपूर्ति बाधित होने से लोग पानी का संकट झेल रहे हैं।

संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन एवं निर्माणाधीन कार्यों को लक्ष्य के सापेक्ष शत-प्रतिशत पूर्ण किया जाय : मण्डलायुक्त

अखंड भारत संदेश

मण्डलीय समीक्षा बैठक सम्पन्न : विशेष अभियान चलाकर आरसी की वसूली सुनिश्चित किये जाने के दिए निर्देश

शुक्रवार को आयुक्त कार्यालय के गांधी सभागार में कर करेत्तर एवं राजस्व वसूली के साथ-साथ विकास प्राथमिकता के कार्यों की प्रगति के सम्बंध में मण्डलीय समीक्षा करते मण्डलायुक्त

प्रयागराज। मण्डलायुक्त संजय गोयल की अध्यक्षता में शुक्रवार को आयुक्त कार्यालय के गांधी सभागार में कर करेत्तर एवं राजस्व वसूली के साथ-साथ विकास प्राथमिकता के कार्यों की प्रगति के सम्बंध में मण्डलीय समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। बैठक में मण्डलायुक्त ने कर-करेत्तर से सम्बंधित विभागों के राजस्व वसूली की प्रगति की समीक्षा करते हुए वाणिज्य कर विभाग, आबकारी, स्टाम्प एवं रजिस्टेज्शन, परिवहन, विद्युत विभाग, खनन विभाग, वन विभाग, मण्डी समिति सहित अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को प्रवर्तन की कार्यवाही में तेजी लाते हुए लक्ष्य के सापेक्ष शत-प्रतिशत वसूली सुनिश्चित किये जाने का निर्देश दिया है। आबकारी विभाग की राजस्व वसूली की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने फतेहपुर एवं प्रतापगढ़ की वसूली कम पाये जाने पर वसूली में तेजी लाने के निर्देश दिये। परिवहन विभाग के राजस्व वसूली की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने 15 दिन का विशेष अभियान चलाकर आरसी की वसूली सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। बाट माप विभाग को सक्रियता के साथ घटतौली पर रोक लगाने व छापे के दौरान घटतौली करते पकड़े जाने पर जुमार्ना वसूलने की लगातार कार्यवाही करते रहने के लिए कहा है साथ ही विशेष अभियान चलाकर पेट्रोल पम्पों में घटतौली की शिकायत की जांच करने के निर्देश दिये है। सिंचाई विभाग की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त नहरों में सिल्ट सफाई एवं नहरों में टेल तक पानी पहुंचाये जाने के सम्बंध में जानकारी ली। उन्होंने सम्बंधित अधिकारियों को समय से सिल्ट की सफाई एवं टेल तक पानी पहुंचाये जाने के निर्देश दिये है। लोक निर्माण विभाग के कार्यों की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने मण्डल के सभी जनपदों में अभियान चलाकर गड्ढ़ों को भरने का निर्देश दिया है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने फतेहपुर, कौशाम्बी, प्रतापगढ़ में अस्वीकृत किये गये दावों की संख्या अधिक होने पर अधिकारियों को चेताते हुए कहा कि किसानों का नुकसान किसी भी दशा में बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। उन्होंने अधिकारियों को मौके पर जाकर उनके दावों की पड़ताल कर पात्र लोगों को योजना से लाभान्वित कराने के लिए कहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने जनपद कौशाम्बी में प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी की प्रगति कम पाये जाने पर उसे और बढ़ाने के लिए कहा है। उन्होंने पेयजल योजनाओं के तहत कराये जा रहे कार्यों में जनपद कौशाम्बी में पेयजल योजना की प्रगति खराब पाये जाने पर कहा कि अभी तक जिन योजनाओं को आरम्भ नहीं किया गया है, उन्हें जल्द से जल्द शुरू करायें। वृद्धावस्था पेंशन, किसान पेंशन, विधवा पेंशन एवं दिव्यांगजन पेंशन योजनाओं की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने वृद्धावस्था पेंशन, किसान पेंशन एवं विधवा पेंशन के सत्यापन के कार्य को जल्द से जल्द निस्तारित कराकर पात्रों को पेंशन योजना से लाभान्वित कराये जाने के लिए कहा है। कन्या सुमंगला योजना की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने प्राप्त आवेदन पत्रों के सत्यापन के कार्य को जल्द से जल्द पूरा कराकर पात्रों को योजना से लाभान्वित कराये जाने के लिए कहा है। पोषण अभियान की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने मण्डलों में चिन्हित बच्चों की संख्या कम होने पर सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि ज्यादा से ज्यादा बच्चे जो कुपोषित है, उन सभी को इसका लाभ दिलायें, इसके लिए मण्डल के सभी मुख्य विकास अधिकारियों को इसकी मानीटरिंग करने को मण्डलायुक्त ने कहा है। स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होंने संविदा पर रखे जाने वाले चिकित्सकों की शत-प्रतिशत नियुक्ति न पाये जाने पर रिक्त संविदा चिकित्सकों की तैनाती सुनिश्चित कराये जाने का निर्देश दिया है। आयुष्मान भारत योजना के तहत बनाये जा रहे गोल्डेन कार्ड की प्रगति में तेजी लाने के निर्देश देते हुए मण्डलायुक्त ने कहा कि मण्डल के सभी जनपदों में पात्र लोगों को इसका लाभ उपलब्ध कराया जाये। उन्होंने मण्डल के सभी मुख्य विकास अधिकारियों को इसकी मानीटरिंग करते रहने के निर्देश दिये है। मण्डलायुक्त ने सभी जनपदों में वैक्सीनेशन सेंटरों पर सभी चिकित्सकों व स्टाफ को समय से उपस्थित रहने के लिए कहा है। उन्होंने अधिकारियों को लगातार वैक्सीनेशन सेंटर का निरीक्षण करते रहने का निर्देश दिया है। पंचायतीराज विभाग की समीक्षा करते हुए मण्डलायुक्त ने हैण्डपम्पों के रिबोर व मरम्मत का सोशल ऑडिट कराने के साथ-साथ जेई से भी इसक वैरिफिकेशन कराने के लिए कहा है तथा इसके अभिलेख बनाकर सुरक्षित रखने के लिए कहा है। मण्डलायुक्त द्वारा ग्राम पंचायत भवनों के निर्माण कार्य की समीक्षा में जनपद प्रतापगढ़ की प्रगति सही न पाये जाने पर तेजी लाने के निर्देश दिये गये है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत प्रतापगढ़ में कराये जा रहे कार्य की प्रगति धीमी होने पर जनवरी माह तक इस कार्य को पूर्ण कराने के लिए कहा है। प्रधानमंत्री जन विकास कार्यक्रम के तहत कराये जा रहे निर्माण कार्य में जनपद फतेहपुर में अंदौली वार्ड में हाईस्कूल भवन निर्माण के बन जाने के बाद भी हैण्डओवर की कार्रवाई में देरी किये जाने पर नाराजगी जताते हुए मण्डलायुक्त ने जल्द से जल्द हैण्डओवर की कार्रवाई किये जाने के लिए कहा है। इसी कार्यक्रम के तहत प्रतापगढ़ में राजकीय पॉलिटेक्निक के निर्माण में बजट होने के बाद भी कार्य में देरी पर कार्यदायी संस्था को कड़ी फटकार लगाते हुए जल्द से जल्द कार्य पूरा कराने के निर्देश दिये है। साथ ही प्रतापगढ़ के आंगनबाड़ी केन्द्र टिकरी मानधाता के निर्माण कार्य को धनराशि आवंटित होने के उपरांत भी कार्य न शुरू न कराये जाने पर नाराजगी जताते हुए कार्य को तुरंत शुरू कराये जाने का निर्देश दिया है। इस अवसर पर जिलाधिकारी प्रयागराज संजय कुमार खत्री, जिलाधिकारी प्रतापगढ़ डॉ0 नितिन बंसल, जिलाधिकारी कौशाम्बी सुजीत कुमार, जिलाधिकारी फतेहपुर श्रीमती अपूर्वा दुबे सहित अन्य जनपदों के मुख्य विकास अधिकारीगणों के साथ ही संयुक्त विकास आयुक्त एवं अन्य विभागों के मण्डलीय अधिकारी उपस्थित रहे।

असिस्टेंट प्रोफेसर सहित निलंबित इंस्पेक्टर-दरोगा पर एफआईआर दर्ज

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कर्नलगंज में दर्ज दुष्कर्म केस के गवाह को फर्जी तरीके से जेल भेजने के मामले में बृहस्पतिवार को फिर बड़ी कार्रवाई हुई। मामले में निलंबित किए जा चुके पूर्व हंडिया इंस्पेक्टर बृजेश सिंह और दरोगा बलवंत यादव समेत तीन के खिलाफ जार्जटाउन थाने में नामजद एफआईआर दर्ज की गई। मुकदमे में तीसरा आरोपी सीएमपी डिग्री कॉलेज का असिस्टेंट प्रोफेसर मदन यादव है। इसके अलावा साजिश में आरोपियों के सहयोगी रहे अन्य लोगों को अज्ञात में आरोपी बनाया गया है। कार्रवाई से पुलिस विभाग में हड़कंप मचा है। जार्जटाउन थाने में एफआईआर पीड़िता के उस शिकायती पत्र के आधार पर दर्ज हुई है, जो उसने एडीजी जोन प्रयागराज समेत अन्य पुलिस अफसरों को दिया था। साथ ही इसकी प्रति भारत के मुख्य न्यायाधीश, इलाहाबाद हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश, एससी-एसटी आयोग व राज्य महिला आयोग समेत अन्य को भेजी थी। तहरीर में पीड़िता की ओर से गंभीर आरोप लगाए गए हैं। सुलह के लिए दबाव बनाता रहा मदन यादव उसने बताया कि उससे दुष्कर्म का आरोपी मदन यादव अपने पद व प्रभाव के चलते उसके साथ ही उसके गवाह, परिवारीजनों फर्जी मुकदमा दर्ज कराकर अपने मुकदमे में सुलह के लिए दबाव बना रहा है। इसी के तहत उसने पहले फूलपुर में उसके भाई व गवाह पर दुष्कर्म का फर्जी केस दर्ज कराया। इस मामले में एफआर लगने के बाद उसने हंडिया इंस्पेक्टर रहे बृजेश सिंह के साथ मिलकर उसके गवाह को हंडिया में दर्ज दुष्कर्म के मामले में फर्जी तरीके से जेल भेज दिया। यही नहीं आरोप यह भी है कि इसके अलावा भी उसके खिलाफ मदन यादव की तहरीर पर जार्जटाउन थाने में दो फर्जी मुकदमे लिखवा दिए। तहरीर में मांग की गई कि मदन यादव व इस साजिश में शामिल इंस्पेक्टर बृजेश सिंह, एसआई बलवंत यादव व अन्य लोगों पर विधिक कार्रवाई कर उसकी व उसके गवाह व परिवारीजनों की जान-माल की सुरक्षा की जाए।

कुल 14 धाराओं में लिखा गया केस

निलंबित इंस्पेक्टर-दरोगा व असिस्टेंट प्रोफेसर पर कुल 14 धाराओं में केस दर्ज किया गया है। इनमें लोकसेवक का किसी व्यक्ति को क्षति पहुंचाने के आशय से कानून का उल्लंघन करना, लोकसेवक का क्षति कारित करने के आशय से अशुद्ध दस्तावेज रचना, लोकसेवक द्वारा किसी व्यक्ति को दंड से या किसी संपत्ति के समपहरण से बचाने के आशय से विधि के निर्देश की अवज्ञा करना, किसी व्यक्ति को दंड या किसी सपंत्ति की समपहरण से बचाने के आशय से लोकसेवक द्वारा अशुद्ध अभिलेख या लेख की रचना करना, किसी व्यक्ति को गलत तरीके से प्रतिबंधित करना समेत अन्य धाराएं शामिल हैं। जिनमें आपराधिक षडयंत्र और एससी-एसटी एक्ट भी शामिल है।

एक ही गांव के स्पेक्टर व असिस्टेंट प्रोफेसर

पीड़िता की ओर से पुलिस को दी गई शिकायत में बताया गया है कि उसके मुकदमे का आरोपी मदन यादव व निलंबित इंस्पेक्टर बृजेश सिंह दोनों गाजीपुर के करीमुद्दीनपुर गांव के रहने वाले हैं। इसी के तहत दोनों ने मिलकर यह साजिश रची, जिसमें अपने अन्य सहयोगियों को भी शामिल कर लिया। इसके साथ ही दबाव बनाने के लिए उसके गवाह को फर्जी तरीके से जेल भेजा और उस पर फर्जी केस भी दर्ज कराए।

अभी और पुलिसकर्मियों के आ सकते हैं नाम

सूत्रों का कहना है कि भले ही मुकदमे में अभी दो ही पुलिसकर्मियों को नामजद किया गया है। लेकिन विवेचना के दौरान अभी कई अन्य पुलिसकर्मियों के नाम भी सामने आएंगे। गौरतलब है कि इस मामले में कुल आठ पुलिसकर्मी निलंबित किए जा चुके हैं। इनमें पूर्व सर्विलांस प्रभारी संजय सिंह यादव, इंस्पेक्टर शिशुपाल शर्मा, एसआई महेश चंद्र निषाद, हेड कांस्टेबल पन्नालाल यादव, अजय यादव व कांस्टेबल केके यादव भी शामिल हैं। विवेचना निष्पक्ष ढंग से हुई तो साजिशकताओं के रूप में इन पुलिसकर्मियों का नाम आना लगभग तय है।

मनरेगा मेठों को अस्मिता एप पर दिया गया प्रशिक्षण

अखंड भारत संदेस

करछना ब्लाक में मनरेगा मेठो को जानकारी देते वीडीओ राम विलास राय।

करछना। विकास खंड सभागार में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी एक्ट के अन्तर्गत विकासखंड के समस्त ग्राम पंचायतों में तैनात महिला मेठ का प्रशिक्षण शुक्रवार को आयोजित किया गया , उक्त प्रशिक्षण आयुक्त मनरेगा योगेश कुमार की अध्यक्षता में पूरे प्रदेश में वेबिनार के माध्यम से किया गया , जिसके तहत विकास खंड करछना में भी ब्लॉक सभागार में खंड विकास अधिकारी राम विलास राय की अध्यक्षता में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित की गई जिसमे महिला मेठो को सक्रिय करने की बात कही गई , तथा एडीओ आईएसबी रामेश्वर सिंह, एडीओ पंचायत विवेक मिश्रा द्वारा महिला मेठ को संक्षिप्त रूप से समझाया गया कि कार्य कैसे करना है तथा मनरेगा कम्प्यूटर ऑपरेटर मनीष शुक्ला द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवस्था की गई , वहीं ब्लॉक मिशन प्रबन्धक आदित्य तिवारी ने प्रशिक्षण उपरान्त समीक्षा बैठक लेकर मेठ के कार्य के बारे में विस्तार से चर्चा की तथा विभिन्न ग्राम पंचायत के महिला मेठ द्वारा किए गए कार्यों की समीक्षा की तथा सभी तैनात मेठों को सक्रिय भागीदारी करने पर जोर दिया ताकि ग्राम पंचायत स्तर पर कोई भी नरेगा मजदूर कार्य प्राप्त करने से वंचित ना रहे। उक्त अवसर पर ब्लॉक कर्मी संतोष साहू, जलज शर्मा , धर्मेंद्र यादव ,रविन्द्र पटेल सहित बडी संख्या में महिला मेठ आदि उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

नेहरू ग्राम भारती विधिक जागरूकता कार्यक्रम के तहत विधि छात्र छात्राओं ने किया प्रयागराज लॉ म्यूजियम का भ्रमण

प्रयागराज। शुक्रवार को विधि संकाय, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज के विधि छात्र / छात्राओं को विधिक जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत लॉ म्यूजियम प्रयागराज का भ्रमण कराया गया । यहां पर रजिस्ट्रार इलाहाबाद उच्च न्यायालय रमेश चंद गोयल द्वारा विधि छात्र /छात्राओं को इलाहाबाद उच्च न्यायालय से जुड़े ऐतिहासिक दस्तावेज तथा चल चित्र के माध्यम से इलाहाबाद उच्च न्यायालय के संपूर्ण इतिहास को बताया। कार्यक्रम के अंत में विधि संकाय के अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष डॉ० स्वप्निल त्रिपाठी जी ने लॉ म्यूजियम के प्रभारी तथा समस्त कर्मचारी गण को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर कार्यक्रम में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के डिप्टी रजिस्ट्रार श्रीमती आरती, सहायक रजिस्ट्रार श्री संतोष श्रीवास्तव, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, प्रयागराज प्रज्ञा सिंह(द्वितीय),विधि संकाय सदस्य डॉ दिलीप कुमार डॉ वंश लोचन प्रसाद डॉ मोनिका सिंह डॉ श्वेता गुप्ता श्री अमित कुमार श्री महेंद्र कुमार तथा बी.ए.एलएल, एलएल.बी. एवं एलएल.एम के सैकड़ों छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

खानपुर प्राथमिक विद्यालय में कैंप लगाकर लगाया गया टीका

मेजा रोड। केंद्र सरकार की रणनीति और योगी सरकार की जागरूकता से कोरोना महामारी को हराने में बड़ी कामयाबी हासिल की है।देश मे सौ करोड़ वैक्सिनेशन भी सरकार की बड़ी उपलब्धियों में है।विकासखंड उरूवा के ग्राम सभा खानपुर के प्राथमिक विद्यालय में शुक्रवार को प्रधान प्रतिनिधि गोरे लाल गुप्ता के नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग के द्वारा दूसरे डोज के वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन किया गया। कैंप पहुंचे ग्रामीणों ने कोरोना से बचाव हेतु दूसरी डोज लगवाई। इस दौरान प्रधान प्रतिनिधि गोरेलाल ने कहा कि कोरोना से बचाव का टीका किसी संजीवनी से कम नही है। क्षेत्र में जो भी लोग अभी तक वैक्सीनेशन से जुड़ नही पाएं है उन्हें हम प्रेरित करेंगे। इस दौरान शिक्षक साकेत तिवारी, समाजवादी छात्र सभा के जिला सचिव अर्पित तिवारी सफाई कर्मी रामबाबू सहित स्वास्थ विभाग की टीम मौजूद रही।

नागरिक पीजी कालेज जंघई में टेबलेट, स्मार्टफोन फार्म का वितरण प्रारंभ

जंघई। नागरिक पीजी कालेज जंघई में टेबलेट, स्मार्टफोन का फार्म कार्यालय से वितरण हो रहा है। शुक्रवार को प्राचार्य डाक्टर राजीव मालवीय के दिशा निर्देश में संयोजक बृजेश यादव, विभागाध्यक्ष हिंदी गंगेश दीक्षित, कार्यालय अधीक्षक करुणेश त्रिपाठी ने छात्र, छात्राओं को फार्म अपने हांथों प्रदान करके टेबलेट/स्मार्टफोन फार्म वितरण का कार्य प्रारंभ किया।इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त शिक्षक प्राक्टोरियल समिति के सदस्य, समस्त शिक्षणेत्तर कर्मचारी छात्र छात्राओं के उमड़े समूह को दिशा निर्देश देते हुए मार्गदर्शन करते रहे।

नगर निगम ने चलाया स्वच्छता अभियान, डेंगू से बचने की दी जानकारी

प्रयागराज। शहर को डेंगू से मुक्त रखने के लिये नगर निगम स्वास्थ्य विभाग जोर दार अभियान के तहत सभी वार्डो के जोनल अधिकारी अपने अपने वार्डो मे घूम घूम कर लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करतें हुयें कह रहे है कि डेंगू जैसे बिमारी के पनपने वाले मच्छर से बचने के लिये घर के आसपास साफ स्वच्छ बनायें रखें घर मे वाटर कूलर मे छत पर खुली टंकियो मे बेकार टीन के डिब्बे टायर फूलदान खाली बोतलों मे पानी इकट्ठा न होने दे जिससे मच्छर का प्रकोप न बढने पाये घर के आसपास पानी इकट्ठा न होने दे सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करे बच्चो को स्कूल भेजते समय उन्हे पूरी आस्तीन कपडे मोजा जूते पहनाये नगर निगम हर सम्भव प्रयास कर शहर के गली मोहल्ले में फागिग चूना छिड़काव दिन रात सफाई कर्मी स्वच्छता के प्रति लगे हूये है ईसी कडी मे नगर निगम के स्वच्छता ब्रांड एम्बेसडर राजेन्द्र कुमार तिवारी दुकानजी अपने स्वच्छता परिधान पहनकर लोगो को डेंगू जैसे बिमारी से बचने के लिये घूम घूम कर लोगों को जागरूक करने के लिए नगर निगम की प्रचार-प्रसार वाहन से माईक द्वारा लोगों को अपील कर रहे हैं।

भागवत कथा सुनने का सौभाग्य मिलना बड़ा ही दुर्लभ : हरिप्रपन्नाचार्य महाराज

अखंड भारत संदेश

जंघई। जंघई बाजार में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में पांचवें दिन कथा व्यास रामानुजाचार्य हरिप्रपन्नाचार्य महाराज ने श्रीकृष्ण जन्म प्रसंग का संगीतमय वर्णन करते हुए कहा कि भागवत कथा सुनने का सौभाग्य मिलना बड़ा दुर्लभ है जब भी हमें यह सुअवसर मिले, इसका सदुपयोग करना चाहिए। कथा सुनते हुए उसी के अनुसार कार्य करें कथा का सुनना तभी सार्थक होगा। जब उसके बताए हुए मार्ग पर चलकर परमार्थ का काम करें। श्रीमद्भागवत कथा की अमृत वर्षा करते हुए कथा व्यास ने कहा कि जब भगवान का कारागार में जन्म हुआ तो रात के आधे काल में सब पहरेदार सम्मोहन में आ गए। वासुदेव की बेड़ी खुल गई। तब देवकी के परामर्श अनुसार बालक को टोकरी में रखकर यमुना पार कर गोकुल में नंदग्राम में कन्या से बदल आए। उस समय यमुना पूरे उफान पर थी। लेकिन भगवान श्रीकृष्ण के पैर का स्पर्श होते ही वह शांत हो गई। नंद के यहां 75 वर्ष बाद बालक हुआ था तो इस पर नंदग्राम में खुशियां मनाई गई। उधर, कंस को सूचना दी कि देवकी को आठवां बालक हुआ है तो उसने देवकी से कन्या को छीनकर पत्थर पर पटकना चाहा। लेकिन वह आकाश मार्ग से स्वगारोहण कर गई। कंस को बता दिया कि तेरा मारने वाला ब्रज मंडल में अवतरित हो गया है। कथा व्यास ने अनेक सुंदर प्रसंग सुनाते हुए कहा कि सभी अपने परिवारों को सुधारें तो पूरा भारत देश सुंदर हो जाएगा।महाराज ने कहा कि वैचारिक एवं बौद्धिक शक्ति के कारण इंसान सभी जीवों से अलग है इनकी बौद्धिक कुशाग्रता का अर्थ अपने विचारों में शुभता एवं मंगलकामना भी है यदि इंसान के विचार औरों के बारे में अच्छे है तो वह देवों के समान श्रेष्ठ इंसान है तथा इस तरह की सद्बुद्धि को अपने साथ रखने वाला व्यक्ति जीवन में असीम सफलताएं अर्जित करता ।तुलसीदास जी ने इसके बारे में कहा है कि जहाँ सुमति, तहँ संपति नाना, जहाँ कुमति, तहां विपति निदाना इस मौके पर कथा के मुख्य यजमान रामराज मिश्रा, प्रेमलता मिश्रा, मानस भास्कर अनुज महाराज, आचार्य अंबुज द्विवेदी, मदन गोपाल, संघर्षण,भाजपा विवेक शुक्ल, मनीष पांडेय, अभिषेक शुक्ला, मनोज कुमार मिश्रा, अभिषेक मिश्रा, मयंक मिश्रा, शिवम मिश्रा, दीपक मिश्रा, छोटेलाल सोनी, जवाहरलाल गौड़, हरिश्चन्द्र विश्वकर्मा, छोटेलाल मिश्रा सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

सैकड़ों युवकों ने कांग्रेस की ग्रहण की सदस्यता

अखंड भारत संदेश

सैकड़ों युवकों ने ग्रहण की कांग्रेस की सदस्यता

बारा। बारा विधानसभा क्षेत्र के संघर्षशील साथी रितेश राणा की अगुवाई में ब्लाक काँग्रेस कार्यालय जसरा पर शुक्रवार को सैकडों नवयुवकों ने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

मौके पर उपस्थित मुख्य अतिथि पूर्व प्रदेश महासचिव सुधाकर तिवारी ने सभी नवयुवक साथियों को कांग्रेस परिवार में शामिल होने पर बधाई दी और कहा कि कांग्रेस ने हमेशा ही जन भावनाओं के अनुरूप में काम करते हुए हर व्यक्ति के दुख और दर्द को समझ करके हमेशा ही कार्य करती रही है और उसी के अनुरूप में कांग्रेस पार्टी की सरकार ने किसानों का 72 हजार करोड़ रुपया एक कलम में माफ कर-के देश के किसानों को एक सौगात दिया था, जो अपने आप में आज भी एक मिसाल बना हुआ है लेकिन वही दूसरी ओर आज की यह वर्तमान सत्ता पूरी तरह से किसानों पर अत्याचार करने पर आमादा है और किसान विरोधी अधिनियम को बना करके देश के किसानों के साथ अन्याय करने पर अड़ी हुई है। आज हमारी पार्टी की राष्ट्रीय नेता राष्ट्रीय महासचिव एवं प्रभारी उत्तर प्रदेश बहन प्रियंका गांधी जी जब जब भी देश में अन्याय होता है तो वह सड़कों पर उतर कर अपना आंदोलन करती है जिस का नमूना यह देखने को मिला कि जब लखीमपुर खीरी में किसानों के साथ अत्याचार हुआ उनके ऊपर जुल्म की दास्तां लिखी गई तो बहन प्रियंका गांधी जी ने सड़क पर उतर कर उन किसान परिवारों के बीच में जाने का निर्णय किया। जिस पर आज की इस सरकार में उन्हें जाने से रोकने का भरपूर प्रयास किया, लेकिन बहन प्रियंका गांधी जी उन किसानों से मिल कर ढाढस बधाया और कहा कि जिस तरह से अन्याय हुआ है उसके दोषियों को सजा दिलाने के लिए हम सड़क पर अपना आंदोलन करेंगे। कांग्रेस के प्रतिज्ञा वचन में बहन प्रियंका गांधी द्वारा संकल्प लिया गया है, कि महिलाओं को 40% की भागीदारी टिकट में और इंटर पास बच्चियों को मोबाइल फोन और स्नातक पास बच्चियों को स्कूटी, अस्पतालों में मुफ्त इलाज, किसानों को उनका अधिकार एवं नाविकों को बालू का अधिकार तमाम अन्य आवश्यक तत्वों को लेकर वादा किया है। बैठक की अध्यक्षता ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीपक तिवारी ने किया। संचालन जिला कांग्रेस कमेटी जमुनापार प्रयागराज के जिला उपाध्यक्ष विवेक पाण्डेय ने किया। बैठक में जिला उपाध्यक्ष मोहम्मद इस्लाम उर्फ बबलू खान, जिला सचिव मयंक मिश्रा, हर्षित सिंह, डब्लू प्रधान, कुंवर बहादुर सिंह, आयुष सिंह, राहुल सिंह, संजय सिंह ,उत्तम सिंह, राम सिंह, कुलदीप सिंह, विवेक सिंह, कांची सिंह ,अमन सिंह ,सचिन सिंह पटेल ,आशीष दरबारी, सोनी सिंह, यूथ सिंह ,दिवाकर सिंह, बालेंद्र सिंह अजीत सिंह, विपिन सिंह ,अभय गौतम, शिवम मिश्रा, ऋषभ द्विवेदी , निष्कर्ष मिश्रा, विनय सिंह, उपेंद्र सिंह पटेल, अनुज सोनी, योगेश ठाकुर ,संजू तिवारी ,पीयूष मिश्रा, गुलशन पंडित ,लकी मिश्रा, राज मिश्रा, शैलेंद्र तिवारी, शिवम शुक्ला, अनुज शुक्ला, रुपेश शुक्ला आदि लोग शामिल हुए।

आईटीआई नैनी के वरिष्ठ सहायक के तबादले पर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने लगाई रोक

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नैनी प्रयागराज के वरिष्ठ सहायक व कर्मचारी संघ के सचिव का सिद्धार्थनगर तबादला करने के आदेश पर रोक लगा दी है और सचिव प्रशिक्षण एवं सेवायोजन उप्र लखनऊ को तबादला नीति के तहत दो माह में निर्णय लेने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने कहा है कि तबादला आदेश पर तीन माह या सचिव के निर्णय लेने तक अमल नहीं किया जाएगा। यह आदेश न्यायमूर्ति सरल श्रीवास्तव ने अनिल कुमार पांडेय की याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है। याचिका पर वरिष्ठ अधिवक्ता अमरनाथ त्रिपाठी ने बहस की।उनका कहना था कि तबादला नीति खंड 13 के अनुसार कर्मचारी संघ के अध्यक्ष व सचिव का दो वर्ष तक तबादला नहीं हो सकता। यदि जरूरी है तो उच्च अधिकारी का अनुमोदन लिया जाना जरूरी है। याची कर्मचारी संघ का प्रदेश सचिव है। निदेशक प्रशिक्षण एवं सेवायोजन ने 15 जुलाई 21 को बिना अनुमोदन लिए याची का नीति के विपरीत तबादला कर दिया है। कोर्ट ने याची को दो हफ्ते में सचिव को प्रत्यावेदन देने और दो माह में सचिव को नीति के तहत निर्णय लेने का निर्देश दिया है।

खबर संक्षेप

आपका साथ मेरा प्रयास तब होगा प्रतापपुर का चहूँमुखी विकास : कैप्टन करन सिंह

जंघई। भाजपा-अपना दल गठबंधन के प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र से 2017 में प्रत्याशी रहे कैप्टन करन सिंह लगातार प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न गाँवो में जाकर लोगो का आशीर्वाद ले रहे है।इसी क्रम में नेदुला, रस्तीपुर, सरजूपट्टी, खखैचा, सोरों, बजती, जलालपुर गाँव मे लोगों से जनसंपर्क किया और कहा कि प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र मेरा परिवार है क्षेत्र की सेवा करना मेरा नैतिक अधिकार है। इस दौरान लोगो को संबोधित करते हुए कहा जिसको आप लोगो ने विधायक चुना वो कभी लोगो के बीच मे आते ही नही उनका क्षेत्र के विकास और आपके सुख-दुख से कोई सरोकार नही है आप सभी एकजुट हो जाए बहन अनुप्रिया के हाथों को मजबूत करें उन्होंने आगे कहा जो गलती अगली बार हुई थी उसे इस बार दुहराना नही है ऐसे स्वार्थ की राजनीति करने वाले लोगो को प्रतापपुर से खदेड़ना है।इस अवसर पर रस्तीपुर ग्राम सभा मे जनसम्पर्क के दौरान भगेलूराम पटेल, राजितराम सरोज, प्रधान रस्तीपुर, डॉ विजय शंकर शुक्ला, सतीश त्रिपाठी प्रधानाचार्य, मुन्ना सिंह कुणाल चतुवेर्दी, राजकपूर सरोज, भाईलाल बिंद, अठई राम यादव सहित तमाम लोग मौजूद।

लांस नायक सागर उज्जल ने सरकारी राइफल से खुद को मारी गोली, मौत

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बमरौली स्थित एयरफोर्स के मध्य वायु कमान के संचार मुख्यालय तिवारी तालाब में तैनात कम्युनिकेशन स्क्वाड्रन सागर उज्जवल (21) पुत्र राजेंद्र सिंह ने गुरुवार देर रात सरकारी राइफल से खुद को ड्यूटी के दौरान गोली मार ली। इससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। फायरिंग की आवाज सुनकर एयरफोर्स कर्मी मौके पर पहुंचे लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। खबर मिली तो बागपत जनपद से शुक्रवार को दिन में मृतक का भाई पोस्टमार्टम हाउस पहुंचा, लेकिन वह मौत की वजह नहीं बता सके। रक्षा मंत्रालय के पीआरओ समीर गंगा खेड़कर ने बताया कि इस घटना की कोर्ट आफ इंक्वायरी कराई जा रही है।

गोली चलने की आवाज से खलबली : बागपत जनपद के बलई थाना इलाके में मलई कला का रहने वाला सागर उज्जवल मध्य वायु कमान बमरौली के कम्युनिकेशन हेडक्वार्टर तिवारी तालाब में तैनात था। वह कम्युनिकेशन स्क्वाड्रन पद पर था। गुरुवार देर रात ड्यूटी के दौरान उसने सरकारी राइफल से अपनी ठुड्डी पर गोली मार ली। गोली चलने की आवाज सुनकर एयरफोर्स कर्मी मौके पर पहुंचे तो सागर खून से लथपथ जमीन पर पड़ा था। बगल में राइफल पड़ी थी। सूचना विभागीय अधिकारियों को मिली तो वह भी घटनास्थल पर पहुंचे। उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इसके बाद अधिकारियों ने पूरामुफ्ती थाने में इसकी जानकारी देते हुए मृतक के स्वजनों को भी सूचना दी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया। शुक्रवार को दिन में पोस्टमार्टम हाउस पर मृतक सागर का भाई कुछ लोगों के साथ पहुंचा। उसने कुछ भी बोलने से इन्कार कर दिया। बस यही कहा कि उसे कुछ नहीं पता। पोस्टमार्टम के बाद शव को स्वजनों को सौंप दिया गया।

क्या थी वह वजह जिसने कर दिया मजबूर : इंस्पेक्टर पूरामुफ्ती गंगाराम का कहना है कि कोई सुसाइड नोट भी नहीं मिला है। सागर ने खुदकुशी किन कारणों से की, यह भी पता नहीं चल सका है। उसके स्वजन भी कुछ नहीं बता सके। हालांकि, कोई न कोई बात जरूर रही होगी, जिस कारण उसने यह कदम उठाया। दो साल पहले एयरफोर्स के पीआरओ रहे अमित सिन्हा ने खुदकुशी कर ली थी। वायु सेना के पीआरओ समीर गंगाखेड़कर का कहना है कि घटना की कोर्ट आफ इंक्वायरी के आदेश हो गए हैं। जांच में मौत का कारण स्पष्ट होगा।

बाइक से जा रहे पति पत्नी को रोडवेज बस ने मारी टक्कर पत्नी की मौत ,पति गंभीर

प्रयागराज। शुक्रवार को ऐसा हादसा हुआ, जिसे सुनकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दुर्घटना प्रयागराज से लखनऊ राजमार्ग पर नवाबगंज थाना क्षेत्र में हुई। दर्दनाक हादसे में महिला की मौत हो गई तो उसका पति गंभीर रूप से जख्मी हो गया। हालांकि इस हादसे का कारण बना रोडवेज बस के चालक को लोगों ने पकड़ लिया। उसकी पिटाई करने के बाद पुलिस के हवाले कर दिया गया।नवाबगंज थाना क्षेत्र के पूरा मलाक बलऊ स्थित शिवलाल का पूरा निवासी संदीप शुक्रवार की सुबह किसी काम से बाइक से जा रहा था। बाइक पर उसकी 25 वर्षीय पत्नी रंजना देवी भी साथ में थी। वह नवाबगंज थाना क्षेत्र के हथगवां बाजार में लखनऊ हाईवे पर पहुंचे। इसी दौरान प्रयागराज की ओर से आ रही तेज रफ्तार बस ने सामने से आ रही बाइक में टक्कर मारी। रोडवेज बस के चालक की लापरवाही हादसे के बाद भी नजर आई। बाइक में टक्कर मारने से संदीप सड़क पर गिर गया। वहीं बस में बाइक फंस गई। रंजना भी बाइक में फंसी थी। हादसे के बाद बस लेकर चालक वहां से भागा। इस दौरान बस में फंसी बाइक और रंजना भी घिसटने लगे। हादसा देख लोगों ने शोर मचाया लेकिन बस चालक ने इसका ध्यान नहीं दिया।

हाईकोर्ट समाचार

हाईकोर्ट ने जालौन के जिला जज पर लगाया 21 हजार का हर्जाना

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने जिला न्यायाधीश जालौन द्वारा कर्मचारी का इस्तीफा तकनीकी आधार पर अस्वीकार करने पर नाराजगी जताई है। कोर्ट ने रेलवे में चयनित जिला अदालत में कार्यरत कर्मी के इस्तीफे को तीन माह का नोटिस नहीं देने के आधार पर अस्वीकार कर जांच बैठाने के आदेश को रद्द कर दिया है। जिला जज को निर्देश दिया है कि इस्तीफा स्वीकार कर इस्तीफे की तिथि से कार्य मुक्त करें और आदेश रेलवे को प्रेषित करें। कोर्ट ने याची को मानसिक रूप से परेशान करने के लिए जिला जज को निर्देश दिया है कि वह याची को 21 हजार रुपये एक हफ्ते में भुगतान करें। यह आदेश न्यायमूर्ति सुनीत कुमार ने खूब सिंह की याचिका को स्वीकार करते हुए दिया है। याची 2014 की भर्ती में जिला अदालत में लिपिक पद पर नियुक्त हुआ था। विभाग की अनुमति से रेलवे भर्ती बोर्ड की परीक्षा दी। स्टेनोग्राफर पद पर चयनित किया गया। उसने जिला जज को लिपिक पद से इस्तीफा भेजा और रेलवे में ज्वाइन किया। जिला जज ने यह कहते हुए इस्तीफा नामंजूर कर दिया कि याची ने तीन माह का नोटिस नहीं दिया है और बिना इस्तीफा स्वीकार हुए दूसरे विभाग में ज्वाइन करने की जांच बैठाई, जिसे चुनौती दी गई थी। कोर्ट ने कहा कि याची ने अनापत्ति लेकर भर्ती परीक्षा दी और चयनित होने पर इस्तीफा दिया। नियम 4 के तहत नियुक्ति अधिकारी को तीन माह के नोटिस को शिथिल करने का अधिकार है। कोर्ट ने कहा कि सरकारी कर्मचारियों को एक साथ दो विभागों में काम करने का अधिकार नहीं है। रेलवे में ज्वाइन करने के बाद जिला अदालत से वेतन नहीं लिया है। किसी भी कर्मचारी को बेहतर सेवा में जाने का हक है। इच्छा के विपरीत कर्मी को कार्य करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। जिला जज का आचरण मनमाना पूर्ण है। याची को मानसिक रूप से परेशान किया।

हाईकोर्ट बार एसो. चुनाव : दोनों पक्ष विवाद का निकालें सौहार्दपूर्ण हल : हाईकोर्ट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बार एसोसिएशन की निवर्तमान कार्यकारिणी और एल्डर कमेटी को आपसी विवाद सौहार्दपूर्ण तरीके से हल करने के लिए कहा है। कोर्ट ने एसोसिएशन का चुनाव कराने के आदेश को संशोधित करने की मांग को लेकर दाखिल अर्जी को जनहित याचिका के साथ 15 नवंबर को पेश करने का निर्देश दिया है और दोनों पक्षों से आपसी विवाद व बार से निष्कासन की कार्यवाही का निस्तारण करने की अपील की है।कोर्ट ने कहा है कि दोनों पक्ष विवाद का हल निकालें और एक दूसरे के खिलाफ शिकायतों को वापस लेने की अर्जी दाखिल करें ताकि सौहार्दपूर्ण वातावरण में बार एसो. का चुनाव संपन्न हो सके। कोर्ट ने सुनवाई के समय एल्डर कमेटी के सदस्यों को मौजूद रहने को कहा है। यह आदेश न्यायमूर्ति एमएन भंडारी तथा न्यायमूर्ति पीयूष अग्रवाल की खंडपीठ ने संतोष कुमार मिश्र व अन्य की चुनाव को लेकर दाखिल जनहित याचिका पर दी गई अर्जी की सुनवाई करते हुए दिया है। कोर्ट ने चुनाव प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने से इनकार करते हुए दाखिल अंतर्हस्तक्षेपी अर्जी को खारिज कर दिया है। जनहित याचिका की सुनवाई 15नवंबर को होगी।

पैर पकड़वा कर माफी मंगावाने पर भड़के किसान, हाइवे जाम करने की दी धमकी

अखंड भारत संदेश

सोरांव। मऊआइमा की एडीओ कोआपरेटिव द्वारा खाद लेने गए किसान से पैर पकड़वा कर माफी मंगवाने से किसानों में उबाल आ गया है। भारतीय किसान यूनियन के जिला उपाध्यक्ष बबलू दूबे ने अल्टीमेटम दिया है कि 24 घंटे के अंदर एडीओ को निलंबित नहीं किया गया तो किसान नेशनल हाईवे पर चक्का जाम करेंगे। किसानों ने जिलाधिकारी के नाम संबोधित ज्ञापन नायब तहसीलदार फूलपुर को सौंपा है। बुधवार को मऊआइमा ब्लाक के मोहम्मदपुर सरायअली स्थित साधन सहकारी समिति पर खाद के लिए बड़ी संख्या में किसान जुटे थे। किसान निर्धारित मूल्य से अधिक दाम लेने का आरोप लगाते हुए हंगामा करने लगे। इसी बीच एडीओ कोआपरेटिव कंचन सिंह पहुंची और हंगामा कर रहे किसानों पर बरस पड़ीं। एडीओ ने प्रदर्शन में शामिल मोहम्मदपुर मगनपुर निवासी किसान बसंत लाल पुत्र ननकू राम को अपने पास बुलवाया और माफी मांगने के लिए कहा। बसंत लाल का आरोप है कि एडीओ ने धमकी दी कि अगर उसने पैर पकड़ कर माफी नहीं मांगी तो उसे जेल भेज दिया जाएगा। बसंत लाल ने एडीओ का पैर पकड़ कर किसी तरह से अपना पीछा छुड़वाया। इससे नाराज किसानों ने नारेबाजी करना शुरू कर दिया। पुलिस ने किसी तरह से समझाबुझा कर किसानों को शांत कराया। गुरुवार को जब किसान से पैर पकड़वा कर माफी मंगवाने की बात फैली तो चारो तरफ आक्रोश फैल गया। भारतीय किसान यूनियन के जिला उपाध्यक्ष बबलू दूबे ने किसानों के साथ नायब तहसीलदार फूलपुर धनंजय कुमार यादव को जिलाधिकारी के नाम संबोधित ज्ञापन सौंप कर चेतावनी दी कि यदि 24 घंटे के अंदर निरंकुश एडीओ पंचायत के खिलाफ निलंबन की कार्रवाई नहीं की गई तो कि नेशनल हाईवे पर चक्का जाम करेंगे। ज्ञापन देने में मुख्य रूप से रामसजीवन पटेल, सुरेंद्र पटेल, सुरेश दूबे, नईम अहमद, सरफराज अहमद उर्फ सेबू मुस्ताक, डा. राम मूरत यादव, अमरनाथ यादव आदि किसाने रहे।

मऊआइमा के एडीओ कोआपरेटिव के खिलाफ किसान यूनियन के नेताओं का फूटा गुस्सा।

संविधान यात्रा जनसभा को 26 को सम्बोधित करेंगे केन्द्रीय मंत्री और मुख्यमंत्री

लखनऊ से प्रयागराज को प्रातः छः बजे एक हजार चार पहिया वाहनो का निकलेगा संविधान यात्रा, वीरांगना ऊदा देवी पासी का शहादत दिवस भी मनाया जाएगा

प्रयागराज। संविधान दिवस यात्रा 26 नवम्बर 2021 को प्रयागराज मे लखनऊ से एक हजार चार पहिया वाहनों द्धारा काफिला प्रयागराज पहुचेगा। जहा एक विशाल जनसभा का आयोजन किया गया है। जिसमें वीरांगना ऊदा देवी पासी की शहादत दिवस भी मनाया जाएगा। जनसभा को केन्द्रीय मंत्री कौशल किशोर व प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आदि मुख्य रूप से सम्मिलित होकर सम्बोधित करेगें। भारतीय जनता पार्टी प्रयागराज यमुनापार जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुवेर्दी ने जानकारी देते हुए बताया कि यमुनापार जिलाध्यक्ष विभव नाथ भारती ने पदाधिकारियों और कार्यकताओं संग संविधान दिवस यात्रा व वीरांगना ऊदा देवी पासी की शहादत दिवस मनाने की बैठक कर योजना बनाई है।

सदस्यता अभियान पूरा करने का लिया संकल्प

जसरा। आगामी विधान सभा चुनाव को लेकर भाजपा ने सदस्यता अभियान को तेज कर दिया है। शुक्रवार को जसरा मे भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा यमुनापार के जिला अध्यक्ष सुभाष सिंह पटेल की अध्यक्षता में दर्जनों पदाधिकारियो के साथ बैठक हुई। जिसमें सदस्यता अभियान की लक्ष्य को पूरा करने के लिए रणनीति तैयार की गई। जिला अध्यक्ष ने सुभाष सिंह पटेल ने कहा कि दस हजार नए सदस्य बनाने की जिम्मेदारी प्रदेश शीर्ष नेतृत्व ने सौंपी है। जिसे समस्त जिला पदाधिकारियों सहित यमुनापार के बीस मंडल अध्यक्षों की पूरी टीम के सामूहिक प्रयास से बनानी है। सभी मंडल और जिला कार्यकारिणी सदस्यों को सदस्यता अभियान के लक्ष्य को पूरा करने की अलग अलग सदस्य बनाने की सदस्य संख्या का लक्ष्य निर्धारित की गई। बैठक में जिला उपाध्यक्ष धर्मराज पाल, सुरेंद्र सिंह पटेल, जिला महामंत्री डॉ सूर्या यादव, संजय पाल, जिला मंत्री सुरेंद्र बहादुर सिंह, रामराज सिंह, मंडल अध्यक्ष रत्नाकर सिंह पटेल, अतर सिंह कुशवाहा, शंकर लाल गुप्ता आदि रहे।

न्यूज झरोखा

गोपा अष्टमी पर गाय माता की हुई पूजा, लिया आशीर्वाद

सहसों। सनातन धर्म एवं हिंदू मान्यता के अनुसार गोपाष्टमी के दिन भगवान कृष्ण और बलदाऊ जी पहली बार वृंदावन में गायों को चराने के लिए गए थे इनके अलावां देवी राधा ने भी भेष बदलकर पुरुष वस्त्र धारण करके खुद को एक ग्वाला के रूप में भगवान कृष्ण के साथ शामिल हो गई। भगवान कृष्ण और देवी राधा को एक साथ देख गायों में हलचल मच गई। जिससे प्रसन्न होकर गायों के झुंड में सुरभि नाम की गाय ने भगवान के ऊपर अपने वक्ष से दुग्ध निकालकर भगवान कृष्ण के ऊपर दूधों का बौछार किया तभी से भगवान कृष्ण को गोविंद के नाम से लोग जाने लगे और यह तिथि गोपाष्टमी के नाम से प्रचलित हो गया। इस अवसर पर क्षेत्र की चंदरपुर उर्फ बस महुआ की महिला ग्राम प्रधान गीता तिवारी ने गो आश्रय जाकर बछड़ों सहित गाय माता की विधि विधान से पूजन करके उनको माला पहनाकर व्यंजन और इत्यादि पिलाकर गाय माता के चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर उनके साथ ग्राम सभा की रोजगार सेवक शैलेंद्र शुक्ला को आश्रय स्थल के कर्मचारी तथा ग्राम सभा के सदस्यगण शामिल रहे। ग्राम प्रधान गीता तिवारी ने गोआश्रय स्थल पर सफाई पर विशेष ध्यान देने के लिए कर्मचारियों को दिशा निर्देश भी दिया।

लोकतंत्र में अपनी भागीदारी के लिए मतदान जरूरी : एसडीएम

करछना। मतदान हमारा नैतिक और सामाजिक कर्तव्य है।एक स्वस्थ्य लोकतंत्र के लिए हम सबको अपनी योग्यता के अनुरूप भागेदारी निभाते हुए मतदान करना आवश्यक है।आप सभी बच्चे इसके लिए जागरूकता का संकल्प लें और अपने पास पड़ोस के लोगों को भी संपूर्ण मतदान के प्रति प्रेरित करें। यह बातें क्षेत्र के रामपुर स्थित बृजमंगल सिंह इंटर कॉलेज परिसर में प्रार्थना सभा स्थल पर आयोजित मतदाता जागरूकता कार्यक्रम की मुख्य अतिथि करछना की उप जिलाधिकारी अमृता सिंह ने कही। उन्होंने मतदान के लिए योग्य युवाओं को सूची में नाम जुड़वाने के अलावा नाम के संशोधन और अनुचित नामों को सूची से हटवाने हेतु जरूरी जानकारी दी। विद्यालय के प्रधानाचार्य मनीष तिवारी ने बच्चों को जागरूकता अभियान की शपथ दिलाते हुए अधिक से अधिक मतदान हेतु घर परिवार और पास पड़ोस के लोगों को प्रेरित करने पर जोर दिया। स्कूल के बच्चों ने भी मतदान के संबंध में तरह-तरह के स्लोगन और नारे प्रस्तुत करते हुए इसके प्रति संकल्प लिया। संचालन अशोक सिंह ने किया। इस दौरान राजस्व कर्मियों के अलावा,प्रदीप श्रीवास्तव,जितेंद्र कुमार,सुरेश कुमार,जगतपाल विजय सिंह,सुधा सिंह, रमेश तिवारी,चन्द्रशेखर सिंह,विश्वेश ओझा,कमलाशंकर तिवारी राजकुमार विश्वकर्मा, सुनील प्रजापति सहित शिक्षक कर्मचारी और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

मतदाता जागरूकता, नशामुक्त समाज के विकास के लिए बहुत ही आवश्यक : धीतेश तिवारी

जसरा। महिला सशक्तिकरण, मतदाता जागरूकता, जल संरक्षण इत्यादि सामाजिक विषयों पर जनजागरुकता परिचर्चा के आयोजन के संदर्भ मे कार्यक्रम के संयोजक करछना विकासखण्ड के प्रधानसंघ महामंत्री धीतेश तिवारी ने क्षेत्र के विभिन्न गावों मे बैठक कर लोगों से शिरकत होनें की अपील कर रहें हैं। इस अवसर पर श्री तिवारी ने यह भी कहा कि जल संरक्षण, नशामुक्त समाज, महिला सशक्तिकरण ये सभी समाज एवम राष्ट्र को सीधा प्रभावित करते हैं और उनका निजी मानना हैं कि विभिन्न प्रयासों के माध्यम से सामाजिक बदलाव भी संभव हैं। इस अवसर पर श्री तिवारी ने यह भी जानकारी साझा किये कि उक्त कार्यक्रम मे विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्य, प्रबंधक समेत क्षेत्र के गणमान्य लोग उपस्थित होकर ग्रामीणों के मध्य अपने अनुभवो को साझा करेंगे।सूत्रों के मुताबिक इसके पूर्व भी श्री तिवारी विभिन्न सामाजिक आयोजनों के माध्यम से लोगों को मे जागरूकता के प्रचार प्रसार हेतु आयोजन करवा चुके हैं।

अक्षय नवमी पर आंवले की पेंड़ की हुई पूजा

सहसों। कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को आंवला नवमी को लोग अक्षय नवमी भी कहते हैं। इस दिन आंवला वृक्ष को मां कुष्मांडा के रूप में पूजा होती है। इसे आरोग्य नवमी भी कहा जाता है इस दिन माता कुष्मांडा का अवतरण होने से इस तिथि को कुष्मांडा नवमी भी कहा जाता है। हिंदू पंचांग के अनुसार पौराणिक मान्यताओं में कार्तिक शुक्ल पक्ष की नवमी से लेकर पूर्णिमा तक भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी आंवले के पेड़ पर निवास करते हैं इस दिन भगवान विष्णु और लक्ष्मी की पूजन का भी विधान है साथ ही इस दिन पूजन तर्पण स्नान और दान का बहुत अधिक महत्व है। गांव की महिलाएं एवं बच्चे अक्षय नवमी के दिन बगीचे में लगे आंवले के पेड़ की पूजा कर उसी के नीचे व्यंजन बनाकर परिवार समेत भोजन कर अक्षय नवमी मनाते हैं। गांव के बुजुर्गों का कहना है कि अक्षय नवमी के दिन आंवले की पूजन करें आंवले की फल का सेवन करें और इस दिन आंवले के वृक्ष के नीचे व्यंजन बनाकर परिवार समेत भोजन करने से सभी लोग निरोग रहते हैं और शुभ माना गया है। आंवले के वृक्ष का पूजन करने से श्री हरी समेत माता लक्ष्मी कुष्मांडा के रूप में अधिक प्रसन्न होते हैं और अपना कृपा भक्तों पर सदा बनाए रखती हैं। इस अवसर पर पंडित दिनेश चन्द तिवारी ने बताया कि इस दिन ही त्रेता युग का आरंभ हुआ था इसे कुष्मांडा नवमी के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि देवी कुष्मांडा इसी दिन प्रकट हुई थीं इस दिन का पूजा विधान आंवले के वृक्ष के सामने पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठें धात्री के वृक्ष की पंचोपचार सहित पूजन करें फिर वृक्ष की जड़ को दूध से सिंचन करें कच्चे सूत को लेकर धात्री के तने को लपेटे अंत में घी और कर्पूर से आरती और परिक्रमा करें। ऐसा करने से आपके जीवन में संतान सुख, कष्टों से मुक्ति, धन और जन में वृद्धि, निरोगी काया, सुकर्म पुण्य तथा शुभ फल की प्राप्ति होती है।

अक्षय नवमी पर बगीचे में आंवले की वृक्ष की पूजा करती ग्रामीण महिला।

रामलीला मंच पर बार बालाओं की लड़कियां नचा कर धर्म को बनाया जा रहा मजाक

अखण्ड भारत सन्देश

सिरसा। प्रयागराज मेजा क्षेत्र में गांवो में रामलीला के माध्यम से कलाकार भगवान श्री राम की लीलाओं का वर्णन करते हैं रामलीला देखने के लिए सैकड़ों की संख्या में लोग पहुंचते हैं। इस आयोजन की पूरी तरह आस्था से जोड़कर देखा जाता है। गांव के लोग कलाकारों को भगवान स्वरूप मानकर पूजा तक करते हैं।अब ऐसे आयोजन में अश्लीलता परोसी जा रही है ।रामलीला में मनोरंजन के लिए बार बालाओं को बुलाया गया है। ऐसे ही मामला प्रकाश में आया है। विधानसभा मेजा थाना मेजा जनपद प्रयागराज ग्रामपंचायत चंदापुर भंभौरा में रामलीला के मंच पर बार बालाओं द्वारा अश्लील ड्रांस किए जाने का मामला प्रकाश में आया है। रामलीला के इस मंच बार बालाओं का फिल्मी गानों पर डांस कराया जा रहा है। यह कवायद भीड़ एकत्र करने के लिए की जा रही है जिसे लेकर स्थानीय लोगों में आयोजको के प्रति आक्रोश व्याप्त है। इतना ही नहीं आयोजक जो स्वयं धर्म के नाम पर फैलाए जा रहे अश्लीलता में बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। रामलीला के नाम पर आयोजित इस आर्केस्ट्रा में बाल-बाल आओ द्वारा अश्लील डांस किया जाने लगा।वह भी भोजपुरी गाने की धुन पर। जिससे गांव के लोगो में आक्रोश बना हुआ है। अस्थानिय प्रशासन ध्यान नही दिया तो गांव में तनाव बनकर अनहोनी का भीषण रूप बन सकता हैं।

रामलीला मंच पर बार बालाओं के लग रहे ठुमके

भागवत कथा में शिवसेना प्रदेश प्रमुख का हुआ जोरदार स्वागत

भागवत कथा में उपस्थित शिवसेना प्रमुख

अखंड भारत संदेश

करछना। क्षेत्र के माही गांव में चल रही भागवत कथा के छठे दिन कार्यक्रम में पहुंचे शिवसेना के प्रदेश प्रमुख ठा0अनिल सिंह का जोरदार स्वागत किया गया।इस दौरान भागवत कथा संयोजक समेत कार्यकताओं ने उनका स्वागत किया।प्रदेश प्रमुख ने कथा व्यास और महापुराण का अर्चन वंदन करते हुए कहा कि मोक्ष दायिनी कथा कथा के श्रोत श्रीमद्भागवत महापुराण से हमें अपने अपने लोक जीवन में बहुत कुछ सीखने की जरूरत है।अपने धर्म और उसके मर्म को समझाने वाले हमारे आचार्य और कथा व्यास भी पुज्य है जो समाज में नैतिक सिद्धांतों और आध्?ात्म और आस्था की अलख जगा रहे है।भाजपा को आड़े हाथों लेते हुए प्रदेश पमुख ने कहा कि सरकार की जन विरोधी नीतियां किसी से छुपी नही है।बिरोजगारी,मंहगाई और भ्रष्ट्राचार का पर्याय बनी सरकार प्रदेश में कुछ दिनों की मेहमान है।उन्होने हिन्दुत्व और सनातन धर्म की ध्वजा को अनवरत फहरते रहने के प्रति युवाओं को प्रेरित किया।उधर कथा व्यास ने व्यासपीठ से रूक्मणि विवाह और गोपिकाएं से कृष्ण के विछोह की मार्मिक कथा का वर्णन करते हुए सभी श्रद्धालुओं को भाव विभोर किया।मुख्य यजमान निर्मला देवी एवं हींगूलाल द्विवेदी ने भागवत भगवान की आरती की। इस मौके पर संजय दिवेदी अशोक दिवेदी, नेब्बूलाल, अरविंद कुमार,लवकुश दुबे,चन्द्रमा प्रसाद शुक्ला,रामभवन दुबे समेत बड़ी संख्या में लोग और महिलाएं मौजूद रही।

लालापुर पंचपुरी में गुज रहा श्रीमद्भागवत महापुराण

रामकृष्ण मिश्रा, विनोद समदरिया सहित लालापुर पंचपुरी में सुरु है श्री भागवत महापुराण

लालापुर। लालापुर गांव के विनोद समदरिया सहित लालापुर पंचपुरी में कई जगह श्रीमद् भागवत महापुराण चल रहा है रामकृष्ण मिश्रा, अशोक मेडिकल स्टोर के यहां चल रहे श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह यज्ञ में गुरुवार की शाम वृंदावन धाम से पधारे कथावाचक वृजबिहारी जी महाराज ने श्री कृष्ण लीला का बखान करते हुए उनके विवाह पर विस्तार से प्रकाश डाला। श्री कृष्ण की रासलीला की अनेकों झांकियों की प्रस्तुति ने दर्शकों का मन मोह लिया । शुक्रवार के दी व्यास पीठ से वृजबिहारी जी महाराज ने श्री कृष्ण और सुदामा के चरित्र पर व्याख्यान दिया । इस बीच उन्होंने कहा कि श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त व उनके बाल सखा विप्र सुदामा बहुत ही बेवशी की जिंदगी जी रहे थे । लेकिन वे अपनी इस जीवन से बेहद खुश थे । रोज चार घरों में ही भिक्षाटन करते थे उससे जो मिल जाये उसी को भगवान का प्रसाद मानकर पूरे परिवार के साथ पा लिया करते थे । एक समय ऐसा आया जब सुदामा के घर मे कई दिनों तक भोजन नहीं बना तब उनकी पत्नी सुशीला ने सुदामा को श्री कृष्ण को द्वारिका पूरी जाने को विवश किया । सुदामा के पहुंचने पर श्री कृष्ण की मित्र के प्रति प्रेम देख द्वारिका पूरी के लोग स्तब्ध रह गए। सुदामा और श्री कृष्ण की झांकी देख मौजूद दर्शक भाव विह्वल हो गए । व्यास वृजबिहारी के साथ सह गायिका के रूप में आई अनुष्का मिश्रा के सस्वर गीत सुन लोग भाव विभोर हो गए । इस मौके पर प्रधान शंकरलाल पांडेय,दिलीप पाण्डेय, रजान पाण्डेय वीरेंद्र पांडेय,माखन पांडेय,अरवेंद्र पांडेय,चंदन शुक्ल,नामी शुक्ल,दुबरी महराज आदि लोग मौजूद रहे।

जिले में सामूहिक विवाह योजना के 700 लाभार्थियों को लाभान्वित कराने का मिला लक्ष्य

मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह कार्यक्रम के सम्बन्ध में डीएम ने की बैठक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल की अध्यक्षता में कलेक्टेज्ट सभागार में मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजनान्तर्गत जनपद में सामूहिक विवाह कार्यक्रम के सम्बन्ध में बैठक की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि शासन स्तर से यह निर्णय लिया गया है कि मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अन्तर्गत एक वृहद कार्यक्रम मेगा इंवेन्ट के रूप में एक ही तिथि व एक ही समय शुभ मुहूर्त में सामूहिक विवाह का आयोजन किया जायेगा जिसके क्रम में जनपद को 700 लाभार्थियों को लाभान्वित कराये जाने लक्ष्य प्राप्त हुआ है।

बैठक में बताया गया कि जनपद में अभी तक 334 लाभार्थियों का पंजीकरण किया गया है जिनमें विकास खण्ड लक्ष्मणपुर के 95, लालगंज के 60, रामपुर संग्रामगढ़ के 10, गौरा के 25, शिवगढ़ के 25, मानधाता के 54, बाबा बेलखरनाथधाम के 18, सण्ड़वा चन्द्रिका के 45 व नगर पंचायत कटरा मेंदनीगंज के 02 लाभार्थी सम्मिलित हैं। जिलाधिकारी ने खण्ड विकास अधिकारी एवं अधिशासी अधिकारी को निर्देशित किया कि अवशेष 366 लाभार्थियों के लक्ष्य की पूर्ति 15 नवम्बर 2021 तक अवश्य पूर्ण कर ली जाये। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार, समस्त खण्ड विकास अधिकारी, समस्त अधिशासी अधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह कार्यक्रम की बैठक में बोलते डीएम डा0 नितिन बंसल

कहासुनी के दौरान मारपीट

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के बरमौली गांव में कहासुनी के दौरान फूलकली पत्नी फूलचंद के लड़के मनोज कुमार को शुक्रवार की दोपहर गांव के मोनू सरोज, रमेश व राजकुमार ने कहासुनी के दौरान मारा पीटा जिस पर पुलिस ने तहरीर मिलने पर आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया।

पीबीपीजी कालेज में सदस्यता का फार्म लेते युवा

पीबीपीजी कालेज में भाजपा ने लगाया सदस्यता कैम्प

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सदर विधानसभा के प्रताप बहादुर पोस्ट डिग्री कालेज में भाजपा के वरिष्ठ नेता राजा अनिल प्रताप सिंह द्वारा मेरा परिवार-भाजपा परिवार के तहत सदस्यता कैंप लगाया गया। सदस्यता अभियान में बतौर मुख्य अतिथि पूर्व भाजयुमो जिलाध्यक्ष व सदस्यता अभियान के जिला प्रभारी रवि गुप्ता उपस्थित रहे।

सदस्यता अभियान प्रभारी रवि गुप्ता ने छात्र-छात्राओं को भारतीय जनता पार्टी के विकास कार्यों की उपलब्धियों को बताया। रवि गुप्ता ने कहा उत्तर प्रदेश के युवाओं को नवीनतम तकनीक से लैस करने के लिए राज्य सरकार नवंबर के आखिरी सप्ताह से टैबलेट और लैपटॉप बांटने का कार्य भी शुरू कर देगी। कालेज के युवा में भाजपा का सदस्य बनने के लिए उत्साहित दिखे।

छात्र की टीसी में अपराधी लिखने वाले प्रधानाचार्य हटाये गये

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के मंगरौरा ब्लाक के नेवरा गांव में एक इंटर कालेज के प्रधानाचार्य द्वारा अपने ही विद्यालय के छात्र शिवसांत सिंह की टीसी में अपराधी लिखने का मामला तूल पकड़ा तो कालेज के प्रबंध समिति ने एक बैठक कर छात्र को अपराधी बताने वाले प्रधानाचार्य को हटाने का निर्णय लिया और वहीं के एक वरिष्ठ अध्यापक को प्रधानाचार्य का कार्यभार सौंप दिया। नये प्रधानाचार्य ने उस टीसी जिसमें उसे अपराधी लिखा गया था, निरस्त करते हुए छात्र तथा उसके परिजनों को इसकी जानकारी दी तथा कालेज की प्रबंध समिति ने अपने इस निर्णय की प्रति जिला विद्यालय निरीक्षक को सौंपकर मामले को पटाक्षेप करने का अनुरोध किया। बताया जाता है कि जगेश्वर प्रसाद यादव इंटर कालेज नेवरा के प्रधानाचार्य द्वारा छात्र की टीसी में अपराधी लिखने के मामले की शिकायत जिलाधिकारी के पोर्टल पर की गई थी। यह शिकायत जन्तिरा देवी पत्नी हरिकेश सिंह ने आरोप लगाया था कि इस छात्र के साथ अन्याय किया गया है। इस पर प्रबंध समिति ने सहानुभूतिपूर्वक विचार कर प्रधानाचार्य नंदन सिंह यादव को हटाकर इसका प्रभार विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक रामलाल को दे दिया है और छात्र को पुनः उस विद्यालय में प्रवेश करा दिया गया है। नये प्रधानाचार्य ने एसआर रजिस्टर की छाया प्रति तथा प्रबंध समिति के प्रस्ताव की प्रति भेजकर मामले का पटाक्षेप कराने का अनुरोध किया है।

तमंचे के साथ वीडियो वायरल करने वाला गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कुछ दिन पूर्व सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मो पर, कुछ युवकों द्वारा एक कार्यक्रम के दौरान अवैध शस्त्रों का प्रदर्शन करते हुए वीडियो वायरल हुआ था, जिसके सम्बन्ध में जांच की गई तो ज्ञात हुआ कि यह वीडियो 31 अक्टूबर को जनपद के थाना क्षेत्र लालगंज के ग्राम पूरे जेनई में आयोजित हुए एक कार्यक्रम से सम्बन्धित है। इस सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 691/21 धारा 143, 286 भादवि व 7 सीएलए एक्ट का अभियोग पंजीकृत कर स्थानीय पुलिस द्वारा उक्त वीडियो में अवैध असलहों के साथ दिखाई देने वाले युवकों की खोजबीन की जाने लगी। इसी क्रम में शुक्रवार को थाना लालगंज से उ0नि0 विनीत उपाध्याय मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थानाक्षेत्र लालगंज के पूरे जेनई गांव के पास से उक्त प्रकरण/मुकदमे से सम्बन्धित अभियुक्त शिवकेश उर्फ सुकेश सरोज पुत्र छोटेलाल नि0 जेनई का पुरवा थाना लालगंज को एक अदद अवैध तमन्चा 12 बोर व दो अदद जिन्दा कारतूस 12 बोर के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी के सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 711/21 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट का अभियोग पंजीकृत किया गया।

कोतवाली पुलिस के सामने दबंगों ने युवक को पीटा, रेफर

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। कुंडा कोतवाली के अघिया गांव निवासी मो0 अकरम पुत्र अब्दुल्ला खा शुक्रवार की दोपहर अपनी स्कूटी से कुंडा से घर जा रहा था कि गाव के पास सामने से आ रही ट्रैक्टर से साइड लगने से अकरम स्कूटी से नीचे गिर गया। ट्रैक्टर चालक गाड़ी खड़ी करके अपने साथियों को नीचे उतारकर अकरम को मारने पीटने लगे। घटना की खबर मिलते ही अकरम के साथी लोग भी आ गए। दोनों पक्षों में जमकर मारपीट होने लगी। सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस युवक को बचाने का प्रयास करती रही लेकिन दबंगों के आगे पुलिस असहाय हो गयी और युवक पिटता रहा। किसी तरह ट्रैक्टर चालक गाड़ी लेकर भागने लगा। आगे पुराना कुंडा रेलवे फाटक बंद होने के कारण ट्रैक्टर खड़ा रहा जहां ग्रामीण लोग लाढ़ी डंडा लेकर ट्रैक्टर पर सवार लोगों को मारने पीटने लगे। मारपीट में अकरम व भाई असलम घायल हो गया पुलिस ने कुछ युवकों व ट्रैक्टर को कब्जे में लेकर कोतवाली ले गई, जहाँ कोतवाली के समीप भगवन तिराहे पर सामने दोनों पक्षो में फिर पिटाई शुरू कर दी जिससे अफरा तफरी मच गई। घायल अकरम को उपचार कराने के स्वरूपरानी प्रयागराज के लिए रेफर कर दिया है।

चोरी की घटना पर दी तहरीर, जांच मे जुटी पुलिस

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली के बनवारी लालूपुर निवासी कालिका प्रसाद ओझा ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि गुरूवार की रात अज्ञात चोरों ने खेत मे स्थित समर्सिबल के कमरे से दीवार काटकर स्टेब्लाइजर, स्टार्टर समेत कीमती सामान चुरा ले गये। चोरों ने कमरे मे लगे विद्युत के उपकरण व कीमती तार पर भी हाथ साफ कर दिया। पीड़ित ने शुक्रवार को घटना के बाबत पुलिस को तहरीर दी है। पुलिस का कहना है जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

तहसील गेट पर ताला जड़कर अधिवक्ताओं ने जताया विरोध

आरोपियों की गिरफ्तारी न होने पर भड़के वकील

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। अधिवक्ता की भूमिदृष्टि जमीन पर पड़ोसी द्वारा जबरन कब्जा किए जाने और आरोपियों द्वारा घायल किए जाने तथा पुलिस द्वारा मुकदमा करने के बावजूद भी आरोपियों की गिरफ्तारी न होने से नाराज पट्टी तहसील के अधिवक्ताओं ने शुक्रवार को तहसील गेट पर ताला जड़कर अपना विरोध जताया। बाद में क्षेत्राधिकारी पट्टी दिलीप सिंह के आने के बाद अधिवक्ताओं ने ताला खोला।

बता दें कि पट्टी कोतवाली क्षेत्र के महरूपुर गांव के रहने वाले पूर्व बार एसोसिएशन अध्यक्ष ओमप्रकाश सिंह की भूमिधरी जमीन पर आरोपीगढ़ जबरन कब्जा कर रहे थे। इसका विरोध जब अधिवक्ताओं ने किया तो आरोपी पड़ोसियों ने जमकर मारपीट की तथा 2 लोगों को घायल कर दिया। पीड़ित अधिवक्ता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया लेकिन गिरफ्तारी नहीं कर सके। इसी बात से नाराज बार एसोसिएशन तहसील पट्टी के अधिवक्ताओं ने शुक्रवार को दोपहर एक बजे तहसील गेट पर ताला जड़ दिया और उसके बाद क्षेत्राधिकारी पट्टी दिलीप सिंह के काफी समझाने बुझाने के बाद अधिवक्ता तहसील गेट का ताला खोले तब न्यायिक कार्य सुचारू रूप से प्रारंभ हो सका।

सीओ पट्टी से बात करते अधिवक्तागण

सांगीपुर घटना मे एसआईटी ने हटाई एफआईआर से धारा तीन सौ सात

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सांगीपुर ब्लाक मे हुए गरीब कल्याण मेले के दौरान कांग्रेसियो तथा भाजपाईयों के बीच हुए बवेले मे जेल गये एक और आरोपी को कोर्ट से जमानत मिलने पर रिहाई मिल गयी। वहीं घटना को लेकर सांसद संगमलाल गुप्ता समेत भाजपा कार्यकताओं व सांसद के गनर के द्वारा दर्ज करायी गई एफआईआर मे से एसआईटी जांच को धारा तीन सौ सात एवं दो सौ छियासी तथा एससीएसटी एक्ट का तथ्य न मिलने पर मुकदमें से इन धाराओं को हटा दिया गया है। घटना मे दर्ज एक एफआईआर मे नामजद आरोपी उदयपुर थाना के कुम्भीआइमा निवासी प्रभात ओझा को कोर्ट ने जमानत दे दी है। कोर्ट मे पुलिस द्वारा भेजी गई रिर्पोट मे सांगीपुर की घटना मे जानलेवा हमले के तहत धारा तीन सौ सात व तीन सौ आठ के साथ दहशत तथा दलित उत्पीड़न का तथ्य नही मिल सका है। वहीं सांसद संगमलाल गुप्ता के सुरक्षाकर्मी सुनील कुमार द्वारा लिखाई गई एफआईआर मे एससीएसटी का भी सबूत नही मिल सका।

व्यापार मण्डल के अध्यक्ष के यहां लाखों की चोरी

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नगर पंचायत मानिकपुर में ब्यापार मण्डल अध्यक्ष सहीर अहमद की कपड़े की सिलाई की दुकान में गुरुवार की रात लगभग 11 बजे रात को अज्ञात चोरों ने दुकान के पीछे लगे दरवाजे को तोड़कर अंदर घुसकर लाखो रुपये के कीमती कपड़े, चार बैटरा एक इन्वर्टर चुरा ले गए। घटना की जानकारी होने पर परिजनों के साथ बाजार में हड़कम्प मच गया। सूचना पर पहुंची मानिकपुर पुलिस ने घटना की जांच पड़ताल में जुट गई। उधर पीड़ित दुकानदार मालिक एवं ब्यापार मण्डल अध्यक्ष सहीर अहमद अपने ब्यापार मण्डल के सदस्यों पदाधिकारियों के साथ थाने पहुँचकर घटना की तहरीर देते हुए घटना का शीघ्र खुलासा करने की मांग किया तथा खुलासा न होने पर आन्दोलन करने की बात कही। चोरो के हौसले इतने बुलन्द थे कि दुकान के पीछे वारदात करने के पहले नाश्ता पानी किया, फिर घटना को अंजाम दिया। दुकान के पीछे स्मैक की पुड़िया व बिरयानी पड़ी मिली। घटना से ब्यापारियों में आक्रोश है।

अहंकार विनाश का दिया करता है समाज को असहनीय दर्दः प्रमोद तिवारी

पूर्व विधायक पं. रामअंजोर मिश्र की समारोहपूर्वक मनी जयंती

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय राम अंजोर मिश्र इण्टर कालेज मे शुक्रवार को आधा दर्जन से अधिक शिक्षण संस्थानों के संस्थापक एवं पूर्व विधायक पं. राम अंजोर मिश्र की जयंती समारोहपूर्वक मनाई गई। समारोह का शुभारंभ सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने पं. रामअंजोर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया। इसके बाद सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिषद के बैनरतले छात्र छात्राओं ने सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत की मनमोहक प्रस्तुति दी।

बतौर मुख्य अतिथि सीडब्ल्यूसी मेंबर एवं पूर्व राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा कि शिक्षा के जरिए अशिक्षा से उपजे अहंकार को मिटाकर ही भारत को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनाने का लक्ष्य हासिल हो सकता है। प्रमोद तिवारी ने कहा कि अशिक्षा का अहंकार विकास को बाधित करते हुए पीढ़ी को विनाश की पीड़ा का बोझ दिया करता है। श्री तिवारी ने पं. राम अंजोर मिश्र के बेटियों को शिक्षा के क्षेत्र मे गौरवशाली स्थान दिलाने की दूरदर्शी चिंतन की भी सराहना की। समारोह की अध्यक्षता करते हुए शिक्षक विधायक उमेश द्विवेदी ने किया। विशिष्ट अतिथि जिला कांग्रेस अध्यक्ष डा. लालजी त्रिपाठी रहे। संचालन शिक्षक जमुना प्रसाद मिश्र ने किया। बहुगुणा पीजी कालेज के प्राचार्य डा. शैलेन्द्र मिश्र एवं पहाड़पुर प्रधानाचार्य अखिलेश पाण्डेय तथा कमला नेहरू की प्रधानाचार्या गीता त्रिपाठी एवं पुनीत इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य बीएन तिवारी ने संयुक्त रूप से प्रमोद तिवारी तथा उमेश द्विवेदी एवं आईएएस योगेश मिश्र, प्रमुख अमित प्रताप सिंह, साहित्यकार विशालमूर्ति मिश्र, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी व ईओ सुभाषचंद्र सिंह को अंगवस्त्रम तथा प्रतीक चिन्ह देकर पं. राम अंजोर मिश्र स्मृति सम्मान से नवाजा। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संयोजन संगीतकार विनय शुक्ल ने किया। उप प्रधानाचार्य बीएन सिंह तथा शिक्षक राकेश त्रिपाठी व प्रधानांकिक अम्बिका प्रसाद मिश्र को संस्थापक दिवस समारोह के प्रबन्धन मे सराहनीय भूमिका मे देखा गया। इस मौके पर डा. शिवमूर्ति शास्त्री, डा. श्यामदुलारी सिंह, डा. राजकुमार पाण्डेय, दयाशंकर पाण्डेय, ज्ञानप्रकाश शुक्ल, डा. शिवशरण मिश्र, प्रकाशचंद्र मिश्र मौजूद रहे।

रामअंजोर मिश्र की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते प्रमोद तिवारी

खेल से स्वस्थ्य मस्तिष्क का होता है निमार्ण : संगम लाल

खेल स्पर्धा पंजीकरण की तिथि 15 तक बढ़ी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सांसद प्रतापगढ़ एवं राष्ट्रीय महामंत्री ओबीसी मोर्चा भाजपा संगम लाल गुप्ता ने सांसद खेल स्पर्धा के आयोजन की समीक्षा करते हुए कार्यक्रम के पंजीकरण की तिथियां 15 नवम्बर की शाम पांच बजे तक बढाने के निर्देश दिये।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की मंशा है कि खेलो इंडिया के मिशन में अधिक से अधिक युवाओं को शामिल कराकर उनके सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त किया जाय, इसीलिए सांसद खेल स्पर्धा का आयोजन करके प्रत्येक गांव सभाओं के युवाओं को उसमें सम्मिलित कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। सांसद ने कहा कि स्वस्थ्य ब्यक्ति में ही स्वस्थ्य मस्तिष्क का निर्माण होता है और किसी युवा के सर्वांगीण विकास हेतु खेल में सहभागी होना नितांत उपयोगी सिद्ध होता है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रतापगढ़ संसदीय क्षेत्र के सभी विद्यालयों के अंडर 17 वर्ष आयु वर्ग एवं 17 से 21 वर्ग के बालक बालिकाओं की टीम को सम्मिलित कराने हेतु सभी विद्यालयों एवं ग्रामों को शामिल कराने का भरसक प्रयास किया जाय। उन्होंने कहा कि खेल में आसानी से सहभागी बनने हेतु विकास खण्ड मुख्यालयों पर हो रहे पंजीकरण की व्यवस्था के साथ-साथ ऑनलाइन पंजीकरण की सुविधा का भी लाभ उठाया जा सकता है। बैठक में खण्ड विकास अधिकारी शिवगढ़ जी डी शुक्ला, सर्वेन्द्र उर्फ डब्बू दुबे, अनिल सिंह, बलराम बिंद, सुरेंद्र मिश्र मोहथरी, नितिन तिवारी गौरा आदि उपस्थित रहे।

पड़ोसी ने घर का लिंटर गिराया, रिपोर्ट दर्ज

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगज थाना क्षेत्र के मददुपुर गाव में गुरुवार की रात लगभग 9 बजे दो दर्जन दबंगो ने लिंटर पड़े कमरे को लोहे के उपकरणों से लिंटर को गिरा दिया। जब तक कमरा गिर नही गया तब तक तांडव करते रहे। पीड़ित मुकेश कुमार सरोज पुत्र मैकूलाल सरोज ने पुलिस को दिए गए तहरीर में आरोप लगाया है कि छह माह पहले तीन कमरे बनाये थे जिसको लेकर घर के पड़ोसी विरोध कर रहे थें जिसके चलते पड़ोसी अपने साथियों के साथ मेरे कमरे का लिंटर पड़ा घर को लोहे के औजारों से धराशाई कर दिया। विरोध करने पर मुझे व मेरे घर वालो को मारा पीटा। इस घटना क्रम में नवाबगज पुलिस ने मुकेश की तहरीर पर दोनों आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

नवाबगंज पुलिस हुई सक्रिय

परियावां। जनपद में हो रही लूट खसोट को देखते हुए पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देश पर नवाबगंज पुलिस सक्रिय हो गई जो थाना क्षेत्र के प्रमुख बाजार व सरकारी बैंक, पेट्रोल पम्प ,मिनी बैंक की सुरक्षा ब्यवस्था का जायजा लिया। थाना प्रभारी रुकुमपाल सिंह ने बताया कि लूट की घटना को देखते हुए क्षेत्र के पेट्रोल पम्प व बाजारों में लोगो को जागरूक किया।

स्टेशन अधीक्षक एसके यादव हटे, एसपी बने नये स्टेशन अधीक्षक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। लखनऊ में डीआरएम और प्रबंधक परिचालन के दफ्तर में हंगामा करने गाली गलौज करने, जान से मारने की धमकी के आरोप में नौकरी से डिसमिस किये गये डिप्टी एसएस इबरार मामले के बाद शुक्रवार को इसकी गाज स्टेशन अधीक्षक एसके यादव पर गिरी। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार सुबह टीआई राजेश ने इंचार्ज एसएस शमीम को कहा कि सीनियर डीओएम का आदेश है कि डिप्टी एसएस एसपी पांडेय स्टेशन अधीक्षक का कार्य भार ग्रहण करेंगे। फिलहाल पांडेय अभी सिक पर हैं। लौटने के बाद एसएस की कुर्सी संभालेंगे।

तीन जुआरी गिरफ्तार, पाच हजार रुपये बरामद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना रानीगंज से उ0नि0 राजेश कुमार यादव मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के ग्राम खतनपुर बाग के पास से तीन व्यक्तियों को ताश के पत्तों से हार-जीत की बाजी लगाकर जुआ खेलते हुये गिरफ्तार किया गया, जबकि एक अन्य व्यक्ति मौके से फरार हो गया। गिरफ्तार अभियुक्तों के कब्जे से 52 अदद ताश के पत्ते व कुल 5260 रुपये नकद बरामद किया गया। इस सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 615/21 धारा 13 जुआ अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया।

खबर संक्षेप

कोरोना के दृष्टिगत की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। जिले में लॉकडाउन के दृष्टिगत सरकार द्वारा निर्गत निदेशी के अनुपालन के क्रम में पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में जिले स्तर पर विभिन्न थानों द्वारा सघन चेकिंग की गई चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिसमें 258 वाहनों का ई चालान किया गया व 7 वाहनों का चालान कर 7000 रुपए शुल्क वसूल किया गया व बिना मास्क लगाए घूम रहे 27 अभियुक्तो से 3700 रुपए जुमार्ना वसूला गया।

वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना करारी पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त संजय सिंह पुत्र राजेन्द्र सिंह निवासी शांतिनगर थाना कौधियारा जनपद प्रयागराज को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है।

बैंक सुरक्षा व्यवस्था को किया चेक

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में जिले की पुलिस बल द्वारा थाना कौशाम्बी थाना चरवा थाना पिपरी क्षेत्र में स्थित बैंको की सुरक्षा व्यवस्थाओ को चेक किया गया व उसके आस पास संदिग्द वाहनों व व्यक्तियो को चेक किया गया।

पांचवें दिन भी धरना प्रदर्शन कर आंगनवाड़ी संघ ने किया विरोध

अखंड भारत संदेश

विभिन्न मांगों को लेकर जनपद मुख्यालय ब्लॉक परिसर में आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों ने बुलंद की आवाज, आंगनवाडी कार्यकत्रियों और मिनी आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को पन्द्रह हजार रुपये महीने सहायिका को दस हजार रुपए महीना मानदेय की मांग

आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को संबोधित करती माया सिंह

कौशांबी। अपनी विभिन्न मांगों को लेकर महिला आंगनवाड़ी कर्मचारी संघ बीते 8 नवंबर से लगातार धरना प्रदर्शन आंदोलन सभा कर योगी सरकार का ध्यान आकृष्ट करा रहा है लेकिन योगी सरकार और उनके नुमाइंदे आंगनवाड़ी संघ के धरना प्रदर्शन के बाद भी नहीं जाग रहे हैं जिससे आंगनवाड़ी संघ का आक्रोश दिनों दिन बढ़ता जा रहा है शुक्रवार को फिर जनपद मुख्यालय मंझनपुर के ब्लॉक परिसर में आंगनवाड़ी कार्यकत्री सहायिकाएं उपस्थित हुई और जमकर नारेबाजी करते हुए सरकार के खिलाफ भड़ास निकाला है

धरना प्रदर्शन का नेतृत्व प्रदेश कार्यवाहक अध्यक्ष माया सिंह ने करते हुए कहा कि प्रदेश की पौने चार लाख आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों और सहायिकाओं की मांगे सरकार द्वारा नहीं माना जा रहा है उन्होंने कहा कि सरकार ने भी संगठन द्वारा विभिन्न समस्याओं के संबंध में पूर्व में प्रेषित पत्र पर इस सरकार ने निर्णय नहीं लिया तो वह सरकार की ईट से ईंट बजा देंगे उपस्थित आंगनबाड़ियों को संबोधित करते हुए मायासिंह ने कहा कि सरकार ने पूर्व में आश्वासन दिया था लेकिन उसने उसके बाद किसी प्रकार की वार्ता और विचार नहीं किया है जिससे आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों और सहायिकाओं की समस्या का समाधान नहीं हो सका है। उन्होंने उपस्थित आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को संबोधित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार यह घोषणा करें कि आंगनवाडी कार्यकत्रियों और मिनी आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को पन्द्रह हजार रुपये महीने सरकार द्वारा मानदेय दिया जाएगा उन्होंने कहा कि सहायिका को दस हजार रुपए महीना मानदेय दिया जाना सरकार निश्चित करे इस मौके पर बोलते हुए माया सिंह ने कहा कि किसी भी प्रकार की ड्यूटी के दौरान मृत आंगनवाड़ी कर्मियों को कम से कम दस लाख रुपए का मुआवजा दिया जाए उनके परिवार की बेटी बहू की सीधी भर्ती किए जाने का नियम बनाया जाए विभिन्न मांगों को लेकर आंगनवाड़ी संघ ने धरना प्रदर्शन कर अपनी आवाज बुलंद की और जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा है इस मौके पर सुषमा सिंह सुनीता देवी अनीता देवी सुधा कुशवाहा संजना दीक्षित बबीता देवी अनीता देवी सोफिया बेगम रेनू प्रजापति प्रेमा देवी सुगरा खातून नीलम पांडेय सहित सैकड़ों आंगनबाड़ी कार्यकत्रिया मौजूद रहीं।

न्यूज झरोखा

5 वर्ष बाद आरोपी युवक को 10 साल की हुई सजा

फर्जी मुकदमा दर्ज होने के बाद न्याय के लिए दौड़ रहे पिता की सदमे के चलते हार्टअटैक से हो चुकी है मौत

कौशाम्बी। मोहब्बतपुर पाइंसा थाना क्षेत्र के तुलसीपुर गांव में राजनैतिक शिकार के चलते बृजेश दुबे पुत्र कृष्ण कुमार दुबे के विरुद्ध वर्ष 2016 में एक दलित बालिका ने पाक्सो एक्ट का मुकदमा दर्ज कराया था इस मुकदमे की सुनवाई के दौरान आरोपी बृजेश दुबे को दोषी मानते हुए अदालत ने 10 वर्ष की सजा सुनाई है बेटे पर फर्जी मुकदमा दर्ज होने की जानकारी मिलने के बाद न्याय के लिए अधिकारियों की चौखट पर उसका पिता कृष्ण कुमार दुबे दौड़ रहा था लेकिन न्याय नहीं मिल सका जिस पर हार्ट अटैक का सदमा आने से पिता की मौत हो चुकी है अभियुक्त बृजेश कुमार दुबे पुत्र कृष्ण कुमार दुबे उर्फ बबूली निवासी तुलसीपुर थाना मोहब्बतपुर पाइंसा को न्यायालय एडीजे द्वारा गंभीर एंव जघन्य अपराधों में दोषी मानते हुए अभियुक्त को 10 वर्ष की कारावास की सजा व 11 हजार रुपए के अर्थ दंड से दंडित किया गया अर्थ दंड न देने पर चार माह की अतिरिक्त कारावास की सजा सुनाई गई।

पुलिस अधीक्षक ने किया पुलिस लाइन का निरीक्षण

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक राधेश्याम विश्वकर्मा द्वारा पुलिस लाइन में शुक्रवार को अचानक पुलिस लाइन पहुच गए जहाँ उन्होंने परेड में सलामी ली तथा परेड में उपस्थित अधिकारी कर्मचारीगणों का निरीक्षण किया व ट्रेनिंग कर रहे रिक्रूट आरक्षियों का भी निरीक्षण किया साथ ही ट्रेनिंग संबंधी आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए गए व पुलिसकर्मियों को कोरोना से बचाव के लिए मास्क लगाने व सेनेटाइजर का प्रयोग किये जाने के साथ साथ उचित दूरी बनाए रखने के लिए कहा है

अभिलेखों में हेराफेरी का दलित की जमीन पर कब्जा

कौशांबी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के बरीपुर गांव निवासी अर्जुन पासी पुत्र बुद्धू पासी ने जिला अधिकारी को शिकायती पत्र देकर गांव के मोहन लाल सोहनलाल पुत्र गण राम गोपाल पटेल पर आरोप लगाया है कि उसकी भूमि धरी आराजी नंबर 48 में दबंगों ने तहसील प्रशासन की सांठगांठ से जबरिया अपना नाम दर्ज करा लिया है और उसकी जमीन पर दबंग जबरिया कब्जा कर रहे हैं शिकायतकर्ता का कहना है कि उसने किसी प्रकार का बैनामा नहीं किया है और फजीर्वाड़ा कर मोहनलाल सोहनलाल आदि ने उसकी जमीन पर कब्जा की नियत बनाई है शिकायतकर्ता ने जिलाधिकारी को शिकायती पत्र देकर फजीर्वाड़े का विवरण विस्तार से बताते हुए अवैध कब्जा करने वाले दबंगों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की मांग की है।

नाबालिग बालिका को भगाने वाले युवक हुआ गिरफ्तार

करारी कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के टेन शाह आलमा बाद गांव के मजरा अर्जलीपुर की नाबालिग बालिका उमा देवी उम्र 13 वर्ष पुत्री रामचंद्र लोधी को गांव का राजू पुत्र फूलचंद भगा ले गया था इस मामले में मंझनपुर कोतवाली में पंजीकृत मुकदमा अपराध संख्या 560/21 धारा 363/366 आईपीसी से संबंधित अभियुक्त राजू पुत्र फूलचंद निवासी मडुकी टेनशाह आलमाबाद के नाम पंजीकृत किया गया था मामले में आरोपी को पुलिस तलाश कर रही थी गुरुवार को ओसा चौराहे से आरोपी को पुलिस चौकी टेवा के इंचार्ज अरुण कुमार ने अपने हमराहियो के साथ गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया है जिस बालिका के गायब होने का मामला बताया जाता है उस बालिका की बरामदगी के मामले में पुलिस कुछ नहीं बता पा रही है।

जनसम्पर्क के साथ मतदाता सूची पर बसपा कर रही काम : नीतू

अखंड भारत संदेश

बसपा नेता डॉ नीतू कनौजिया ने कहा कि एक-एक मतदाता पर होगी बसपा की निगाह

मतदाता सूची का मिलान करती बसपा नेत्री डॉ नीतू कनौजिया

कौशाम्बी। बहुजन समाज पार्टी आगामी उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव 2022 को फतह करने के लिए जमीन तैयार करने में कोई कोर कसर नहीं छोडना चाह रही है। पार्टी मुखिया मायावती के निर्देश पर मंझनपुर से बसपा प्रत्याशी डॉ. नीतू कनौजिया गांवों में जनसम्पर्क के साथ ही मतदाता सूची पर भी अपनी पैनी निगाह लगाए हुई हैं। बसपा नेत्री डॉ नीतू कनौजिया के मुताबिक प्रत्येक मतदाता पर इस बार बसपा की पैनी निगाह होगी। मतदाता सूची से कोई मतदाता छूटने न पाए इसके लिए वह खुद गांवों में मतदाता सूची के मुताबिक नामों का मिलान कराने में जुटी हैं।

बसपा नेत्री डॉ. नीतू कनौजिया शुक्रवार को मंझनपुर विधान सभा के पूरबशरीरा, पश्चिम शरीरा, बैरमपुर, कोरीपुर, दुर्गा का डेरा, टेवा, महेवाघाट, शाहपुर सहित तकरीबन एक दर्जन से अधिक गांवों में जनसम्पर्क के अलावा मतदाता सूची के मुताबिक नामों का भी मिलान कराया। इतना ही नहीं युवा मतदाता जो अपने मताधिकार के लिए उम्र को पा चुके हैं ऐसे मतदाताओं का सूची में नाम जोडवाने के लिए भी वह और उनकी टीम के सदस्य काम कर रहे हैं। यह कह लिया जाए कि बसपा नेत्री की निगाह एक-एक मतदाता पर है तो यह गलत नहीं होगा बसपा नेत्री का कहना है कि बहुजन समाज पार्टी हमेशा विस चुनाव में जिला जीत की भूमिका में रही है। 2017 के विधान सभा चुनाव में जो बसपा के मतदाता बहकवाए में आ गए थे उन्हें इस बार पुनः संजोने के लिए बसपा पूरी तरह काम कर रही है। भाजपा की वर्तमान सरकार के कार्यकाल में दलित, पिछडा व अल्पसंख्क किस तरह घुटन भरा जीवन व्यतीत कर रहा है शायद वह कभी नहीं भूल पाएगा और 2022 में यह मतदाता भाजपा को करारा जवाब देते हुए बसपा सुप्रिमो बहन मायावती को पुनः प्रदेश की सत्ता में वापस लाएगा। इस मौके पर मानिक चंद्र, संदीप गौतम, श्यामलाल गौतम, प्रदीप गौतम, राजेंद्र सोनकर, सुनील पटेल, दयाशंकर, सुधा, बंशीलाल के अलावा गांव की तमाम जनता अपने समर्थन के साथ बसपा नेत्री के साथ मौजूद रही।

पर्यावरण प्रमाण पत्र के बिना तीन वर्ष से चल रहे ईट भट्ठे

आखिर जिले में कानून के पालन पर यह दोहरा मापदंड क्यों, उच्चतम न्यायालय का निर्देश का पालन ईट भट्ठा संचालक करेंगे यह बड़ा सवाल खड़ा हो रहा है

कौशांबी। सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पालन कराना हो या हाई कोर्ट के आदेश का पालन कराना हो कौशांबी में न्यायालय के आदेश का पालन कराना बड़ा कठिन काम लगता है बीते दिनों पर्यावरण संतुलन को देखते हुए उच्चतम न्यायालय ने ईट भट्ठों के संचालन में तमाम नियम बनाते हुए उन्हें पर्यावरण अनापत्ति प्रमाण पत्र लेना आवश्यक कर दिया उच्चतम न्यायालय ने इस बात का निर्देश राज्य सरकार को दिया कि ईट भट्ठे के संचालन में पर्यावरण का संतुलन बिगड़ने ना पाए और पर्यावरण के संतुलन बने रहने पर ईंट भट्ठे का संचालन कराया जाए और राज्य सरकार ने सभी जिलाधिकारियों को निर्देश भेज कर पर्यावरण अनापत्ति प्रमाण पत्र के बिना ईट भट्टे के संचालन में पूर्ण रोक लगाने का निर्देश जारी किया लेकिन 3 वर्षों से जिला अधिकारी का यह आदेश रद्दी की टोकरी में पड़ा है और पालन नहीं हो सका मनमानी कर्मचारी अधिकारी ईट भट्ठा संचालको से अवैध धनादोहन कर फर्जी तरीके से बिना प्रमाण पत्र के ईंट भट्ठों का संचालन बेखौफ तरीके से करा रहे हैं जिनसे पर्यावरण खराब हो रहा है। उच्चतम न्यायालय के निर्देश पर जिला अधिकारी कार्यालय ने खनन विभाग और जिला पंचायत को पत्र जारी कर यह निर्देश दिया था कि पर्यावरण के अनापत्ति प्रमाण पत्र के बगैर ईट भट्ठा संचालन का लाइसेंस अथॉरिटी नही जारी की जाए लेकिन तीन वर्ष से अधिक का समय बीत चुके हैं जिले के 90 से अधिक ईट भट्ठों के पर्यावरण अनापत्ति प्रमाण पत्र नहीं बन सके लेकिन मोटी रकम लेकर जिला पंचायत और खनन विभाग अवैध तरीकों से ईट भट्ठों का संचालन करा रहा है। जिले में खेतों की पराली जलाने में प्रदूषण बढ़ाने की बात कह कर किसानों से जुमार्ना वसूलने वाला प्रशासन ईट भट्ठा संचालकों के मोटी रकम के आगे नतमस्तक दिखाई पड़ रहा है।

आम जनमानस की समस्याओं को जिला पंचायत सदस्य ने सुना

अखंड भारत संदेश

जनसुनवाई करते जिला पंचायत सदस्य योगेश साहू

कौशांबी। राजनीति के बदलते परिवेश में भी जिला पंचायत सदस्य मीनू योगेश साहू का आम जनता की सेवा करने का जज्बा कम नहीं हुआ है लगातार वह अपने क्षेत्र में आम जनता से संपर्क कर उनकी समस्याओं के समाधान का प्रयास करती रहती हैं आम जनता के दुख दर्द में शामिल मीनू योगेश साहू के पति योगेश साहू भी आम जनता के दुख दर्द पर हमेशा खड़े दिखाई देते हैं उनके जीवन का आधा से अधिक समय गरीबों पीड़ितों मजलुमो की सेवा में बीत रहा है इसी क्रम में शुक्रवार को काजीपुर स्थित कार्यालय में पहुंचे पीड़ित मजलूम लोगों के दुख दर्द को उन्होंने सुना और उनके समस्याओं के समाधान के लिए अधिकारियों को पत्र भेजकर समस्या समाधान करने का अनुरोध किया लगातार आम जनता से मुलाकात करने वाले मीनू योगेश साहू के सरल स्वभाव के चलते इलाके की जनता उनकी मुरीद हो रही है जनता के बीच गहरी पैठ रखने वाले मीनू योगेश साहू के सरल स्वभाव के चलते जनता का उनसे संपर्क बढ़ता जा रहा है जिससे विपक्षियों में बेचैनी बढ़ गई है जन सुनवाई के दौरान दर्जनों लोग मौजूद रहे।

साइबर अपराध से बचने के लिए की गोष्ठी

कौशाम्बी। जिले में साइबर अपराध से बचने व लोगो को जागरूक करने के लिए पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा पुलिस कार्यालय के दुगार्भाभी सभागार में साइबर जागरूकता अभियान के तहत जिले के एलडीएम व सभी बैंकों के शाखा प्रबंधको के साथ साइबर जागरूकता गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें साइबर अपराधो को अंकुश लगाने जैसे एटीएम क्लोनिंग ओटीपी यूपीआई फ्राड एटीएम एक्सचेंज बारकोड लिंक व अन्य साइबर अपराध से बचने के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की गई इसमें आमजनता को साइबर अपराध से कैसे बचाया जाए व जागरूक किया जाए उसके बारे में विचार विमर्श किया गया।

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में निकाली गयी प्रभात फेरी

अखंड भारत संदेश

अमृत महोत्सव के दौरान प्रभातफेरी निकालने का दृश्य

कौशाम्बी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में जनपद मुख्यालय की सड़कों में अधिवक्ताओं ने प्रभात फेरी निकाली है अमृत महोत्सव की प्रभात फेरी का शुभारम्भ जनपद न्यायाधीश अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा हरी झण्डी दिखाकर किया गया प्रभात फेरी न्यायालय परिसर से होते हुए मंझनपुर चौराहे पर पहुंची और विधिक साक्षरता के बारे में लोगों को जागरूक किया है इस मौके पर मॉडल बार एसोशिएशन के अध्यक्ष मनुदेव त्रिपाठी महामंत्री तुषार तिवारी सहित मॉडल बार एसोशिएशन के समस्त अधिवक्ताग जनपद न्यायालय परिसर से मंझनपुर चौराहे तक प्रथात फेरी में शामिल होकर विधिक साक्षरता पर चर्चा कर लोगो को जागरूक कर रहे थे इस मौके पर जनपद न्यायाधीश अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ब्रजेश कुमार मिश्र एवं समस्त न्यायिक अधिकारीगण उपस्थित रहे।

धान खरीद केंद्र में किसान नेता की अधिकारियों से हुई नोकझोंक

अखंड भारत संदेश

धान खरीद केंद्र में अधिकारियों से नोकझोंक करते किसान नेता अजय सोनी

कौशाम्बी। किसानों की धान खरीदी न होने की लगातार शिकायत मिलने पर किसान नेता अजय सोनी शुक्रवार को ओसा मण्डी पहुँच गए किसानों के धान क्रय करने में हो रही हीलाहवाली पर मौके पर मौजूद जिम्मेदारों से जमकर उनका बात विवाद हुआ इसी के साथ जिला खाद्य एवं विपणन अधिकारी अंशुमाली शंकर को मौके की जानकारी दी गई जिस पर केंद्र की स्थिति की जानकारी मिलने पर मौके पर डिप्टी आरएमओ पहुंचे अजय सोनी ने किसानों के धान क्रय न करने की शिकायत की और कहा कि सभी किसानों का धान तत्काल क्रय किया जाए नहीं तो पूरे जिले में आंदोलन किया जाएगा। किसान नेता अजय सोनी का कहना है कि पूरे जनपद में धान क्रय केंद्रों पर किसानों से धान नहीं क्रय किया जा रहा है और किसान रोज दर रोज क्रय केंद्रों पर धान बिक्री हेतु परेशान हो रहे हैं। इसकी शिकायत कई किसानों ने समर्थ किसान पार्टी के नेता एवं जिला पंचायत सदस्य अजय सोनी से की थी।

कौशांबी के युवक की दिल्ली में मौत

कौशाम्बी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के पश्चिम शरीरा गांव का एक युवक दिल्ली में प्राइवेट नौकरी करके परिवार का भरण पोषण करता था दिल्ली में ही स्वास्थ्य बिगड़ जाने से इलाज के दौरान युवक की मौत हो गई है शुक्रवार को युवक की लाश गांव पहुंची है जहां उसका अंतिम संस्कार किया गया है अंतिम संस्कार में विधायक भी शामिल हुए हैं। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के पश्चिम शरीरा गांव निवासी लवकुश दिवाकर पुत्र बाबूलाल परिवार के जीविकोपार्जन के लिए दिल्ली में नौकरी करते थे गुरुवार को अचानक उनकी तबीयत खराब हो गई वहां उनके साथियों ने उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया जहां उसकी मौत दिल्ली में हो गई। शुक्रवार को उसका शव पैत्रिक गांव पश्चिम शरीरा पंहुचा तो घर परिवार में कोहराम मच गया इसकी सूचना मंझनपुर विधायक लाल बहादुर को मिली तो विधायक भी मौके पर पहुँचे और परिजनों को ढांढस बंधाया साथ ही सरकारी सहायता दिलाने का अश्वासन दिया। इस मौके पर मंझनपुर ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधी हुबलाल दिवाकर भाष्कर सिंह पूर्व प्रधान पवन कुमार मिश्रा,हनुमान सहित तमाम लोग मौजूद रहें।

नगर पंचायत करारी की सफाई व्यवस्था धड़ाम मच्छर व गंदगी से परेशान नगर वासी

अखंड भारत संदेश

विकास योजनाओं में भ्रष्टाचार धांधली के अलावा सफाई कर्मियों के वेतन में भी हो रही अवैध कटौती, तानाशाह अधिशासी अधिकारी के कौशांबी से गहरे लगाव के पीछे क्या है कारण

करारी कौशांबी। नगर पंचायत करारी का भी अजीबोगरीब हाल है नगर के विकास कराए जाने के बहाने बार-बार भ्रष्टाचार और सरकारी धन लूट लिए जाने का आरोप लगने के बाद अब तो सफाई कर्मचारी भी अधिशासी अधिकारी पर बड़ा आरोप लगा रहे हैं बीते कई दिनों से नगर के वार्ड नंबर 12 चमनगंज सहित कई मोहल्ले में सफाई नहीं हो रही है जिससे सड़कों पटरियों गलियों में कूड़े का ढेर लगा है गंदगी से नगर बजबजा रहा है दुर्गंध से नगरवासी परेशान हैं गंदगी बढ़ जाने से मच्छरों का प्रकोप नगर में बढ़ गया है जिससे डेंगू जैसे गंभीर मर्ज होने की संभावना से नगरवासी परेशान हैं। नगर पंचायत करारी में एक तरफ नगर में सफाई व्यवस्था पूरी तरह से चौपट है तो दूसरी तरफ मच्छर के खात्मे के लिए दवाओं का छिड़काव नहीं किया जा रहा है कभी-कभी डीजल के धुए वातावरण में फैला कर मच्छर खात्मे की दवाई की रकम सरकारी खजाने से नगर पंचायत के जिम्मेदार डकार रहे हैं जिससे नगर पंचायत में व्याप्त दुर्दशा से आम जनमानस परेशान है सफाई कर्मियों का आरोप है कि रविवार के दिन उनके वेतन की कटौती अधिषासी अधिकारी कर लेती हैं सफाई कर्मियों का कहना है कि उन्हें रविवार के दिन का वेतन नगर पंचायत द्वारा नहीं दिया जाता है जिससे करारी नगर पंचायत में पूरी तरह से रविवार के दिन सफाई अभियान खत्म कर दिया जाता है रविवार को कस्बे की सफाई ना होने से गली चौराहे कस्बे बाजार में गंदगी का अंबार लगा रहता है कस्बे के रावणा मैदान के पास काली माता के मंदिर के पास भी गंदगी का अंबार लगा है सफाई नहीं हो रही है आम जनता बार-बार सफाई कराए जाने की मांग अधिषासी अधिकारी से कर रही है लेकिन वहां के अधिकारी से लेकर कर्मचारी मनमानी पर उतारू है। बताया जाता है कि अधिषासी अधिकारी करारी को पूर्व में शासन ने गैर जनपद स्थानांतरित कर दिया था लेकिन कौशांबी से इनका गहरा लगाव था जिससे इनका कौशांबी की धरती से मोहभंग नहीं हो सका है और इसी मोह के चलते शासन से दोबारा इनकी पोस्टिंग कौशांबी में हो गई है आखिर कौशांबी से इनका क्या मोह है जिससे कौशांबी से स्थानांतरण होने के बाद अधिशासी अधिकारी ने कौशांबी जिले के नगर पंचायत करारी में दोबारा पोस्टिंग कराने का प्रयास किया है इनके लगाव का यह कारनामा बड़ी चर्चा और जांच का विषय है।

सम्पादकीय

देश को कई नाइका चाहिए

वैसे, भारत में स्टार्टअप्स का कुल वैल्यूएशन 168 अरब डॉलर के करीब है और इस लिहाज से अमेरिका और चीन के बाद भारत में स्टार्टअप्स का तीसरा सबसे बड़ा ईकोसिस्टम है। इसके साथ यह भी समझना होगा कि किसी समाज को कई तरह के बिजनेस की जरूरत पड़ती है। कॉस्मेटिक्स और फैशन प्रॉडक्ट्स प्लैटफॉर्म नाइका के आईपीओ जिन लोगों को मिले थे, लिस्टिंग के पहले ही दिन उन्हें इस पर 100 प्रतिशत से कुछ कम का रिटर्न मिला। बाजार ने कंपनी का वैल्यूएशन 14 अरब डॉलर के करीब लगाया। इससे पहले जोमैटो की भी बढ़िया लिस्टिंग हुई थी और जल्द ही पेटीएम भी शेयर बाजार में आने वाली है। जोमैटो के बाद नाइका की शानदार लिस्टिंग से देसी स्टार्टअप्स के लिए नए दौर का आगाज हुआ है। पहले यह आशंका रहती थी कि लंबे वक्त तक घाटे में चलने वाली इन कंपनियों को भारत में सही वैल्यूएशन मिलेगा या नहीं असल में इन कंपनियों का वैल्यूएशन पारंपरिक खांचे के हिसाब से बहुत ऊंचा दिखता है। इसी वजह से पहले स्टार्टअप्स के संस्थापक विदेशी बाजारों में लिस्टिंग के बारे में सोचते थे, जहां पहले से ऐसी कंपनियां लिस्टेड थीं। ऐसे में जोमैटो और नाइका की कामयाब लिस्टिंग से देश में दूसरी स्टार्टअप्स के लिए पैसा जुटाना आसान हो जाएगा। दूसरे, इनसे निवेशकों को भी इंटरनेट और टेक्नलॉजी आधारित कंपनियों से पैसा बनाने का मौका मिलेगा, जैसे कि अमेरिका में गूगल की पैरेंट कंपनी अल्फाबेट इंक, एमेजॉन और फेसबुक (अब मेटा) के निवेशकों को मिला है।

बेशक इसके लिए भारतीय स्टार्टअप्स को इन कंपनियों की तरह ग्रोथ का वादा पूरा करना होगा। निवेशकों को भी सावधान रहना होगा क्योंकि स्टार्टअप्स के नाकाम होने की दर भी ज्यादा होती है। वैसे, भारतीय स्टार्टअप्स को अभी बहुत लंबा सफर तय करना है। देश में करीब 50 हजार स्टार्टअप्स हैं, जिनमें से 72 का वैल्यूएशन ही नवंबर 2021 तक एक अरब डॉलर से अधिक था। जिन स्टार्टअप्स का वैल्यूएशन इतना होता है, उसे यूनिकॉर्न कहा जाता है। अगर समूची दुनिया के यूनिकॉर्न के मुकाबले देखें तो यह संख्या 8-9 प्रतिशत ही है। वैसे, भारत में स्टार्टअप्स का कुल वैल्यूएशन 168 अरब डॉलर के करीब है और इस लिहाज से अमेरिका और चीन के बाद भारत में स्टार्टअप्स का तीसरा सबसे बड़ा ईकोसिस्टम है। इसके साथ यह भी समझना होगा कि किसी समाज को कई तरह के बिजनेस की जरूरत पड़ती है। हो सकता है कि उनमें जोमैटो जितने विस्तार की संभावना न हो। जैसे, देश में वाजिब दरों पर बेहतर हेल्थकेयर सर्विसेज की जरूरत है। क्या ऐसी कंपनियां यूनिकॉर्न बन सकती हैं ऐसा हो सकता है, लेकिन इसमें काफी वक्त लग सकता है। इसलिए इन कंपनियों को भी निवेशकों के सपोर्ट की जरूरत पड़ेगी। शायद, समाज की जरूरी समस्याओं को हल करने वाली ऐसी कंपनियों को सरकार से भी मदद की जरूरत पड़े। सरकार को इस बात पर भी नजर बनाए रखनी होगी कि देश का स्टार्टअप सिस्टम ना सिर्फ मजबूत बना रहे बल्कि आगे चलकर विश्व में उसकी रैंकिंग और बेहतर हो। इससे जहां कई समस्याओं को सुलझाने में मदद मिलेगी वहीं देश की इकॉनमी को भी फायदा होगा।

रंग लाएंगे राजभाषा को राष्ट्रभाषा और विश्वभाषा बनाने की दिशा में चल रहे प्रयास

प्रो. संजय द्विवेदी

केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करने हेतु भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए कदमों के परिणामस्वरूप कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करना अधिक आसान एवं सुविधाजनक हो गया है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है, बल्कि हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति और संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है, जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है। आज देश में तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ अंग्रेजी पूरे देश पर हावी होती जा रही है। देश की राजभाषा हिंदी होने के बावजूद आज हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। हिंदी जानते हुए भी लोग हिंदी में बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकने लगे हैं। इसलिए भारत सरकार का प्रयास है कि हिंदी के प्रचलन के लिए उचित माहौल तैयार किया जा सके। राजभाषा हिंदी के विकास के लिए खासतौर से भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग का गठन किया गया है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो। इसी क्रम में आगामी 13-14 नवंबर को वाराणसी में राजभाषा विभाग द्वारा दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सम्मेलन के मुख्य अतिथि केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह होंगे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ विशिष्ट अतिथि के तौर पर कार्यक्रम में शामिल होंगे। इस सम्मेलन में हिंदी से जुड़े विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण सत्रों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें देशभर के हिंदी से जुड़े विद्वान हिस्सा लेंगे।

केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करने हेतु भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए कदमों के परिणामस्वरूप कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करना अधिक आसान एवं सुविधाजनक हो गया है। राजभाषा विभाग द्वारा वेब आधारित सूचना प्रबंधन प्रणाली विकसित की गई है, जिससे भारत सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट तथा अन्य रिपोर्टें राजभाषा विभाग को त्वरित गति से भिजवाना आसान हो गया है। सभी मंत्रालयों और विभागों ने अपनी वेबसाइटें हिंदी में भी तैयार कर ली हैं। सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों द्वारा संचालित जन कल्याण की विभिन्न योजनाओं की जानकारी आम नागरिकों को हिंदी में मिलने से गरीब, पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोग भी लाभान्वित होते हुए देश की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं। देश की स्वतंत्रता से लेकर हिंदी ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा ह्यविश्व हिंदी सम्मेलनह्न और अन्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा प्रत्येक वर्ष सरकार द्वारा ह्यप्रवासी भारतीय दिवसह्न मनाया जाता है, जिसमें विश्व भर में रहने वाले प्रवासी भारतीय भाग लेते हैं। विदेशों में रह रहे प्रवासी भारतीयों की उपलब्धियों के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम से भारतीय मूल्यों का विश्व में और अधिक विस्तार हो रहा है। विश्वभर में करोड़ों की संख्या में भारतीय समुदाय के लोग एक संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को एक नई पहचान मिली है। भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिंदी को ही जाता है। आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिंदी की गूंज सुनाई देने लगी है।

हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिंदी के महत्त्व को गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था, ह्वभारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदीह्न। हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियां इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह खुशी की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज पूरी दुनिया में 260 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पढ़ाई जा रही है। ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिंदी में लिखी जा रही हैं। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के तकनीकी के युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिंदी में काम को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए यह अनिवार्य है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञान से संबंधित साहित्य का सरल अनुवाद किया जाए। इसके लिए राजभाषा विभाग ने सरल हिंदी शब्दावली भी तैयार की है। राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिंदी में ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे हमारे विद्यार्थियों को ज्ञान-विज्ञान संबंधी पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध होंगी। हिंदी भाषा के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें, इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरूरी है। भाषा वही जीवित रहती है, जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिंदी है। इसलिए इसको एक-दूसरे में प्रचारित करना चाहिये। हिंदी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी। मुझे पूरा विश्वास है कि अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के माध्यम से हम हिंदी के संपर्क भाषा और राजभाषा, दोनों रूपों की तरक्की में बेहतर योगदान कर पाएंगे।

अयोध्या में हिन्दुत्व का सूर्योदय

सुरेश तिवारी

पिछले 800 सालों से इस्लामी विस्तारवादियों ने न जाने कितने मन्दिरों को तोड़ कर उनपर मस्जिदें बना लीं, करोड़ों-करोड़ हिन्दुओं को दारुण दुख देकर कत्ल कर दिया उनकी महिलाओं और कन्याओं का बेदर्दी से बलात्कार और उनका व्यापार किया। बलात धर्मान्तरण किये गये हिन्दुओं की तो कोई गिनती ही नहीं सलमान खुर्शीद की विवादित पुस्तक, ह्वसनराइज ओवर अयोध्याह्न यानी अयोध्या से हिन्दुत्व का सूर्योदय में वे जो व्यक्त करना चाहते हैं वह वास्तव में उनकी ईस्लामी मनोवृत्ति का ही आइना है, जिस नादिरशाही सोच के तहत हिन्दुओं को हमेशा पांवों तले दबाकर रखा जाना चाहिएह्न. हिन्दुओं का सर उठाना या अपने धार्मिक कृत्यों को निभाना या अपने पूजा स्थलों को सुरक्षित करने देना आदि को इस्लामिक नजरिए से बहुत बड़ा गुनाह है। पुस्तक का निहितार्थ है कि हिन्दुओं को उसी औरंगजेबी शासन वाले काल में रहना चाहिए तथा अगर वे उठना भी चाहें तो उनपर उसी तरह हमला कर देना चाहिए जैसा मुगलकाल में होता रहा था या अफगानिस्तान, पाकिस्तान या बांगलादेश और भारत के कई राज्यों आदि में आज भी जारी है। भारत के मुसलमान नेता हमेशा राजनीतिक रोना रोते रहते हैं कि भारत में मुसलमानों पर अत्याचार होता है या मुसलमान भारत में डरा हुआ है आदि- आदि ह्नजरा अपने आसपास आंखे खोलकर देख लें अगर भारत भी अपने अल्पसंख्यकों के साथ पाकिस्तानी व्यवहार करता होता तो मुस्लिमों की जनसंख्या हिन्दुस्थान में इस कदर बढ़ी हुयी न होती या मुसलमान इतने फलते-फूलते न होते। आश्चर्य तो तब होता जब कुछ अक्ल के अन्धे लोग हिन्दुत्व पर आधारित संगठनों जैसे आरएसएस, विश्वहिन्दूपरिषद आदि, जिनकी मूलभूत विचारधारा ही अहिंसा से आरम्भ होती है और वसुधैवकुटुम्बकम् तथा सर्वधर्मसमभाव जैसे सुदृढ़ स्तम्भों पर आधारित है, उसकी तुलना तालिबान, आइसिस या बोकोहरम जैसे आतंकी संगठनों से करते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य ही हिंसा, अपहरण और नरसंहार ही रहा है। यूं तो पूरी भारतभूमि मन्दिरों एवं तीर्थस्थलों से भरी पड़ी है जिनमें हिन्दुत्व के तीन महास्तम्भ हैं, भगवान राम, आदिदेव शंकर और श्री कृष्ण जिनको विश्व भर के हिन्दू अपना ईश्वर मानते हैं और विभिन्न स्वरूपों में पूजते हैं और इसीलिए सबसे पहले म्लेच्छों और बाहरी आक्रमणकारियों ने उन्ही आस्थाओं के प्रतीक हजारों लाखों मन्दिरों को तोड़कर नष्ट-भ्रष्ट किया और उनपर मस्जिदों का निर्माण अपना वर्चस्व जताने और हिन्दुओं के मनोबल को तोड़ने के लिये किया ह्न इनमें प्रमुख थे काशी का विश्वनाथ मन्दिर, गुजरात का सोमनाथ मन्दिर, मथुरा का श्रीकृष्ण जन्मभूमि मन्दिर और अयोध्या का श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर। भारत के मुस्लिम नेताओं का सबसे बड़ा चिन्ता का सबब यही है कि हिन्दुओं का वजूद आज भी मिटाया नहीं जा सकाह्न सलमान खुर्शीद भी कुछ अलग नहींह्न. ह्वसनराइज ओवर अयोध्याह्नह्न उसी की अभिव्यक्ति है क्योंकि सोमनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार नेहरू के विरोध के बावजूद सरदार पटेल आजादी के पहले ही करवाने में सफल रहे थेह्नऔर अब हिन्दुओं ने अपने आराध्य देव श्रीराम की जन्मस्थली को 500 वर्षों से भी ज्यादा के सघर्ष के बाद म्लेच्छों के अपवित्र साये से मुक्त करा लिया है। सलमान खुर्शीद को अयोध्या में श्रीराम मन्दिर निर्माण बहुत नागवार गुजर रहा हैह्न. उनको लगता है कि इसके साथ ही हिन्दुओं में सदियों बाद एक नयी चेतना का संचार होना प्रारम्भ हो सकता है जो सम्भवतः गजवा ए हिन्द के रास्ते में एक बड़ी रुकावट पैदा कर सकता है। शायद इसीलिए मियां खुर्शीद अपनी इस पुस्तक के जरिये भारत में एक विवाद पैदा कर हिन्दुओं की जागृति को आइसिस, तालिबान और न जाने किस-किस से जोड़कर सामान्य जन के मन में एक संशय उत्पन्न कर हिन्दूजागृति को भटकाने का प्रयास कर रहे हैं।

त्रिपुरा में हिंसा : नफरत और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण

राम पुनियानी

हमारे देश में धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा बहुत आम हो गई है। जहां एक ओर प्रधानमंत्री पोप से गले मिल रहे हैं वहीं दूसरी ओर देश में ईसाईयों के खिलाफ हिंसा की छोटी-छोटी घटनाएं हो रहीं हैं

समय के साथ, सांप्रदायिक हिंसा के स्वरूप और एजेंडा में बदलाव आ रहे हैं। त्रिपुरा और इसके पहले असम में सांप्रदायिक सोच और हिंसा ने घुसपैठ बना ली है। सत्ताधारी दल यह दावा कर सकता है कि उसके शासनकाल में कोई बड़ा दंगा नहीं हुआ। सच तो यह है कि अब सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के लिए हिंसा की जरूरत ही नहीं है। इस लक्ष्य को पहले ही काफी हद तक हासिल कर लिया गया है। हमारे देश में धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा बहुत आम हो गई है। जहां एक ओर प्रधानमंत्री पोप से गले मिल रहे हैं वहीं दूसरी ओर देश में ईसाईयों के खिलाफ हिंसा की छोटी-छोटी घटनाएं हो रहीं हैं। एक समुदाय के रूप में मुसलमान भी हिंसा का शिकार हैं। सांप्रदायिक हिंसा का समाज पर कुप्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। इसके नतीजे में मुसलमानों का हाशियाकरण हो रहा है। अलगाव का भाव मुसलमानों पर किस कदर हावी हो गया है यह इससे साफ है कि उनके एक तबके ने हाल में एक मामूली से क्रिकेट मैच में पाकिस्तान की जीत पर पटाखे फोड़े। सरहद के उस पार भी सांप्रदायिक तत्वों की कोई कमी नहीं है। पाकिस्तान के एक मंत्री महोदय ने निहायत बेवकूफाना बात कही। उन्होंने क्रिकेट मैच में पाकिस्तान की विजय को इस्लाम की जीत निरुपित किया! इसी तरह की सोच रखने वाले एक क्रिकेट खिलाड़ी ने हिन्दुओं के सामने नमाज पढ़ने को मुसलमानों की श्रेष्ठता का सुबूत बताया है। ऐसे लगता है कि मूर्खता की कोई सीमा ही नहीं है। इसी बीच, त्रिपुरा में सांप्रदायिक हिंसा हुई। इस हिंसा के लिए बांग्लादेश में दुर्गापूजा के दौरान हिन्दुओं और उनके पूजास्थलों पर अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण और निंदनीय हमलों को बहाना बनाया गया। वर्तमान में त्रिपुरा में भाजपा का शासन है। इस राज्य में एक लम्बे समय तक वामपंथी सत्ता में रह चुके हैं और उस दौरान वहां सांप्रदायिक हिंसा की एक भी वारदात नहीं हुई थी। त्रिपुरा में हिंसा की शुरूआत विहिप, आरएसएस और उनसे जुड़े संगठनों द्वारा रैलियां निकाले जाने के बाद हुई। इन रैलियों में इस आशय के नारे लगाये गए कि सच्चे हिन्दुओं को एक होकर अपनी रक्षा के लिए त्वरित कदम उठाने चाहिए। उन्हें राजनैतिक और अन्य मतभेदों को भुलाकर एक हो जाना चाहिए। इन रैलियों के जरिये यह डर पैदा करने की कोशिश की गई कि हिन्दू खतरे में हैं। और इससे सांप्रदायिक वैमनस्य फैलना स्वाभाविक था। अगर मुसलमान कुछ ही किलोमीटर दूर स्थित सीमा के उस पार हिन्दुओं पर अत्याचार कर सकते हैं तो उन्हें यहां हिन्दुओं पर हमले करने से भला कौन रोकेगा

इन प्रदर्शनों में ये नारे भी लगाये गए कि बांग्लादेश में हिन्दुओं को आत्मरक्षा के लिए हथियार उपलब्ध करवाए जाने चाहिए। भड़काऊ रैलियां, मस्जिदों में आगजनी और मुसलमानों की सम्पतियों पर हमले चलते रहे और सरकार हिंसा को रोकने का नाटक भर करती रही। राज्य में हिंसा की कम से कम 20 घटनाएं हुईं,15 मस्जिदों पर हमले हुए और तीन को पूरी तरह नष्ट कर दिया गया। और यह सब तब हुआ जबकि पुलिस का दावा है कि उसने हिंसा पर नियंत्रण के लिए हर संभव प्रयास किये। डॉ विभूति नारायण राय (उत्तरप्रदेश के पूर्व पुलिस महानिदेशक और महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, के पूर्व कुलपति) की यह स्पष्ट मान्यता है कि सरकार के प्रच्छन्न समर्थन के बगैर साम्प्रदायिक हिंसा 48 घंटे से अधिक अवधि तक जारी नहीं रह सकती।

लोगों को भड़काने में अफवाहों की भूमिका से हम सब वाकिफ हैं। पहले अफवाहें एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक मुंहजबानी फैलाई जातीं थीं। अब सोशल मीडिया अफवाहें फैलाने और दूसरे समुदायों के खिलाफ नफरत पैदा करने का शक्तिशाली हथियार बन गया है। बताया यह जाता है कि अल्पसंख्यक समुदाय, बहुसंख्यकों पर अत्याचार कर रहा है। सोशल मीडिया की पहुंच और प्रभाव बहुत व्यापक है। सोशल मीडिया पर कही जा रही बातों पर लोग आसानी से भरोसा कर लेते हैं। राजनीति के खेल खेलने वालों ने अपने-अपने आईटी सेल और सोशल मीडिया योद्धाओं की सेनाएं तैयार कर लीं हैं जो अपने-अपने आकाओं के निर्देश पर अफवाहें और झूठ फैलातीं हैं। अधिकांश मामलों में गरीब लोग भावनाओं में बहकर सड़कों पर हिंसा करने उतर आते हैं। नफरत हमारे समाज में किस हद तक घर कर गई है इसका एक उदाहरण यह है कि गुजरात के आणंद में एक होटल के सामने की सड़क सिर्फ इसलिए धोई गई क्योंकि होटल के मालिकों में से एक मुसलमान था! हिन्दुओं और ईसाईयों के खिलाफ घृणा का भाव हमारी सामूहिक सामाजिक सोच का हिस्सा बनता जा रहा है। इसके पहले देश में अनेक सुनियोजित भयावह दंगे हो चुके हैं। इनमें मुंबई (1992-93), गुजरात (2002), कंधमाल (2008) और मुज्जफरनगर (2013) शामिल हैं। सन् 2013 के बाद से (दिल्ली 2020 को छोड़कर) बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक दंगे नहीं हुए हैं। दिल्ली की हिंसा शाहीन बाग में आन्दोलनरत लोगों को सबक सिखाने के लिए की गई थी। शाहीन बाग, स्वाधीन भारत का सबसे बड़ा प्रजातान्त्रिक आन्दोलन था। बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक हिंसा से व्यापक और त्वरित ध्रुवीकरण होता है। इससे बहुसंख्यक समुदाय, सांप्रदायिक ताकतों की गोदी में जा बैठता है और अल्पसंख्यक समुदाय, अपने मोहल्लों में कैद हो जाता है। जब राज्य पर सांप्रदायिक ताकतों का शासन होता है या सांप्रदायिक तत्व नौकरशाही, पुलिस आदि में अपनी घुसपैठ बना लेते हैं तब राज्य तंत्र सांप्रदायिक हिंसा का मूकदर्शक बना रहता है। वह हिंसा को काबू में लाने के लिए प्रभावी कदम नहीं उठाता और निदोर्षों को मरने देता है। इसका एक कारण यह भी होता है कि सत्ताधारी, अल्पसंख्यकों के वोटों पर निर्भर नहीं होते। सांप्रदायिक हिंसा को रोकने में असफलता के कारण अल्पसंख्यक मतदाताओं के उससे दूर हो जाने की परवाह सत्ताधारियों को इसलिए नहीं होती क्योंकि उन्हें पता होता है कि बहुसंख्यक मतदाता उन्हें हुए नुकसान की भरपूर भरपाई कर देंगे। भारत में सांप्रदायिक हिंसा पर अनेक विस्तृत अध्ययन और शोध हुए हैं। डॉ असगर अली इंजीनियर का कहना था कि सांप्रदायिक हिंसा का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। धर्म तो राजनैतिक लक्ष्यों को हासिल करने का औजार भर होता है। पॉल ब्रास के अनुसार देश में सांप्रदायिक दंगे करवाने का एक संस्थागत तंत्र है जिसे चुनावों के आसपास सक्रिय कर दिया जाता है। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कि राज्य, हिंसा को नियंत्रित क्यों नहीं करता, विलकिंसन कहते हैं कि इसका कारण यह है कि सत्ताधारी दल की चुनावी सफलता, हिंसा पीड़ितों के समर्थन पर निर्भर नहीं करती। समय के साथ, सांप्रदायिक हिंसा के स्वरूप और एजेंडा में बदलाव आ रहे हैं। त्रिपुरा और इसके पहले असम में सांप्रदायिक सोच और हिंसा ने घुसपैठ बना ली है। सत्ताधारी दल यह दावा कर सकता है कि उसके शासनकाल में कोई बड़ा दंगा नहीं हुआ। सच तो यह है कि अब सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के लिए हिंसा की जरूरत ही नहीं है। इस लक्ष्य को पहले ही काफी हद तक हासिल कर लिया गया है। वर्तमान में हो रही सांप्रदायिक हिंसा केवल नफरत और ध्रुवीकरण को बनाये रखने के लिए की जा रही है। हिंसा का हर चक्र समुदायों के बीच के रिश्तों को पुनर्परिभाषित करता है। अल्पसंख्यक अपने इलाकों में सिमट जाते हैं और समाज में अपने दोयम दर्जे को स्वीकार कर लेते हैं। इन्हीं में से कुछ दुखी, परेशान लोग पाकिस्तान की जीत पर पटाखे फोड़ने जैसी हरकतें करते हैं। इसे राष्ट्रद्रोह के रूप में देखना अनुचित है। इससे सांप्रदायिक वैमनस्य और बढ़ेगा। हमें घावों पर नमक छिड़कने की बजाय उन पर मरहम लगानी होगी।

ये सरकारी संवेदनहीनता की आग है

सर्वमित्रा सुरजन

इधर खुद को बच्चों के मामा कहलाने वाले मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस घटना पर दुख व्यक्त किया, ये ठीक है, लेकिन उन्हें इस बात का प्रमाणपत्र देने की जल्दी क्या थी कि बचाव कार्य तेजी से हुआ है। और घटना की उच्च स्तरीय जांच के निर्देश देने का भी क्या अर्थ। क्या इस घटना के दोषी कभी कानूनी शिकंजे में आएंगे, क्या उन्हें कभी कोई सजा मिलेगी। अभी तो इस घटना के पीछे बड़ी प्रशासनिक लापरवाही की बात सामने आ रही है। बताया जा रहा है कि पिछले 30 सालों से अस्पताल की बिल्डिंग की फायर एनओसी नहीं ली गई थी। नगर निगम के बार-बार नोटिस भेजने के बाद भी अस्पताल प्रबंधन ने इस पर ध्यान नहीं दिया भारत में सरकारी लापरवाही और प्रशासनिक बदइंतजामी आम लोगों के लिए किस कदर जानलेवा साबित होती है, इसका ताजा उदाहरण भोपाल से सामने आया है। मध्यप्रदेश के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल परिसर के कमला नेहरू अस्पताल में तीसरी मंजिल पर चाइल्ड वार्ड में आठ नवंबर की रात को भीषण आग लग गई, जिसके कारण कम से कम 4 बच्चों की मौत की खबर सामने आई हैं, कई जगह 7 नवजातों की मौत की सूचना है। इस हादसे में 36 नवजातों को बचा लिया गया है। इस हादसे का जो विवरण सामने आ रहा है, उससे उस मंजर की कल्पना मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। बताया जा रहा है कि रात सवा आठ बजे शार्ट सर्किट के कारण चिंगारी भड़की, जो देखते ही देखते भयावह आग में तब्दील हो गई। चारों ओर बंद होने के कारण आग और धुआं भर गया और वहां मौजूद डाक्टर, नर्स व अन्य कर्मियों के साथ-साथ कुछ बच्चों के अभिभावक भी किसी तरह बच्चों को बचाने में जुट गए। इस हादसे में इरफाना नाम की एक महिला ने 6 दिनों के अपने नवजात बेटे को खो दिया, इरफाना के भाई राशिद खान आग लगने की खबर लगते ही अस्पताल पहुंचे थे और वहां बाकी लोगों के साथ नवजातों को सुरक्षित निकालने में लग गए थे। उन्होंने आठ बच्चों को वहां से सुरक्षित निकाला, लेकिन अपने भांजे को नहीं बचा पाए। ऐसी ही दर्दनाक दास्तां बाकी लोगों की भी हैं। जिनके बच्चे बच गए हैं, अब उन्हें बच्चों की अदला-बदली का डर सता रहा है। इस हादसे के बाद मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने ट्वीट किया है कि - भोपाल के कमला नेहरू अस्पताल के चाइल्ड वार्ड में आग की घटना दुखद है। बचाव कार्य तेजी से हुआ। घटना की उच्चस्तरीय जांच के निर्देश दिए हैं। जांच एसीएस लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा मोहम्मद सुलेमान करेंगे। वहीं भोपाल की सांसद प्रज्ञा ठाकुर ने तो ये दावा किया है कि किसी भी बच्चे की मौत जलने से नहीं हुई है। चार बच्चों की मौत दम घुटने से हुई है।

इस तरह की प्रतिक्रियाओं को देखने के बाद समझ नहीं आता कि इस देश की जनता ने जनप्रतिनिधियों के नाम पर इंसानों को चुना है, या मशीनों को, जिनमें किसी तरह की संवेदनशीलता नजर नहीं आती। नवजात जल कर नहीं मरे, दम घुटने से मरे, इससे सांसद महोदया क्या साबित करना चाहती हैं। चार-छह दिन पहले जन्मे बच्चे, जिन्होंने अभी ठीक से आंख भी नहीं खोली होगी, उनका मौत से साक्षात्कार हो गया। उन दुधमुंहे बच्चों को नहीं मालूम कि आग की तपिश और धुएं की घुटन कैसी होती है, लेकिन उन्हें इन दोनों तकलीफों को झेलना पड़ा। उन नवजातों ने अभी अपने मां-बाप को भी नहीं पहचाना था, उनकी गोद में सोने का सुख उन्हें नहीं मिला था, उससे पहले मौत उन्हें दूसरी दुनिया में ले गई। इस दारुण घटना के बाद प्रज्ञा ठाकुर को बच्चों की मौत का कारण बताने की हड़बड़ी क्यों है, ये समझ से परे है। सांसद महोदया मौत का कारण चाहे जो बताएं, इससे यह तथ्य तो नहीं मिट जाता कि अस्पताल में आग लगी थी। अब आग क्यों लगी थी, इसकी जांच होनी चाहिए। इधर खुद को बच्चों के मामा कहलाने वाले मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस घटना पर दुख व्यक्त किया, ये ठीक है, लेकिन उन्हें इस बात का प्रमाणपत्र देने की जल्दी क्या थी कि बचाव कार्य तेजी से हुआ है। और घटना की उच्च स्तरीय जांच के निर्देश देने का भी क्या अर्थ। क्या इस घटना के दोषी कभी कानूनी शिकंजे में आएंगे, क्या उन्हें कभी कोई सजा मिलेगी। अभी तो इस घटना के पीछे बड़ी प्रशासनिक लापरवाही की बात सामने आ रही है। बताया जा रहा है कि पिछले 30 सालों से अस्पताल की बिल्डिंग की फायर एनओसी नहीं ली गई थी। नगर निगम के बार-बार नोटिस भेजने के बाद भी अस्पताल प्रबंधन ने इस पर ध्यान नहीं दिया। फायर एनओसी के लिए सीएमएचओ को भी नोटिस भेजा गया, लेकिन तब भी अस्पताल प्रबंधन नहीं जागा और वहां की अग्निशमन से जुड़ी व्यवस्थाओं को दुरुस्त नहीं किया गया। जब भी कोई बड़ी इमारत बनती है तो फायर एनओसी लेना जरूरी होता है, लेकिन इस मामले में अक्सर लापरवाही बरती जाती है। बताया जा रहा है कि भोपाल में कम से कम साढ़े सात सौ इमारतें हैं और इनमें से अधिकतर के पास फायर एनओसी नहीं है। इस किस्म की जानलेवा लापरवाही पहली बार सामने नहीं आई है। 1995 में हरियाणा के डबवाली में डीएवी स्कूल में स्कूल में आग से स्कूली बच्चों समेत 442 लोगों की मौत हो गई थी। आग शार्ट सर्किट से ही लगी थी। हादसे के बाद आलम ये था कि शवों के अंतिम संस्कार के लिए श्मशान घाट भी छोटा पड़ गया था। दो साल बाद ही 1997 में दिल्ली के उपहार सिनेमा हॉल में बेसमेंट में रखे जनरेटर में आग लग गई और धीरे-धीरे पूरे हॉल को आग ने अपने आगोश में ले लिया। आग लगने से हॉल में भगदड़ मच गई और 59 लोग इस आग में जिंदा जल गए, वहीं 100 से ज्यादा लोग घायल हो गए। मरने वालों में 23 बच्चे भी थे। जांच में पता चला कि सिनेमा हॉल में क्षमता से अधिक लोग बैठे थे। 2004 में तमिलनाडु के कुंभकोणम के कृष्णा इंग्लिश मीडियम स्कूल में लगी आग में भी 94 बच्चों को जान गंवानी पड़ी थी। हादसे की जांच में पता चला कि मैनेजमेंट ने छात्रों की संख्या तो बढ़ाई लेकिन इंतजाम की तरफ ध्यान नहीं दिया। 2011 में कोलकाता के एएमआरआई अस्पताल में भी बेसमेंट में लगी आग ने अस्पताल तो अपनी चपेट में ले लिया था, इसमें 89 लोगों की मौत हो गई थी। 2017 में मुंबई की कमला मिल्स परिसर की कॉमर्शियल बिल्डिंग में लगी आग में 14 लोगों की मौत हो गई थी, जबकि 55 से अधिक लोग जख्मी हुए थे और 2019 में दिल्ली के अनाज मंडी के अग्निकांड में 43 लोगों की मौत हो गई थी। ये हादसे आज भी दिल दहलाते हैं। ऐसे हरेक हादसे के बाद प्रशासन की अनदेखी पर सवाल उठते हैं। लेकिन हर बार जवाब टाल दिए जाते हैं। दोषी कौन है, ये भी कभी तय हो पाता है, कभी नहीं। वैसे ये दुर्योग ही है कि आठ नवंबर को 1997 के उपहार सिनेमा अग्निकांड के लिए अंसल बंधुओं को सात साल की सजा सुनाई गई और इसी दिन भोपाल में यह दुर्घटना हुई। उपहार सिनेमा अग्निकांड रसूखदार लोगों से जुड़ा था, इसलिए इंसाफ की राह में बार-बार बाधाएं डाली गईं। पीड़ितों के परिजनों ने लंबी लड़ाई लड़ने का हौसला दिखाया। लेकिन हर बार ऐसा नहीं हो सकता। क्या भोपाल में मारे गए नवजातों के मां-बाप अब अगले कई सालों तक इसी तरह इंसाफ के लिए लड़ते रहेंगे या सरकार चंद लाख रुपयों के मुआवजे के बाद अपनी जिम्मेदारी से बरी हो जाएगी, ये देखना होगा।

कॉमनवेल्थ गेम्स में शामिल हुआ क्रिकेट

भारत/पाकिस्तान के बीच फिर होगा महामुकाबला

नई दिल्ली। भारत और पाकिस्तान की क्रिकेट टीम एक बार फिर से मैदान पर एक-दूसरे से भिड़ने के लिए तैयार है। हालांकि यह मुकाबला मेंस क्रिकेट के बीच नहीं बल्कि वुमेंस क्रिकेट के बीच खेला जाएगा। दअरसल 2022 में होने वाले कॉमनवेल्थ गेम्स में क्रिकेट को भी शामिल किया गया है और शुक्रवार को ही इसमें होने वाले महिला टी20 क्रिकेट टीमों का शेड्यूल जारी किया गया। अगले साल बर्मिंघम में होने वाले कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत और पाकिस्तान की महिला क्रिकेट टीम एक-दूसरे के खिलाफ खेलती हुई नजर आएंगी। बर्मिंघम कॉमनवेल्थ गेम्स आयोजन समिति ने शुक्रवार को क्रिकेट मैचों का शेड्यूल जारी किया। इसके मुताबिक, कॉमनवेल्थ गेम्स 2022 में महिला क्रिकेट में भारतीय महिला टीम अपना पहला

मैच 29 जुलाई को ऑस्ट्रेलिया से खेलेगी। भारत और पाकिस्तान की महिला टीम 31 जुलाई को भिड़ेगी। सभी मैच बर्मिंघम के एजबेस्टन मैदान पर खेले जाएंगे। भारत और पाकिस्तान की टीम को ग्रुप-ए में रखा गया है। 1998 के बाद पहली बार कॉमनवेल्थ गेम्स में क्रिकेट को शामिल किया गया है। टूर्नामेंट का फाइनल सात अगस्त को खेला जाएगा। इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने बयान में कहा कि महिला क्रिकेट टूर्नामेंट 29 जुलाई से एजबेस्टन में आयोजित की जाएगी। ब्रॉन्ज मेडल और गोल्ड मेडल मैच सात अगस्त को खेले जाएंगे। वहीं, सेमीफाइनल मुकाबले में छह अगस्त को खेले जाएंगे। मेजबान इंग्लैंड 30 जुलाई को अपना पहला मैच क्वालीफायर से खेलेगा। क्वालीफायर 2022 के शुरू में खेले जाएंगे। इंग्लैंड की टीम इसके बाद दो अगस्त को दक्षिण अफ्रीका से और चार अगस्त को न्यूजीलैंड से भिड़ेगी। भारत को ग्रुप-ए में ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान और बारबडोस के साथ रखा गया है। वहीं, ग्रुप-बी में इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड और एक क्वालिफायर टीम होगी, जिसका फैसला फरवरी 2022 तक होगा। दोनों ग्रुप से दो-दो टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेगी। भारत का अपना आखिरी ग्रुप मैच तीन अगस्त को बारबडोस के खिलाफ खेलेगा। इसी दिन ऑस्ट्रेलिया का सामना पाकिस्तान से होगा।

मैक्सवेल और रउफ ने अपनी खेल भावना से जीते फैन्स के दिल, ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज ने पाक गेंदबाज को बताया सुपरस्टार

नई दिल्ली। पाकिस्तान के तेज गेंदबाज हैरिस रउफ आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप 2021 के सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ काफी महंगे साबित हुए और उन्होंने तीन ओवर में बिना कोई विकेट चटकाए 32 रन लुटाए डाले। गेंदबाजों के खराब प्रदर्शन के कारण पाकिस्तान को हार का सामना करना पड़ा और टीम फाइनल में पहुंचने से चूक गई। हालांकि इस मैच में ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल भी बल्लेबाजी में कुछ खास नहीं कर पाए और 10 गेंदों पर उनके बल्ले से केवल सात रन ही निकले। लेकिन ऑस्ट्रेलिया ने रोमांचक जीत दर्ज करके फाइनल में जगह बना ली। मुकाबले के बाद रउफ और मैक्सवेल की एक तस्वीर सामने आई है, जिसमें वे एक-दूसरे से अपनी नेशनल टीम की जर्सी एक्सचेंज करते नजर आ रहे हैं। दअरसल मैक्सवेल और रउफ बिग बैश लीग (बीबीएल) में मेलबर्न स्टार्स के लिए खेल चुके

हैं। पाकिस्तानी तेज गेंदबाज उस समय मेलबर्न स्टार्स के हिस्सा थे, जब मैक्सवेल उस टीम के कप्तान थे। यही वजह है कि वर्ल्ड कप सेमीफाइनल के बाद इन दोनों के बीच गहरी दोस्ती देखने को मिली। दोनों क्रिकेटरों की इस खेल भावना को फैन्स भी काफी पसंद कर रहे हैं। मेलबर्न स्टार्स ने भी अपने ट्विटर पर इन दोनों क्रिकेटरों की तस्वीर पोस्ट की है, जिसमें वे होटल में एक-दूसरे से अपनी नेशनल टीम की जर्सी बदल रहे हैं। मैक्सवेल ने अपने इंस्टाग्राम पर भी इस तस्वीर को शेयर किया है। उन्होंने फोटो के साथ कैप्शन में लिखा, मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि यह युवा तेज गेंदबाज मेरे पास आया। उन्होंने मेलबर्न स्टार्स और पाकिस्तान क्रिकेट के लिए जो किया है वह असाधारण है।

हसन अली की ट्रोलिंग के बाद उनके सपोर्ट में उतरे पाकिस्तान के दिग्गज क्रिकेटर्स, कहा- मैच विनर है वह

नई दिल्ली। पाकिस्तान के तेज गेंदबाज हसन अली ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल मैच में 19वें ओवर में मैथ्यू वेड का कैच टपका दिया था, जिसके बाद से सोशल मीडिया पर उनकी खूब ट्रोलिंग हो रही है। हसन को लेकर पाकिस्तानी फैन्स के बीच काफी गुस्सा है, जिसके बाद से उनके शिया होने को लेकर भी खूब भद्दे कमेंट्स किए गए। हसन की हिन्दुस्तानी पत्नी को भी फैन्स ने खूब कोसा है। इसके बाद पाकिस्तान के कुछ दिग्गज क्रिकेटर्स उनके सपोर्ट में उतरे हैं। साथी खिलाड़ी शादाब खान ने उन्हें चैम्पियन खिलाड़ी बताया है। पूर्व कप्तान वसीम अकरम ने भी हसन अली की ट्रोलिंग को गलत बताया। इसके अलावा मैच के बाद कप्तान बाबर आजम ने अपनी स्पीच में बिना नाम लिए कहा कि कोई किसी पर उंगली नहीं उठाएगा। शादाब ने ट्विटर पर लिखा, हसन अली आप चैम्पियन हैं। पूरी टीम आपके साथ है। सभी फैन्स के लिए, हर इंसान मुश्किल समय से गुजरता है, हम सभी इंसान हैं और गलती कर सकते हैं। मत भूलिए हसन ने आपको जश्न मनाने के जो मौके दिए हैं, निजी हमले मत करिए। वह पाकिस्तान के लिए मैच विनर हैं। वसीम अकरम ने ए स्पोर्ट्स पर कहा, मैं नहीं चाहता हूं कि अब पूरा देश बेचारे हसन अली के पीछे पड़ जाए। मैं इससे गुजर चुका हूं, वकार यूनिस इससे गुजरे हैं। बाकी देशों में यह बस खेल है, अगले दिन लोग कहते हैं, अच्छी कोशिश की, खराब किस्मत, अगली बार के लिए शुभकामनाएं, आगे बढ़िए।

सच साबित हुई क्रिकेट के भगवान सचिन तेंदुलकर की भविष्यवाणी, सेमीफाइनल से पहले जो कहा था वही हुआ

नई दिल्ली। भारत के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप 2021 में पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेले गए दूसरे सेमीफाइनल से पहले कप्तान आरोन फिंच को एक भविष्यवाणी की थी। फैन्स के बीच क्रिकेट के भगवान के नाम से मशहूर सचिन की वह भविष्यवाणी आखिरकार सच साबित हुई है। उन्होंने इंस्टग्राम पर खुद ही इसकी जानकारी दी। सचिन ने इसका वीडियो भी शेयर किया है। इस वीडियो में उन्होंने व्यक्तिगत तौर पर ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के बीच खेले गए मैच को लेकर बात की थी।

दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में गुरुवार को पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेले गए दूसरे सेमीफाइनल से पहले सचिन के कहा था कि वह पाकिस्तानी तेज

गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी और ऑस्ट्रेलियाई कप्तान आरोन फिंच के बीच टसल देखना चाहते हैं। उन्होंने आगे कहा था कि फिंच अगर शुरू में ही अफरीदी की गेंद को एक्रॉस जाकर खेलते हैं तो वह या तो एलबीडब्लयू या फिर बोल्ड आउट होंगे। सचिन की यह भविष्यवाणी उस समय सच साबित हुई जब ऑस्ट्रेलियाई टीम पाकिस्तान से मिले 177 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी और पारी का पहला ओवर अफरीदी लेकर आए। अफरीदी ने दूसरी ही गेंद पर फिंच को एलबीडब्लयू आउट कर दिया और फिंच खाता खोले बिना पवेलियन लौट गए। फिंच पाक गेंदबाज अफरीदी की एक गेंद को एक्रॉस द लाइन जाकर खेल बैठे गेंद सीधे उनके पैड पर जा लगी।

फाइनल से पहले नीशम ने ऑस्ट्रेलिया को किया खबरदार, बोले-

ऐसे ही नहीं लगाया आधी दुनिया का चक्कर

नई दिल्ली, एजेंसी)। आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के पहले सेमीफाइनल में आतिशी पारी खेलकर न्यूजीलैंड को फाइनल में पहुंचाने वाले ऑलराउंडर जिमी नीशम ने रविवार को ऑस्ट्रेलिया के साथ होने वाले खिताबी मुकाबले से पहले विरोधी टीम को चेतावनी दे दी है। उन्होंने कहा है कि उनकी टीम ने सिर्फ सेमीफाइनल जीतने के लिए ही आधी दुनिया का चक्कर लगा के यहां नहीं आई है। ऑलराउंडर ने आगे कहा कि उनकी टीम फाइनल जीतने में सफल रहेगी और फिर वे खुलकर इसका जश्न मनाएंगे। नीशम ने इंग्लैंड के खिलाफ सेमीफाइनल में 11 गेंद पर 27 रनों की पारी खेली और इस पारी के दम पर कीवी टीम ने शानदार वापसी की और इंग्लैंड के खिलाफ पांच

विकेट से जीत दर्ज की।

न्यूजीलैंड ने जब सेमीफाइनल में जीत दर्ज की तब खिलाड़ी और सपोर्ट स्टाफ जश्न मना रहे थे, लेकिन नीशम बिल्कुल शांत कुर्सी पर बैठे थे। बाद में उन्होंने कहा था कि अभी काम खत्म नहीं हुआ है। उनकी यह तस्वीर सोशल मीडिया पर सुर्खियों में रही थी। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने ट्विटर पर एक वीडियो पोस्ट किया है, जिसमें नीशम ने कहा, मुझे लगता है यह जश्न मनाने का मौका था, लेकिन आप सिर्फ सेमीफाइनल जीतने के लिए आधी दुनिया का सफर नहीं करते हैं। हमारी नजरें अब फाइनल पर हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से और हम एक टीम के रूप में ज्यादा आगे की नहीं सोच रहे हैं। मुझे यकीन है कि अगर हम फाइनल जीतने में सफल रहे तो खुल कर जश्न मनाएंगे।

न्यूजीलैंड की टीम दो साल के अंदर तीन बार आईसीसी टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंची है। 2019 वर्ल्ड कप फाइनल में कीवी टीम को इंग्लैंड के खिलाफ बाउंड्री नियम के आधार पर हार का सामना करना पड़ा था। लेकिन इसके बाद उसने इस साल आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप में भारत को मात देकर खिताब पर कब्जा जमाया। टीम के पास अब दो साल के अंदर दूसरी आईसीसी ट्रॉफी जीतने का मौका है। न्यूजीलैंड की टीम पहली बार टी20 वर्ल्ड कप के फाइनल में पहुंची है।

अजीबोगरीब बॉल पर वॉर्नर के छक्के को अश्विन ने किया सपोर्ट

शानदार शॉट बता गंभीर के खेल भावना वाले बयान को तवज्जो नहीं दी

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया ने आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप 2021 के दूसरे सेमीफाइनल के एक रोमांचक मैच में पाकिस्तान को पांच विकेट से हरा दिया। हालांकि क्रिकेट जगत में ऑस्ट्रेलिया की जीत से ज्यादा चर्चे बल्लेबाज डेविड वॉर्नर के एक छक्के की हो रही है। वॉर्नर के इस छक्के पर अब क्रिकेट समुदाय में अलग अलग राय सामने आ रही है। भारत के पूर्व क्रिकेटर गौतम गंभीर सहित कई क्रिकेटर इसे जहां स्पिरिट ऑफ क्रिकेट यानि के खेल भावना के खिलाफ बता रहे हैं तो वहीं, स्टार स्पिनर रविचंद्रन अश्विन सहित कुछ क्रिकेटरों ने इस पर करारा जवाब दिया है। अश्विन ने वॉर्नर के इस शॉट की तारीफ करते हुए इसे शानदार शॉट बताया है।

दरअसल, ऑस्ट्रेलिया की पारी का आठवां ओवर फेंकने आए मोहम्मद हफीज ने पहली गेंद फेंकी

पर वह उसको ठीक तरह से रिलीज नहीं कर सके और बॉल वॉर्नर के पास दो टप्पे खाकर पहुंची। वॉर्नर ने भी गेंद का पीछा किया और लेग साइड की तरफ जाते हुए उस पर जोरदार सिक्स जड़ दिया। अंपायर ने इसको नो बॉल करार भी दिया जिसके चलते ऑस्ट्रेलिया के खाते में बिना कोई गेंद हुए सात रन जुड़ गए। वॉर्नर ने 49 रनों की पारी खेली। गंभीर ने वॉर्नर के इस शॉट को खेल भावना के खिलाफ बताया है।

गंभीर ने वार्नर के इस शॉट का स्क्रीनशॉट शेयर करते हुए ट्वीट किया, वार्नर ने खेल भावना का कितना घटिया प्रदर्शन किया है! शर्मनाक, क्या कहते हैं रविचंद्रन अश्विन। गंभीर के इस ट्वीट पर ऑस्ट्रेलियाई पत्रकार पीटर लालोर ने लिखा, गौतम ने गलत मुद्दा उठाया। हालांकि इसके बाद अश्विन ने उन्हें जवाब देते हुए लिखा, उनका (गंभीर का) यह कहना है कि अगर यह सही है तो वह भी सही था। अगर वह गलत था तो यह भी गलत है। निष्पक्ष मूल्यांकन उन्होंने अपने एक अन्य ट्वीट में वॉर्नर के छक्के की तारीफ करते हुए कहा, वाकई, डेविड वॉर्नर का यह एक शानदार हिट था। शॉनदार शॉट। गंभीर ने इससे पहले, खेल भावना को लेकर ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर शेन वॉर्न से सवाल किया कि वह इस मुद्दे पर क्या कहेंगे। दरअसल इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के दौरान आर अश्विन ने जोस बटलर को मांकडिंग से आउट किया था, जिसके बाद उनकी खेल भावना को लेकर कई सवाल खड़े हुए थे और वॉर्न ने भी अश्विन की इस हरकत को गलत बताया था। गंभीर ने स्टार स्पोर्ट्स पर कहा, शेन वॉर्न हर मुद्दे पर ट्वीट करते हैं, रिकी पोंटिंग बड़ी-बड़ी बातें करते हैं स्पिरिट ऑफ द गेम की, इस बारे में क्या कहेंगे। अश्विन जब मंकड आउट करते हैं, तो बहुत बड़े-बड़े कमेंट्स आते हैं, तो आज डेविड वॉर्नर के लिए क्या कहना चाहेंगे शेन वॉर्न।

हत्या का केस दर्ज करने से कतरा रही भदोही पुलिस

उप मुख्यमंत्री दिनेश शर्मा ने परिजनों को दिया न्याय दिलाने का भरोसा

अखंड भारत संदेश

भदोही। 20 अक्टूबर को दालान में खून से लथपथ पाए गए पूर्व प्रधानाचार्य की मौत के प्रकरण में मुकामी पुलिस ने अभी तक केस दर्ज नहीं किया है। जबकि परिजन कई बार इसकी मांग कर चुके हैं। बीते दिनों समाधान दिवस पर कप्तान से मिलकर न्याय की गुहार लगाई थी। भदोही पुलिस की कारस्तानी से परेशान पूर्व प्रधानाचार्य के परिजनों ने सूबे के डिप्टी सीएम दिनेश शर्मा से मुलाकात की और न्याय दिलाने की गुहार लगाई।

इस पर उप मुख्यमंत्री दिनेश शर्मा ने परिजनों को न्याय दिलाने का आश्वासन देते हुए न्यायोचित कार्यवाही के लिए पुलिस अधीक्षक भदोही को लिखा है।यह मामला जनपद के ग्राम जमुनीपुर, अठगवां उर्फ मोढ़ डीह का है। यहां के निवासी जयराम पांडेय पुत्र स्व देवकृष्ण पांडेय के मुताबिक उनके पिता स्व. देवकृष्ण पांडेय सेवाश्रम इंटर कालेज सुरियावां, भदोही से प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत्त थे। जयराम पांडेय ने बताया कि बीते 20 अक्टूबर की शाम 80 वर्षीय देवकृष्ण पांडेय दालान में खून से

उप मुख्यमंत्री से को पत्रक देते जयराम पांडेय

लथपथ पाए गए थे। आसपास के खूब सारा खून बिखरा पड़ा था। उन्हे अस्पताल ले जाया गया, जहां डाक्टरों ने देवकृष्ण पांडेय को मृत घोषित कर दिया। सूचना पाकर भदोही कोतवाली पुलिस ने सरकारी अस्पताल पर पहुंचकर शव का पंचनामा भरा और 21 अक्टूबर को शव का पोस्टमार्टम करवाया। आरोपित है कि मुकामी पुलिस द्वारा इतनी प्रक्रिया किए जाने के बावजूद न तो घटनास्थल की जांच करवाई गई और न ही पीएम के बाद प्रिजर्व किए गए बिसरा को जांच के लिए भेजा गया। अंतिम संस्कार और तेरहवीं के उपरांत जयराम पांडेय ने बीते छह नवंबर को मामले में अज्ञात के खिलाफ तहरीर दी और केस दर्ज कर जांच की मांग उठाई। सात नवंबर को जन सुनवाई पोर्टल और आठ नवंबर जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक भदोही से गुहार लगाई, पर अभी तक केस तक दर्ज नहीं किया गया। इससे परेशान परिजनों ने सूबे के उप मुख्यमंत्री दिनेश शर्मा से मुलाकात की और अपनी पीड़ा बताई। जयराम पांडेय के प्रार्थनापत्र ही दिनेश शर्मा ने पुलिस अधीक्षक भदोही को अग्रिम न्यायोचित कार्यवाही के लिए लिखा है।

2.2 किलोग्राम का कंबल बांटेगी राज्य सरकार

अखंड भारत संदेश

भदोही। अपर जिलाधिकारी (फाइनेंस) शैलेन्द्र कुमार मिश्र ने बताया कि जेम पोर्टल के माध्यम से कंबल क्रय किया जाना है। तहसीलों से प्राप्त मांग के अनुसार लगभग 11000 कंबल खरीदने की स्वीकृति प्रदान की गई है। एडीएम (फाइनेंस) ने बताया कि शीतलहरी/ठंड/पाला के दौरान पूर्व में क्रय किये जाने वाले कंबलों की दर/मानक/गुणवत्ता शासन द्वारा निर्धारित मानक के अनुसार होगी, जिसमें कंबल की अधिकतम दर 500 रुपये (प्रति कंबल), लंबाई 235 सेमी और चौड़ाई कम से कम 140 सेमी होनी चाहिए। इसके अलावा वजन 2.2 किलोग्राम से कम नहीं होना चाहिए। कंबल में ऊन की मात्रा 70 फीसद होनी चाहिए।

सेवा प्रदाता को कंबल आपूर्ति का तीन वर्ष का अनुभव प्रमाणपत्र लगाना अनिवार्य होगा। निविदा के खुलने के उपरांत कंबल का सैंपल तहसील में जमा करना होगा। निर्धारित मानक के अनुसार कंबल की आपूर्ति करने में असफल होने पर संबंधित संस्था के विरूद्ध क्रय समिति उ0प्र0 निर्यात निगम) भी जेम पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करा कर कंबल की खुली निविदा के माध्यम से सप्लाई कर सकते हैं। खरीद के लिए गठित समिति के समक्ष मानक पूरा करने पर ही आपूर्ति की जिम्मेदारी दी जाएगी। कंबलों की मात्रा मांग के आधार पर बढ़ाई/घटाई जा सकती है

आपूर्ति के लिए निविदा आमंत्रित, जेम पोर्टल पर किया जा सकता है आवेदन

नियमानुसार कार्यवाही करेगी। बताया कि यूपी राज्य हथकरघा निगम लिमिटेड, यूपीका, खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के माध्यम से उनके द्वारा वित्त पोषित एवं प्रमाणित संस्थाएं, गांधी आश्रम तथा उ0प्र0 हस्तशिल्प विकास एवं विपणन निगम (पूर्ववर्ती और इसकी सप्लाई सप्ताहभर के अंदर करनी होगी। कंबल आपूर्ति करने वाली संस्था को टैग लगाना होगा, जिस पर संबंधित संस्था का नाम, लंबाई, चौड़ाई, वजन अंकित होना चाहिए। इच्छुक संस्थाएं 25 नवंबर तक बिड अपलोड कर सकती हैं।

फांसी लगाकर युवक ने की आत्महत्या

ज्ञानपुर। कोतवाली क्षेत्र गोपीगंज के जोगिनका गांव में 23 वर्षीय युवक शिवम सिंह का शव रस्सी के सहारे पेड़ से लटका हुआ पाया गया। बताया जाता है कि युवक देर रात मे फांसी का फंदा लगाकर इहलीला समाप्त कर लिया। जानकारी होते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। परिजनो ने मृतक शिवम को मानसिक रुप से अस्वस्थ बताया है।मिली जानकारी के अनुसार जोगिनका गांव निवासी सुशील सिंह का पुत्र शिवम सिंह गुरुवार की रात पेड़ पर फांसी लगा लिया। जिससे उसकी मौत हो गई। सुबह पेड़ पर लटक रहे शव पर लोगों की नजर पड़ी तो सूचना पुलिस को दे दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। युवक की मौत से परिवार मे कोहराम मच गया।

मतदाता बनने का अवसरः आज लगाए जाएंगे विशेष कैंप

अखंड भारत संदेश

औराई में मतदाता जागरुकता विषयक कार्यशाला का आयोजन

घोसिया। विकास खंड सभागार औराई में मतदाता जागरूकता अभियान के अन्तर्गत एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। डीपीआरओ बालेश्वरधर द्विवेदी ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग एवं कार्यालय मुख्य निर्वाचन अधिकारी उत्तर प्रदेश लखनऊ के निदेर्शानुसार 13 नवंबर को मतदेय स्थलों पर विशेष कैंपों का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें जन सामान्य से दावे और आपत्तियां यथा फार्म-6, 7, 8 व 8 ए प्राप्त किए जाएंगे।

जिला पंचायत राज अधिकारी ने सभी लोगों को शपथ दिलाई। उन्होंने लेखपालों को संबोधित करते हुए कहा कि जिन छात्र एवं छात्राओं/युवाओं की उम्र एक जनवरी 2022 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण हो रही है वह सभी मतदाता सूची में जुड़वाकर मतदान के

जागरूकता गोष्ठी में बोलते डीपीआरओ

महाउत्सव में शामिल होने का गौरव प्राप्त करें। डीपीआरओ ने यह भी कहा कि प्रायः महिलाओं का वोटिंग प्रतिशत मतदाता सूची में नाम न जुड़ने के कारण कम रह जाता है, इसलिए जिन महिलाओं का नाम वोटर लिस्ट में नहीं है, उनका नाम अवश्य जोड़ा जाए। यहां पर उपस्थित सभी लेखपालों, कार्यालय सहायकों के घर व आसपास की 18 वर्ष आयु पूर्ण कर रही बालिकाओं व घर के अन्य सदस्यों को मतदाता सूची में शत-प्रतिशत नाम जोड़वाने के लिए प्रेरित करें।

सड़क हादसे में नाना की मौत, नाती गंभीर

ज्ञानपुर। कोतवाली क्षेत्र गोपीगंज के भगवानपुर-तुरंतपुर मार्ग पर सुबह 9:00 बजे शुक्रवार को तेज रफ्तार पिकअप ने बाइक सवार नाना और नाती को टक्कर मार दी। जिसमें नाना की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि नाती भी गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे के बाद आरोपित चालक को मौके पर ही पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया गया। भगवानपुर गांव के रहने वाले मृतक के पुत्र गोपीनाथ ने थाने में शिकायत दर्ज कराई है।

भीख में आजादी वाले बयान पर चौतरफा घिरीं कंगना

बीजेपी नेता ने भी की न्यायिक कार्रवाई की मांग

नई दिल्ली। भीख में आजादी वाले बयान पर चौतरफा घिरीं बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत (डंल्लॅल्ल्लं फंल्लं४३) की मुश्किलें लगातार बढ़ती जा रही हैं। दिल्ली भाजपा के एक नेता के साथ ही अलग-अलग राजनीतिक दलों के लोगों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के वंशजों ने कंगना के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। साथ ही उनसे पद्मश्री पुरस्कार वापस लेने की मांग की जा रही है। दिल्ली भाजपा नेता प्रवीण शंकर कपूर ने भी देश की आजादी को लेकर की गई टिप्पणी के लिए अभिनेत्री कंगना की निंदा की और उनके खिलाफ न्यायिक कार्रवाई की मांग की। दिल्ली भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि कंगना की टिप्पणी स्वतंत्रता सेनानियों का अपमान है।

उन्होंने गुरुवार को ट्वीट कर कहा कि एक स्वतंत्रता सेनानी का पुत्र होने एवं स्वतंत्रता सेनानियों के परिवार से आने के कारण कंगना रनौत द्वारा भारत की आजादी को भीख में मिली आजादी कहना, मुझे स्वतंत्रता का सबसे बड़ा दुरुपयोग एवं स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग का अपमान लगता है। हालांकि, उन्होंने शुक्रवार को पीटीआई से बातचीत में कहा कि उन्होंने यह ट्वीट निजी हैसियत से किया है। गौरतलब है कि रनौत ने गुरुवार को यह कहकर विवाद पैदा कर दिया था कि भारत को वास्तविक आजादी वर्ष 2014 में तब मिली जब नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार आई। उन्होंने वर्ष 1947 में देश को मिली आजादी को भीख करार दिया था।

वहीं, हरियाणा विधानसभा में विपक्ष के नेता भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने भी आज मांग की कि अभिनेत्री कंगना रनौत से पद्मश्री पुरस्कार वापस लिया जाए। हालांकि, हुड्डा ने अपने बयान में कंगना का नाम नहीं लिया, लेकिन उन्होंने अभिनेत्री के हाल में देश की आजादी के बारे में दिए बयान की कड़े शब्दों में आलोचना की। उन्होंने कहा कि किसी को भी देश की स्वतंत्रता और स्वतंत्रता सेनानियों का अपमान करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। आजादी के संघर्ष के दौरान हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को अपमानित करने वाली अभिनेत्री को जो पद्म पुरस्कार दिया गया है, उसे भी वापस लिया जाना चाहिए। कांग्रेस नेता ने कहा कि वर्षों के संघर्ष और अनगिनत कुर्बानियों के बाद हमारे देश को स्वतंत्रता मिली है। जिन लोगों को लगता है कि देश को आजादी भीख में मिली है, उन्होंने शायद कभी स्वतंत्रता आंदोलन के बारे में पढ़ा तक नहीं है। देश को भीख में आजादी मिलने को लेकर फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत के विवादित बयान पर आक्रोश जताते हुए मध्य प्रदेश के इंदौर में आज स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के वंशजों ने अभिनेत्री का पुतला फूंका। इस दौरान उन्होंने वीर शहीदों का अपमान, नहीं सहेगा हिंदुस्तान, कंगना रनौत मुदार्बाद और कंगना रनौत को देश से बाहर करो जैसे नारे भी लगाए।

दिल्ली दंगों की आड़ में सोचा समझा हमला, कोर्ट ने 4 आरोपियों पर हत्या के आरोप तय किए

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने पिछले साल उत्तर-पूर्वी दिल्ली दंगों के दौरान एक व्यक्ति की कथित तौर पर हत्या को सुनियोजित हमला बताते हुए वारदात के चार आरोपियों के खिलाफ हत्या, दंगा और आपराधिक साजिश के आरोप तय किए हैं। अनवर हुसैन, कासिम, शाहरुख और खालिद अंसारी पर 25 फरवरी, 2020 को आंबेडकर कॉलेज के पास दीपक नाम के एक व्यक्ति की कथित तौर पर बेरहमी से पिटाई कर हत्या करने का आरोप है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के अनुसार, अधिक खून बहने और सदमे के कारण उसकी मौत हुई। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश अमिताभ रावत ने आरोपी व्यक्तियों के खिलाफ आवश्यक धाराओं के तहत आरोप तय किए और उन्हें उनके वकीलों की उपस्थिति में स्थानीय भाषा में समझाया, जिस पर उन्होंने (आरोपियों ने) दोषी नहीं होने का अनुरोध किया और मामले में मुकदमे का दावा किया। न्यायाधीश ने कहा कि उनके लामबंदी और इरादे के तरीके से जैसा कि उनके आचरण से लगता है, उक्त गैरकानूनी जमावड़ा दंगों और मृतक दीपक की हत्या जैसे अन्य अपराधों को अंजाम देने के उद्देश्य से किया गया था।

उन्होंने 9 नवंबर को एक आदेश में कहा कि गैरकानूनी तरीके से जमा होने से पीड़ित पर सुनियोजित हमले की साजिश भी व्यापक रूप से प्रतीत होती है। न्यायाधीश ने कहा कि इस मामले में सबसे महत्वपूर्ण गवाह सुनील कुमार थे, जो पूरी घटना के चश्मदीद गवाह थे और उन्होंने एक पूरी तस्वीर दी थी कि कैसे मृतक दीपक को आरोपी व्यक्तियों समेत हथियारबंद मुसलमानों की भीड़ द्वारा मार दिया गया था। अदालत के आदेश के अनुसार, सुनील ने कहा था कि 25 फरवरी को कर्दमपुरी पुलिया से गैरकानूनी रूप से मुसलमानों की एक भीड़ आ रही थी और अल्लाह हो अकबर का नारा लगाते हुए पुलिया गोकुलपुर को पार करने की कोशिश कर रही थी। उक्त सशस्त्र गैरकानूनी भीड़ ने दीपक को पकड़ लिया जिसे बेरहमी से पीटा गया था।

खेल महाकुंभ के बहाने कल बस्ती मंडल में चुनाव का माहौल बनाएंगे गृहमंत्री अमित शाह

बस्ती, एजेंसी)। करीब पांच साल बाद एक बार फिर भाजपा के चाणक्य कहे जाने वाले केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह बस्ती में खेल महाकुंभ के बहाने 13 नवंबर को चुनावी माहौल बनाएंगे। जनसभा स्थल भी केडीसी ग्राउंड ही होगा। साथ में सूबे के मुखिया योगी आदित्यनाथ भी मौजूद रहेंगे। बस फर्क सिर्फ इतना होगा कि पांच साल पूर्व जुलाई 2016 में जब अमित शाह ने गोरक्ष प्रांत के बूथ स्तर सम्मेलन को संबोधित किया था तो उस समय वह भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे और योगी आदित्यनाथ गोरखपुर के सांसद। उस समय 11 जिलों के कार्यकर्ता आए थे तो इस बार सिर्फ बस्ती मंडल के लिए ही बोलेंगे। अमित शाह और योगी आदित्यानाथ की जोड़ी करीब पांच साल बाद फिर एक साथ बस्ती में नजर आएगी। इस बार वह सांसद खेलकूद महोत्सव के शुभारंभ के बहाने हजारों युवाओं को जोड़ने और पुनः बस्ती मंडल के तीनों जिलों की सभी 13 सीटों पर कमल खिलाने के लिए कार्यकताओं में जोश भरने और मतदाताओं को सहेजने के लिए आ रहे हैं। दोनों नेताओं की युवाओं के बीच लोकप्रियता किसी से छिपी नहीं है। इसीलिए स्टेडियम में खिलाड़ी और स्कूली बच्चे स्वागत करेंगे।

चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ बिपिन रावत बोले-

भारत की सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा है चीन

ब्लूमबर्ग,नई दिल्ली। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल बिपिन रावत ने कहा है कि चीन भारत की सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका है और लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल (एलएसी) पर भेजे गए हजारों सैनिकों और हथियारों की वापसी लंबे समय तक नहीं हो पाएगी। जनरल रावत ने गुरुवार कहा, परमाणु शक्ति संपन्न दो पड़ोसियों के बीच सीमा विवाद को सुलझाने की कोशिशों में विश्वास की कमी और संदेह बाधक है। पिछले महीने दोनों देशों के बीच सैन्य स्तर की बातचीत गतिरोध के साथ खत्म हुई, क्योंकि दोनों देश इस बात को लेकर सहमत नहीं हुए कि सीमा से कैसे आगे सैनिकों को वापस बुलाना है। पिछले साल से ही एलएसी पर तनाव के बीच दोनों देश सैनिकों के साथ हथियार सीमा पर बढ़ाने में जुटे हुए हैं। जनरल रावत ने कहा, भारत सीमा पर और समुद्र में किसी भी दुस्साहस से निपटने के लिए तैयार है। सीडीएस ने आगे कहा कि चीनी (एलएसी के पास) गांव बसा रहे हैं और भविष्य में संभवतः इनका इस्तेमाल फौजियों के ठिकाने के रूप में हो सकता है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच तनातनी के बाद चीन ने यह कदम उठाया है। सीडीएस ने अफगानिस्तान में तालिबान के कब्जे का भारत पर संभावित असर को लेकर भी चिंता जाहिर की और कहा कि जम्मू-कश्मीर में इसके जरिए आतंकवाद को बढ़ावा देने की कोशिश हो सकती है। जनरल रावत ने कहा कि शत्रुतापूर्ण रवैया रखने वाले चीन और तालिबान के साथ पाकिस्तान से जुड़े सुरक्षा मुद्दों ने भारतीय सेना के लिए उत्तरी और पश्चिमी सीमाओं के साथ थिएटर कमांड पुनर्गठित करना आवश्यक बना दिया है।

यूपी की अर्थव्यवस्था, नौजवानों के लिए खुलेंगे रोजगार के द्वार : सीएम योगी

सुलतानपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भावना के अनुरूप देश को आत्मिनर्भर बनाने का जो प्रयास शुरू हुआ है, उसमें पूर्वांचल एक्सप्रेस वे मील का पत्थर साबित होगा। पूर्वांचल एक्सप्रेस वे का 16 नवंबर को प्रधानमंत्री लोकार्पण करेंगे। बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस वे अगले माह बनकर तैयार हो जायेगा। गोरखपुर एक्सप्रेस वे पर कार्य चल रहा है। गंगा एक्सप्रेस-वे के भी निर्माण की कार्रवाई जारी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को पूर्वांचल एक्सप्रेस वे के लोकार्पण कार्यक्रम और पीएम की जनसभा को लेकर तैयारियों का जायजा लेने आए थे। कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण और अधिकारियों की बैठक के बाद पत्रकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश के विकास की दृष्टि से एक्सप्रेस वे की महात्वपूर्ण भूमिका होगी।

पार्टियों की अधिकांश फंडिंग के स्त्रोत अज्ञात

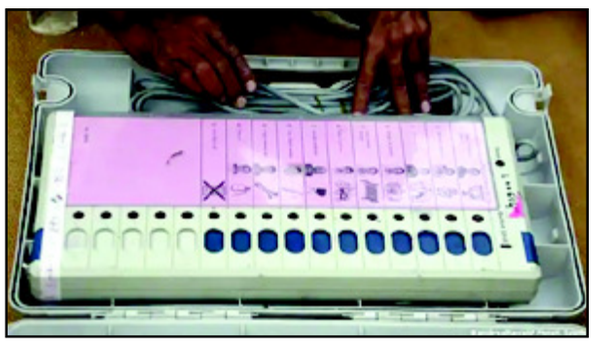

नई दिल्ली। एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि राजनीतिक पार्टियों ने फंडिंग के अधिकांश स्त्रोतों को ₹अज्ञात₹ बताया है. दूसरे किसी भी बड़े लोकतंत्र में फंडिंग के स्त्रोतों को इस तरह छुपाने की अनुमति नहीं है.इस रिपोर्ट के लिए चुनाव सुधारों के लिए काम करने वाली संस्था एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) ने पार्टियों के आय कर रिटर्न्स और चुनाव आयोग को दी गई चंदे की जानकारी का अध्ययन किया. पूरी समीक्षा कर एडीआर इस नतीजे पर पहुंची कि पार्टियों की फंडिंग के अधिकांश स्त्रोत अज्ञात हैं. संस्था के मुताबिक वित्त वर्ष 2019-20 में क्षेत्रीय पार्टियों ने अज्ञात स्त्रोतों से 445.774 करोड़ रुपए कमाए जो उनकी कुल कमाई का 55.50 प्रतिशत है. इन पैसों में से भी 95.6 प्रतिशत चुनावी बॉन्ड से आए, जो यह दिखाता है कि ये बॉन्ड अज्ञात स्त्रोतों से कमाई का सबसे बड़ा जरिया बने हुए हैं।

क्या हैं ये अज्ञात स्त्रोत एडीआर ने अपने इस अध्ययन के लिए ज्ञात स्त्रोत उन्हें बताया है जिनकी जानकारी पार्टियों द्वारा चुनाव आयोग को दी गई है. इनमें 20,000 रुपए से ज्यादा मूल्य का चंदा, चल और अचल संपत्ति की बिक्री, सदस्यता शुल्क, प्रतिनिधि शुल्क, बैंक से मिला ब्याज, प्रकाशित पुस्तिकाओं की बिक्री इत्यादि. अज्ञात स्त्रोत का मतलब 20,000 रुपए से कम का चंदा जिसका ऑडिट रिपोर्ट में जिक्र तो है लेकिन उसके स्त्रोत के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है. इनमें चुनावी बॉन्ड से मिला चंदा, कूपनों की बिक्री, राहत कोष, फुटकर आय, स्वेच्छापूर्वक दिया गया चंदा, बैठकों/मोर्चों में मिला चंदा इत्यादि. इन तरीकों से मिले चंदे की विस्तृत जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं होती है. मौजूदा व्यवस्था के तहत पार्टियों को 20,000 रुपयों से कम मूल्य का चंदा देने वाले व्यक्तियों या संगठनों का नाम ना बताने की छूट है. नतीजतन, उन्हें बहुत अधिक मात्रा में ऐसा चंदा मिलता है जिसे देने वाले का पता नहीं लगाया जा सकता. आरटीआई के तहत यह जानकारी सिर्फ राष्ट्रीय पार्टियों से मांगी जा सकती है, लेकिन उन पार्टियों ने भी केंद्रीय सूचना आयोग के इस आदेश का पालन नहीं किया है. नियम नहीं मानती पार्टियां अज्ञात स्त्रोतों से सबसे ज्यादा कमाई करने वाली पार्टियों में टीआरएस (89। 158 करोड़ रुपए), टीडीपी (81.694 करोड़), वाईएसआर-सी (74.75 करोड़), बीजेडी (50.586 करोड़) और डीएमके (45.50 करोड़) शामिल हैं. इस रिपोर्ट के लिए एडीआर ने 53 ऐसी क्षेत्रीय पार्टियों का अध्ययन किया था जिन्हें चुनाव आयोग ने मान्यता दी हुई है. लेकिन इनमें से सिर्फ 28 पार्टियों ने अपनी सालाना ऑडिट रिपोर्ट और चंदे की जानकारी की रिपोर्ट दर्ज की हैं. 16 पार्टियों ने दोनों में से कोई भी रिपोर्ट पेश नहीं की है और नौ पार्टियों की दर्ज की हुई रिपोर्टें चुनाव आयोग की वेबसाइट पर दिखाई नहीं दे रही हैं. यह दिखाता है कि पार्टियां चुनाव आयोग की अपेक्षाओं को भी पूरा नहीं करती हैं। एडीआर के मुताबिक पैसों को लेकर पारदर्शिता के मामले में राष्ट्रीय पार्टियां ज्यादा दोषी हैं. 2019-20 में अज्ञात स्त्रोतों से हुई कमाई राष्ट्रीय पार्टियों की कुल कमाई का 70.98 प्रतिशत थी. एडीआर का कहना है कि भारत अकेला ऐसा बड़ा लोकतांत्रिक देश है जहां ऐसी लचर व्यवस्था है. अमेरिका, ब्राजील, जर्मनी, फ्रांस, इटली जैसे देशों का उदाहरण तो है ही, यहां तक नेपाल और भूटान में भी पार्टियों के लिए अपनी कमाई के 50 प्रतिशत से ज्यादा के स्त्रोत को अज्ञात रखना मुमकिन ही नहीं है. भारत में इस व्यवस्था में सुधार लाने के लिए चुनाव आयोग ने सरकार को कुछ सुझाव दिए हैं, जैसे 2,000 रुपए से ज्यादा चंदा देने वाले हर व्यक्ती और संगठन की जानकारी सार्वजनिक की जानी चाहिए।

प्रतापगढ़ में सपा की सभा में बवाल,मंच पर ही मारपीट के बाद मची अफरातफरी, पूर्व मंत्री और टिकट दावेदारों मे मारपीट

प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ में समाजवादी पार्टी की सभा की दौरान शुक्रवार को बवाल हो गया। रानीगंज विधानसभा क्षेत्र के मिजार्पुर चौराही गांव में आयोजित जनसभा में मंच पर ही मारपीट हो गई। रानीगंज से टिकट की मांग कर रहे सपा नेताओं को पूर्व मंत्री शिवाकांत ओझा के समर्थकों ने मंच पर ही पीट दिया। ओझा के समर्थन में जमकर नारेबाजी भी की गई। इस घटना से अफरातरफरी का माहौल बन गया। कई नेताओं ने मंच से नीचे भागकर अपनी खुद को बचाया। पूर्व मंत्री आरके चौधरी की ओर से आयोजित जनसभा के दौरान पूर्व विधायक रानीगंज शिवाकांत ओझा और टिकट की दावेदारी कर रहे सपा नेताओं के बीच जमकर मारपीट हो गई। आरोप है कि पूर्व मंत्री के समर्थक टिकट के दावेदारों सहित उनके समर्थन में आए नेताओं को मंच पर ही पीटने लगे। इससे अफरातफरी मच गई। इस दौरान कई नेताओं ने खुलेआम मंच पर असलहा भी लहराया। कुछ नेताओं के साथ गनर भी थे लेकिन हालात देखकर वह हतप्रभ नजर आए। स्थित बेकाबू होने लगी तो सपा के कई नेता मंच से नीचे कूदकर भागने लगे। कई सपा नेताओं को दौड़ा-दौड़ाकर पीटा गया।

बताया जाता है कि सभा के दौरान तमाम लोग पूर्व मंत्री और रानीगंज से पूर्व सपा विधायक शिवाकांत ओझा के समर्थन में नारेबाजी कर रहे थे। यह बात इसी सीट से टिकट की दावेदारी कर रहे कुछ सपा नेताओं और उनके समर्थकों को नागवार गुजरी और वह नारेबाजी कर रहे लोगों को रोकने टोकने लगे। कुछ नेताओं ने मंच से ही माइक के माध्यम से इस तरह की नारेबाजी न करने की बात कह दी। आरोप है कि इसके बाद ओझा के समर्थक आक्रोशित हो गए और विरोध कर रहे सपा नेताओं को दौड़ा-दौड़ाकर मंच पर ही पीटने लगे। करीब 3.45 बजे पूर्व विधायक श्याद अली अपने भाषण में वक्ताओं को नसीहत देने लगे कि पूर्व मंत्री प्रो. शिवाकांत ओझा का टिकट फाइनल मानने वालों को धर्य का परिचय देना चाहिए। तभी मंच पर मौजूद प्रो. शिवाकांत ओझा उनके पास पहुंचे और उनके संबोधन पर आपत्ति करने लगे।

चार अंतरिक्ष यात्रियों के साथ स्पेस स्टेशन पहुंचा स्पेसएक्स का अंतरिक्ष यान

नई दिल्ली। स्पेसएक्स का अंतरिक्ष यान चार अंतरिक्ष यात्रियों को लेकर बृहस्पतिवार को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंच गया। ये यात्री अब वंसत तक वहीं पर रहेंगे। नासा के कैनेडी अंतरिक्ष केंद्र से रवाना हुए अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंचने में 21 घंटे का वक्त लगा। इन चार अंतरिक्ष यात्रियों में से तीन अमेरिका के और एक जर्मनी का व्यक्ति है। उन्होंने जब 30 किलोमीटर दूर अंतरिक्ष स्टेशन को देखा तो वह उनके लिए भावुक पल था। ड्रेगन कैप्सूल के कमांडर राजा चारी ने कहा, वह बहुत ही शानदार नजारा था। जर्मनी के अंतरिक्ष यात्री मैथियस मौरर ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के बारे में कहा, अंतरिक्ष में तैरता और एक हीरे की तरह चमकता। हम बहुत रोमांचित और उत्साहित हैं। अंतरिक्ष यात्रियों का यह नया दल अगले छह महीने यहां पर रहेगा। इस दौरान वे अंतरिक्ष पर्यटकों के दो समूहों की मेजबानी भी करेंगे।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025

पीओके में दिखे चीनी सैनिक, बॉर्डर पोस्ट्स और गांवों का कर रहे सर्वे

नई दिल्ली। चीन और पाकिस्तान की दोस्ती का आलम ये है कि अब चीनी सैनिक पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में घूम रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक चीनी सैनिक पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में बॉर्डर पोस्ट्स और गांवों का निरीक्षण कर रहे हैं। श्मीर आब्जर्वर की एक रिपोर्ट बताती है कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के केल, जुरा और लीपा सेक्टर में करीब चार दर्जन चीनी सैनिक एक महीने पहले पहुंचे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक चीनी जवान, पाकिस्तानी सैनिकों और पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के अधिकारियों के साथ खुद को पांच से छह ग्रुप में बांट लिया है। उन्होंने कई गांवों का दौरा किया है।

कश्मीर आब्जर्वर ने सूत्रों के हवाले से बताया है कि चीनी सैनिकों ने पाकिस्तानी सेना की चौकियों और आतंकियों द्वारा कश्मीर घाटी तक पहुंचने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले घुसपैठ के रास्तों का भी सर्वेक्षण किया है। रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में गांवों का दौरा करने वाले चीनी सैनिक इन गांवों को आदर्श गांव बनाने के संकेत दिए हैं, जिनका इस्तेमाल नागरिक और सेना दोनों कर सकते हैं। क्या चीन पाकिस्तान को आदर्श गांव बनाने में मदद कर रहे हैं, इसका जवाब अभी तक साफ नहीं है। हालांकि कई डिफेंस एनालिस्ट पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में चीनी सैनिकों को चीन पाकिस्तान इकॉनोमिक कॉरिडोर के नजरिए से देख रहे हैं।

अफगानिस्तानः मस्जिद में नमाज के दौरान बम धमाका, 3 की मौत 15 घायल

नई दिल्ली। अफगानिस्तान के नंगरहार प्रांत की एक मस्जिद में शुक्रवार को ाम विस्फोट हो गया। घटना के वक्त नमाजी मस्जिद में जुमे की नमाज अता कर रहे थे। इस बम धमाके में कम से कम तीन लोगों की मौत हो गई है जबकि 15 अन्य घायल हो गए हैं। मिली जानकारी के अनुसार, शुक्रवार दोपहर डेढ़ बजे नंगरहार प्रांत स्थित एक मस्जिद में बम विस्फोट हुआ। इस धमाके में तीन लोगों की मौत की सूचना है जबकि 15 से ज्यादा लोग घायल बताए जा रहे हैं। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, जुमे की नमाज अता करने वाले नमाजियों को निशाना बनाया गया था।

तालिबान के एक अधिकारी ने समाचार एजेंसी एएफपी के हवाले से कहा, ₹मस्जिद के अंदर जुमे की नमाज के दौरान विस्फोट की पुष्टि हुई है। इस घटना में कुछ लोगों की मौत हुई जबकि कुछ लोग घायल हैं। बताया जा रहा है कि तालिबान की सत्ता में वापसी के बाद से इस्लामिक स्टेट समूह की अफगान शाखा नंगरहार प्रांत में हिंसक घटनाओं को अंजाम दे रही है। इस धमाके के पीछे भी आईएस के हाथ का अंदेशा है। ॉबता दें कि बीते अगस्त माह में तालिबान शासन की वापसी के साथ ही अफगानिस्तान में आए दिन चमरपंथी हमले हो रहे हैं।

पाकिस्तान ने टीएलपी मुखिया के बाद 54 सदस्यों के नाम भी आतंकी लिस्ट से हटाए

रावलपिंडी। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के गृह मंत्रालय ने तहरीक-ए-लब्बैक पाकिस्तान के 54 सदस्यों के नाम रावलपिंडी डिवीजन में आतंकवाद विरोधी अधिनियम, 1997 की चौथी अनुसूची से हटा दिए हैं। यह रिपोर्ट पाकिस्तानी अखबार डॉन ने दी है। रिपोर्ट के मुताबिक इन 54 सदस्यों में से 28 रावलपिंडी, 14 चकवाल, 11 अटोक और एक झेलम से थे। टीएलपी प्रमुख हाफिज मोहम्मद साद का नाम पहले ही आतंकी लिस्ट से हटा दिया गया था। रिपोर्ट के मुताबिक जिन लोगों को छोड़ा गया है उन्हें निगरानी लस्ट में रखा गया है और ये लोग किसी भी हालात में देश नहीं छोड़ सकते हैं। बता दें कि इस साल अप्रैल में फ्रांस विरोधी प्रदर्शन के बाद पाकिस्तान सरकार ने ळछढ पर प्रतिबंध लगा दिया था। अब नवंबर की शुरूआत में इमरान सरकार ने ळछढ की प्रतिबंधित स्थिति को रद्द कर दिया था और आतंकवाद विरोधी अधिनियम 1997 की पहली अनुसूची से टीएलपी का नाम हटा दिया। टीएलपी का फ्रांस विरोधी प्रदर्शन हिंसक हो गया था। इस विरोध-प्रदर्शन के दौरान सैकड़ों प्रदर्शनकारी और पुलिसकर्मी हो गए थे। इसके बाद हजारों ळछढ कार्यकर्ता और समर्थकों को हिरासत में लिया गया था।

हाल ही में पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट ने पीएम इमरान खान को लताड़ लगाई है। इमरान खान को कोर्ट ने सेना द्वारा संचालित एक स्कूल पर 2014 के आतंकी हमले की सुनवाई के दौरान सवालों के घेरे का सामना करना पड़ा है। सुप्रीम कोर्ट ने इमरान खान से पूछा है कि वह सैकड़ों लोगों की मौत के दोषियों के साथ क्यों बातचीत कर रहे हैं।